History of Sanskrit Literature

References :
1) Umàshankar R.
2) Vàchaspati G.
3) Ràdhàvallabh T.

Prepared by Mr. Dabbe Mourya
E-mail: dabbebharti@gmail.com

1. Vedic literature
    * Rig, Yajuh, Atharv, Sàm
    * Vedànga
    * Bràhman, Aranyak, Upanishad

2. Ràmàyana, Mahàbhàrata, Puràn

3. Sanskrit Literature
    * Gadya, Padya, Champu
    * Mahàkavya, Khandakàvya
    * Nàtaka, Kathà, Akhyàyika
    * Stotra-tradition

4. Sanskrit Poetics (Kàvyashashtra)
    * Shad-Sampradaya
      (Rasa, Riti, Alankar etc.)

5. Darshana (Àstika and Nàstika)

6. Sanskrit Grammar Tradition
    * Panini, Katyayan, Patanjali

7. Ayurveda, Jyotish, Sangeetshastra, Dharmashastra etc.

संस्कृत भाषा

Dabbe Bharati

वैदिक – इस युग में तत्कालीन भाषा का नाम संस्कृत नहीं था।
– यास्क / पाणिनि वैदिक को अवन्ध्याय या छन्दस् कहते हैं।

लौकिक – इस युग मे यास्क / पाणिनि ने संस्कृत के लिये भाषा शब्द प्रयोग किया।

प्राचीन प्राकृत तथा पालि
- जैन - वर्धमान ने प्राकृत में उपदेश
- बौद्ध - गौतम - पालि में उपदेश

साहित्यिक प्राकृत (1CE - 500CE)

महाराष्ट्री	शौरसेनी	मागधी	अर्धमागधी	पैशाची
श्रेष्ठ संगीतात्मक	मध्य देश	पूर्वी क्षेत्र, असभ्य / प्र. अशिक्षित जन, संस्कृत नाटक में यही	पूर्वी - UP, उत्तरी MP, केवल जैन साहित्य प्राप्त	सिंध में प्रचलित, दण्डी ने इसे 'भूतभाषा', गुणाढ्य का बृहत्कथा (लुप्त है)

अपभ्रंश (500CE - 1000CE)
- अवहट्ट या देशी भाषा कहा जाता था
- नई विभक्तियाँ + प्रत्यय का प्रयोग
- क्षेत्रीय भेद

दिव्यावदान - 200 CE

संस्कृत की स्थिरता
- चरक संहिता (100 BC) आयुर्वेदीय शास्त्रों में संस्कृत प्रयोग
- कामसूत्र प्रेरणा - शिष्ट समाज में संस्कृत और देशभाषा का प्रयोग करें
- उपमिति भव प्रपञ्च कथा (जैन सिद्धर्षि) - शिष्ट संस्कृत से भिन्न प्रजा (भाषा)
- पञ्चतंत्र - प्रयोजन - संस्कृत, लोक व्यवहार का ज्ञान (राजकुमारों)
- बिल्हण - (1060 CE) कश्मीरी स्त्रियाँ - संस्कृत, प्राकृत, मातृभाषा अच्छी समझें

संस्कृत का वाग्व्यवहार

① यास्क - 700 BCE - संस्कृत को भाषा
नेति प्रतिषेधार्थीया भाषायाम् (1/4 - निरुक्त)

② वाल्मीकि रामायण :
- यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम् ।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति ॥ (5/30/18)

③ पाणिनि -
- भाषायां सदवसश्रुवः (3/2/108)
- संस्कृत बोलियों में अन्तर स्पष्ट - इको प्राचां देशे (1/1/75)

④ कात्यायन (350 BCE)
- लोक में प्रचलित शब्द के आधार पर व्याकरण लिखा
लोकतोऽर्थप्रयुक्ते शब्दप्रयोगे शास्त्रेण धर्मनियमः (महाभाष्य / आह्निक 1)

⑤ पतञ्जलि (150 BCE)
- प्रचलित शब्द अर्थ - सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे

⑥ बौद्ध कवि अश्वघोष ने संस्कृत में आश्रय (100 BE)

⑦ (200 CE - 1900 CE) लगभग सभी जैन अभिलेख संस्कृत में

⑧ ह्वेनसांग - बौद्ध जैन शास्त्रीय वाद विवाद में संस्कृत प्रयोग
खुद के व्याकरण विकसित किये
बौद्ध - चान्द्र व्याकरण, पाणिनितंत्र की काशिकावृत्ति
जैन - शाकटायन, सिद्धहेम शब्दानुशासन

वेद

अर्थ

- विद् ज्ञाने, विद् सत्तायाम् , विद्लृ लाभे , विद् विचारणे
- दयानन्द - विदन्ति जानन्ति, विद्यन्ते भवन्ति , विदन्ते लभन्ते , विदन्ति विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सत्यविद्यां यैः येषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः
- वेद्यते ज्ञायते अनेनेति वेदः
- इष्ट प्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयतीति वेदः (तैत्तिरीय संहिता भाष्य - सायण)
- 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्' (आपस्तम्ब की यज्ञ परिभाषा - 31)
- प्रत्यक्ष , अनुमान से पृथक् ' स्वर्गकामो यजेत '

मन्त्र

- ज्ञान (मन्यते ज्ञायते ईश्वरादेशो येन)
- विचार (मन्यते विचार्यते ईश्वरादेशो येन)
- सत्कार (मन्यते सत्क्रियते देवताविशेषो येन)

मन्त्र प्रकार

1. ऋक् (ऋच्यते स्तूयते अनया इति ऋक्)
2. यजुष् ((यजति यजते वा अनेन)
3. साम (समयति सन्तोषयति वा अनेन)

प्रणेता

- मन्त्रकृत् , सायण → कृत् = दृश् , साक्षात्कार
- यास्क - ऋषिर्दर्शनात् , ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः
-

शाखा

किसी एक परंपरा में पढ़ी या पढ़ाई जाने वाली | पतञ्जलि - 1130

मत	ऋक्	यजु	साम	अथर्व
पतञ्जलि	21	100	1000	9 पिप्पलाद, स्तौद, मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवेद, देवदर्श, चारणवैद्य
चरणव्यूह	5 शाकल बाष्कल आश्वलायन शांखायन माण्डूकायन	शु. माध्यन्दिन काण्व कृ. तैत्तिरीय मैत्रायणी काण्व	कौथुमीय (गुज.) राणायनीय (महा.) जैमिनीय (कर्ना.)	पिप्पलाद शौनकीय) प्राप्त

उच्चारणभेद है

परिषद
- मनु + याज्ञवल्क्य - दर्शन/तर्क/धर्म निपुण 21 ब्राह्मण
- सम्बन्धित ग्रन्थ पार्षद

चरण
- टीकाकार जगद्धर
'शाखाविशेषाध्ययनपरैकतापन्नजनसङ्घवाची'

ऋत्विक् — ऋतौ याजयाति इति ऋत्विक्
- अनुष्ठान करने वाला पुरोहित | श्रौतयाग (सामान्य वैदिक यज्ञ)

ऋक्	यजु.	साम	अथर्व
होता आह्वयति देवान् होतृ वेद	अध्वरं युनक्ति इत्यध्वर्युः अध्वरं कामयते वा सबसे महत्वपूर्ण	उद्गाता देवता प्रशंसा ऋत गायक	ब्रह्म निरीक्षक संकट या भ्रम निवारण और निपुण
होतृवेद	अध्वर्युवेद	उद्गातृवेद / औद्गात्रवेद	ब्रह्मवेद

संहिता • पर: सन्निकर्ष: संहिता
- वेद मन्त्रों का संग्रह या संकलन । मीमांसा सूत्र 2/1/35-36-37

ऋक	यजु	साम	अथर्व
तेषामृग्यत्रार्थवशेन पादव्यवस्था	शेषे यजु: शब्द:	गीतीषु सामाख्या	

ऋग्वेद संहिता

- ऋचा (तदेतदृचाभ्युक्तम्)
- यत्र पूर्ण (तैत्तरीय संहिता 6/5/10/3)

शाखा

- शाकल ही उपलब्ध
- आश्वलायन – श्रौत + गृह्य (प्राप्त)
- शांखायन – ब्राह्मण + आरण्यक (प्राप्त)

विभाजन

① मण्डल क्रम / ऐतिहासिक विभाजन

मण्डलानुवाकसूक्तमन्त्र, देवताओं के अनुसार सूक्त वर्गीकरण

10/85/1028 (1017 + 8 खिल 11) / ~~10528~~ /10552

② अष्टक / अध्याय वर्गमंत्र

- 8 अष्टक
- 64 अध्याय
- वर्ग में मन्त्र समूह (1 – 9 मंत्र) / 2024 वर्ग

मण्डल

मण्डल	रचयिता	
I	कण्व	
II	गृत्समद भार्गव	
III	विश्वामित्र	
IV	वामदेव	
V	अत्रि	
VI	भरद्वाज	
VII	वसिष्ठ	
VIII	कण्व + आंगिरस	48वें के बाद 11 खिलसूक्त
IX	सोम विषयक	
X	अर्वाचीन	छन्द, भाषा, नवीन देवता / दर्शन

II – VII – सर्वाधिक प्राचीन – गोत्रमंडल

ऋग्वेद के सूक्त

- धार्मिक मण्डूक संवाद दार्शनिक तथा

① धार्मिक

इन्द्राग्निमरुत्वरुणोषास्विष्णुरुद्र

परोक्ष	प्रत्यक्ष	आध्यात्मिक
प्रथम	मध्यम	उत्तम पुरुष
देवता किसी विशे. अग्निमीळे पुरोहितः	अग्ने यं यज्ञमध्वरम् 1/1/4 सम्बोधित (किया)	देवता स्वयं कहते हैं वाग्देवी — अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि (10/125) वागाम्भृणीसूक्त

② लौकिक

औषधि (10/161/2)

विवाह (10/85/46)

दान (10/117/6)

राजशास्त्र (10/173/4

- अक्षसूक्त (10/34/3) निन्दा, हानिकारक परिणाम की चर्चा
- मण्डूक (7/103/5-6-7) 'वृष्टि का महत्व' पाश्चात्य विद्वान् — 'पण्डितों' पर व्यंग्य'

- संवाद

— स्वरूप के तीन सिद्धान्त

आख्यानात्मक	नाटकीय रूप	लोकगीतात्मक
ओल्डनबर्ग	मैक्समूलर लेवी हर्टेल और	विन्टरनित्स

↳ विश्वामित्र नदी (3/33) 13 ऋचा।
विपाशा (व्यास) शतुद्रि (सतलज)
नदी पार (भरत सेना

↳ यम यमी (10/10) 14 ऋचा

↳ पुरुरवा उर्वशी (10/95) 18 ऋचा [अप्सरा पर्व साथ, छोड़कर जाना, स्वर्गलोक उर्वशी का जाना

↳ सरमा पणि (10/108) 11 ऋचा
सरमा दूती — पणि के पास भेजा गया, न मानना
इन्द्र सेना, आक्रमण

(3) दार्शनिक [पुरुष/अस्यवामीय/हिरण्यगर्भ/वाक्) नासदीय सू०]

↳ पुरुष (10/90)

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्

↳ अस्यवामीय (1/164)

- पहेलिकाएँ
- 52 मंत्रों में निहित (विश्व, उद्भव, विकास, विलय)

↳ हिरण्यगर्भ (10/121) 10 ऋचा

- 9 ऋचा का अंतिम पाद — कस्मै देवाय हविषा विधेम
- ईश्वर को प्रजापति रूप में वर्णित

↳ वाक् (10/125)

- (अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति, मं० 4) — मुझ वाणी के ...
- यं कामये तन्तमुग्रं कृणोमि, तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् (5) ऋषि

↳ नासदीय सूक्त

- सृष्टि की पूर्वावस्था का वर्णन
- आनीदवातं स्वधया तदेकम् (एक ही तत्व था वायु नहीं था — रजनाथ)

● ऋत का दर्शन

→ जगत के विधान का आधार ऋत है
→ प्रकृति के समस्त क्रियाकलाप एक नियम में - वही।
→ सत्कर्म - फल, दुष्कर्म - अनिष्ट फल ⤴ ऋत के कारण
→ मित्र वरुण देवताओं का कर्तव्य = संचालन

● छन्द

- 11 प्रकार के छन्दों का प्रयोग
- 7 सर्वाधिक प्रयुक्त त्रिष्टुभ् (2/5), जगती (1/8), अनुष्टुप्, उष्णिक्, पंक्ति, बृहती / गायत्री (1/4) (1/10)

ऋग्वैदिक का समाज और संस्कृति

- पि. संयुक्त परिवार, गृहपति
- महायज्ञ, संस्कार, यम - नियम थे
  - ↳ ब्रह्मयज्ञ (स्वाध्याय), पितृ (तर्पण), देव (हवन), भूत (मानवेतर जीवों को भोजन)
    नृ (अतिथि सेवा
  - ↳ उपनयन, विवाह प्रमुख संस्कार, मृत्यु दाह (अग्नि, भूमि)
  - ↳ आवास - अग्निशाला (यज्ञ.) हविर्धान (भण्डागार)
    पत्नीसदन् और सदस् (पुरुष बैठक).
    तल्प - नव विवाहिता शयन - पलंग।
    प्रोष्ठ - काष्ठ का आसन, स्त्री (बैठती लेटती)
    कलश, द्रोण, चषक, स्थाली (बटलोई), तितउ (चलनी) मुख्य
- परिधान
  - अधोवस्त्र और अधीवास (ऊन से वस्त्र)
  - कुछ में जरी (स्वर्ण का कार्य)
  - निष्क (हार) रुक्म (लटकाकर स्वर्णाभूषण।)
- भोजन
  - जौ की रोटी, दूध, दही
  - जौ का सत्तू और पुरोडाश (रोटी) प्रिय भोजन
    अपूप करम्भ (मांड/आटे का घोल)
- वर्ण + आश्रम
- राजनीति - कुल (गृह या कुटुम्ब) ग्राम, विश, जन, राष्ट्र
- कृषि, पशुपालन, वाणिज्य, व्यापार, उद्योग
  - वस्तु विनिमय प्रणाली (Barter System) गायों की मुख्य
  - पणि (व्यापारी)
  - बढ़ई (तक्षन्) चर्मकार, भिषक्, कारु (शिल्पी/संगीतज्ञ)

यजुर्वेद

लक्षण यजुष्+वेद - 'गद्यात्मको यजुः'
- अनियताक्षरावसानं यजुः

ब्रह्म सम्प्रदाय	आदित्य सम्प्रदाय
'विनियोगमिश्रत्वं कृष्णत्वम्'	'विनियोगामिश्रत्वं शुक्लत्वम्'
मन्त्र+व्याख्या+विवरण+विनियोग	शुद्ध मन्त्र
तैत्तरीय मैत्रायणी काठक कठ, कपिष्ठल	माध्यन्दिन → वाजसनेयी (40 अध्याय, 1975 मन्त्र) काण्व (40, 2086 मन्त्र) महाराष्ट्र

विषय - यज्ञस्य मात्रां विमिमीत उत्वः (ऋ. 10/71/11)
- यज्ञ विधान, परिपूर्ति

अध्याय

- 25 (प्रथम) प्राचीन, महत्त्वपूर्ण, 15 खिल

प्रथम 2 अध्याय	दर्श अमावस्या, पौर्णमास के दिन यज्ञ
3	अग्निहोत्र (दैनिक) + चातुर्मास्य
4-8-9-10	सोमयाग, अग्निष्टोमयाग (प्रधानसे सोमलता को निचोड़ना) एकाह सोमयाग (एक दिन में पूरा) राजसूय - अक्षक्रीडा, द्यूत, प्रीति भोज
11-18	अग्निचयन, वेदिका (10,800 ईंटें) 16वाँ रुद्राध्याय/नमकाध्याय (66 मन्त्र) 18 वाँ - चमकाध्याय 'च मे' (77 मन्त्र) 'यज्ञेन कल्पन्ताम्'
19-21	सौत्रामणी याग (प्रार्थना सरस्वती, इन्द्र, अश्विना) सुरा और सोम का समर्पण (यजु. 21/59) - यजमान भी सुरापान 'सौत्रामण्यां सुरां पिबेत्'
22-25	अश्वमेध यज्ञ की विधियाँ 'राष्ट्रं वा अश्वमेधः' मेधः = मीवति, समृद्धि, पोषण

अध्याय	विषय
26-29	पूर्व निरूपित यागों से सम्बद्ध मन्त्र 30 - पुरुषमेध (184 पुरुष के मेध)
31-33	सर्वमेध याग यजमान सर्वकल्याण के लिये सम्पत्ति बांट देना / वन जाना
34	58 मन्त्र, शिवसंकल्पसूक्त (6 मन्त्र)
35	पितृमेध (पूर्वपुरुष सेवा, श्राद्ध तर्पण)
36-38	प्रवर्ग्ययाग (कलि के अन्त [illegible] सूर्य प्रतीक बनती, [illegible]) 36 - शान्ति मन्त्र - ओं द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं, [illegible]
39	नरमेध / अन्त्येष्टि, [illegible] प्रयोग
40	विशुद्ध ज्ञानकाण्ड, ईशावास्योपनिषद् (17 मन्त्र) [illegible]

कृष्णयजुर्वेदीय संहिता

① तैत्तरीय - 7 काण्ड / 44 प्रपाठक / 631 अनुवाक / 2198 मन्त्र
- महाराष्ट्र, आन्ध्र, दक्षिण में प्रचार
- सायणाचार्य ने इसी पर भाष्य प्रारम्भ किया
- इसके संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, सूत्र उपलब्ध हैं
  तैत्तरीय के सम्पूर्ण कालीन।
- प्रथम सम्पादन - वेबर (1871-72)
  अंग्रेजी अनुवाद कीथ 2 खण्ड 2000 पृष्ठ

② मैत्रायणी - 4 काण्ड - 54 प्रपाठक - 2144 मन्त्र
- कलापया कालापक भी कहा जाता है।

विषय —
- चौथे काण्ड (14 प्रपाठक) खिल - राजसूय आदि यज्ञ वर्णन
- प्रथम (11) पौर्णमास, सोमयाग, अध्वर, आधान, पुराधान, चातुर्मास्य, वाजपेय
- द्वितीय (13 प्रपाठक) काम्य इष्टि, राजसूय, अग्निचिति
- तृतीय (16) अग्निचिति, अध्वरविधि, सौत्रामणी, अश्वमेध

श्रोडर - सम्पादन 4 खण्ड (1881-6), वेबर (1847) [illegible]

(3) कठ

- पतञ्जलि - 85वां - गौतश्रौत में था, अब लुप्त (प्रकार)
- 40 स्थान - 843 अनुवाक् - 3091 मन्त्र
- मन्त्र ब्राह्मण की सम्मिलित संख्या - 18000

मैत्रायणी से साम्य (क्योंकि दोनों के अन्त में अश्वमेध याग वर्णन)

परन्तु कठ (सत्रादून जो मैत्रायणी में नहीं)

- पुरोडाश, अध्वर, राजसूय, वाजपेय विवेचन

(5) कपिष्ठल कठ

- अपूर्णप्राप्त, अष्टक क्रम
- 9-24, 32, 33 सर्वथा खण्डित
- 1932 में लाहौर से प्रकाशित (डॉ रघुवीर)

सामवेद

सामन् - गान

ऋग्वेद की ऋचाओं का संकलन जो गेय

- या ऋक् तत् साम (छान्दोग्य. 1/3/4)
- ऋचि अध्यूढं साम (वहीं 1/6/1)
- सा च अमश्चेति तत्साम्नः सामत्वम् (बृहदारण्यक - 1/3/22)

उपलब्ध शाखा

1. कौथुमीय (गुजरात) सर्वाधिक प्रसिद्ध (अध्याय - खण्ड - मन्त्र)
2. जैमिनीय (कर्नाटक)
3. राणायनीय (महाराष्ट्र) (प्रपाठक - अर्धप्रपाठक - दशति)

संरचना

→ मन्त्र 1875 (पूर्वार्चिक 650 + उत्तरार्चिक 1225)

पूर्व 4 काण्ड आग्नेय, ऐन्द्र, पावमान, आरण्यकाण्ड (महानाम्नी सहित)

6 अध्याय

उत्तर 21 अध्याय, 9 प्रपाठक

→ 1771 ऋचाएँ, मूल 104, शेष - 267 पुनरुक्त, साम के गीत में पुनरुक्त

विषयवस्तु

पूर्वप्रपाठक / पूर्वार्चिक	उत्तरार्चिक
6 प्रपाठक / छन्दस्, छन्दसी, छन्दसिका आर्चिक	9 प्रपाठक
1 - आग्नि, 2-4 इन्द्र, 5 - पवमान (सोम)	
प्रत्येक प्रपाठक में 10-10 मन्त्र वाले सूक्त	- पूरक के रूप में
केवल अंतिम में 9 सूक्त	- लयों पर गाने योग्य सूक्त (तीन ऋचाओं का समूह) तथा प्रगाथों का संग्रह
मूल भूत संरचना है	

संगीत और सामवेद

- 7 स्वर - षडज,ऋषभ,गान्धार, मध्यम,पञ्चम,धैवत, निषाद
- ग्राम - मन्द, मध्य, तीव्र
- मूर्च्छनाएँ (मन्द + मध्य + तीव्र) x 7 स्वर = 21
- तान स्वर तथा उसके योग से 49
- सामवेद में म ग रे सा नि धा प

सामगान

- पूर्वार्चिक मन्त्राधारित - जैमिनशाखानुसार - 3681 गान
  अन्य - 2723

1. ग्राम (ग्राम / सार्वजनिक)
2. आरण्यकगान (वन / पवित्र स्थानों)
3. ऊह (सामयाग / विशिष्ट अवसर) + ~~अरण्य में भी हो सकता था~~
4. ऊह्य (रहस्यगान - आरण्यक / वन / पवित्र स्थान)

सामविकार

1. विकार (आवश्यकतानुसार परिवर्तित करना अग्ने → ओग्नायि)
2. विश्लेषण (पद/शब्द तोड़ना वीतये → वो यि तोया 2 यि)
3. विकर्षण (स्वर को देर तक खींचना ये 2 ये 3 ये 34
4. अभ्यास (बार बार अभ्यास अभ्यास तोय - 5)
5. विराम (गानस्वुविधा, शब्द तोड़कर रुकना)
6. स्तोभ (शब्द जोड़ना (प्रारम्भ:..) औहोवा, हउ, हावु

अन्य

- आंगिरस → कृष्ण (वेदान्तपरंपरा + सामवेद की गायन विधि) छान्दोग्य कहलाई
- वाद्य - दुंदुभि, वेणु, वीणा
- गायन प्रक्रिया - हिंकार, प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, निधन
- सामगायन लय प्रकार - क्रुष्ट, प्रथमा, द्वितीया, चतुर्थी, मन्द्र तथा अतिस्वार्य

अथर्ववेद

- अथर्ववेद का प्राचीन नाम - अथर्वाङ्गिरस (अथर्वा आंगिरस वंशज थे)
- अग्निप्रधान वेद (अंगिरस वेद) - 50% से अधिक सूक्त गद्यात्मक
- अन्य नाम (अंगिरस, क्षत्र, भैषज्य, छन्दो, महीपत)
  - क्षत्र वेद (राजाओं, क्षत्रियों के कर्तव्य निर्देश
  - भैषज्य (आयुर्वेद चिकित्सा)
  - महीवेद (पृथ्वीसूक्त, महती ब्रह्मविद्या के निर्देशात्मक)
  - छन्दोवेद (छन्दप्रधानता।

अर्थ

- निरुक्त √थर्व् गत्यर्थक, गति निषेध - अथर्व (11/18)
- गोपथ ब्राह्मण (1/4) अथ + अर्वाक् (आत्मावलोकन)

शाखाएँ

प्राप्त - 2

① शौनकीय (अधिक लोकप्रिय)
20 काण्ड - 730 सूक्त - 5987 मन्त्र
1 (454) + 19 (453) + 20 (958) बड़े काण्ड
17 काण्ड - 30 मन्त्र (सबसे छोटे)

② पिप्पलाद (कश्मीरी अथर्ववेद)
- कश्मीर शारदालिपि में प्राप्त (ब्लूमफील्ड 1901 में प्रकाशन) रघुवीर ने संकलन किया बाद में
- पतञ्जलि - महाभाष्य - प्रथम आह्निक में - 'शन्नो देवीरभिष्टये' इसी

उपवेद

सर्पपिशाचासुर इतिहास पुराण (गोपथ 1/10)
└ उपलब्ध

भाग

प्रथम - 1-7 काण्ड - 1-(4-4 मंत्र) 2 (5) 3 (6) 4 (7) 5 (8) 6 (3) 7 (1-2)

द्वितीय - 8-12 - अधिक मंत्र विषयभेद

तृतीय - 13-18 - " विषय समान

चतुर्थ - 11-20 लम्बे काण्ड (प्रक्षिप्त लगता है) 20 काण्ड - इन्द्रसूक्त (आर्चिक) सोमयाग का वर्णन (20

विषय

भैषज्यायुष्यपौष्टिक स्त्रीकर्माभिचार ✓
- भैषज्य
- आयुष्य (दीर्घायु हेतु)
- पौष्टिक (कृषि / गृह निर्माण)
- स्त्रीकर्म (विवाह प्रेम / सन्तानोत्पत्ति / जादू टोना (~~वशीकरण~~))
- अभिचार (मारण मोहन उच्चाटन वशीकरण)
- प्रायश्चित
- राजकर्म
- ब्रह्मण्यसूक्त

विषय
1. → अध्यात्म (दर्शन, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, औषध)
2. → अधिभूत (राज्यशासन, संग्राम, राजनीति)
3. → आधिदैवत प्रकरण (देव स्तुति - अग्नि, आदित्य, उषा, विष्णु सूर्य)

अन्य पक्ष

(1) 20 काण्ड - सोमयाग, कुन्ताप सूक्त, यज्ञ, दान स्तुति, दक्षिणा

(2) पृथिवी सूक्त (12/1/12) (63 मन्त्र)

(3) 15 काण्ड - व्रात्यकाण्ड - 18 सूक्त (गद्यात्मक मन्त्र)
व्रात्य = परब्रह्म, स्तुति

(4) सामनस्य सूक्त (3/30), सांमनस्य सूक्त (6/55)
राष्ट्रसभासूक्त (7/12)

ब्राह्मण ग्रन्थ

अर्थ

- मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम् (आपस्तम्ब, यज्ञपरिभाषा)
- ब्रह्मन् = मन्त्र, यज्ञ, रहस्य तथा परमसत्ता
  ∟ यज्ञकर्म का भौतिक रूप के साथ अन्य रहस्य
- भट्ट भास्कर- तैत्तरीयसंहिता(1/5/1)
  'ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां च व्याख्यानग्रन्थः'

विषय

हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः।
परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण कल्पना।
उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्य तु॥ मीमांसासूत्र भाष्य 2/1/33

1. हेतु (यज्ञादि के कारण)
2. निर्वचन (शब्दों की व्याख्या)
3. निन्दा (अकर्मण्यों की निन्दा)
4. प्रशंसा (स्वर्गकामो यजेत)
5. संशय दूर करना
6. विधि - (यज्ञ में अनुष्ठान विधि करना कथन)
7. परक्रिया (एक व्यक्ति की कथा (दाशरथि पत्नी))
8. पुराकल्प (महाभारत) प्राचीन कथाएँ)
9. व्यवधारण (सन्देह की स्थिति में समुचित निर्णय
10. उपमान (समान दृष्टान्त द्वारा विषय को स्पष्ट करना)

विनियोग

- वैदिक मन्त्रों का यज्ञ में उपयोग

अर्थवाद - स्तुति / निन्दा के वचन

आख्यान ① शुनःशेप आख्यान (ऐत०) ② वाङ्मनस् (शतपथ)
काफी महत्वपूर्ण है वाणी मन... प्रजापति विवेचना

① मेगा

ब्राह्मण

ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद
ऐतरेय (शाकल कौषीतकि (शाङ्खायन)	शुक्ल • शतपथ (माध्यन्दिन/काण्व) कृष्ण तैत्तरीय मैत्रायणी कठ, कपिष्ठल	पंचविंश (ताण्ड्य) षड्विंश सामविधान आर्षेय दैवत उपनिषद संहितोपनिषद वंश जैमिनीय (तलवकार)	गोपथ (शौनकशाखा)

ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ

① ऐतरेय (शाकल) – महीदास ऐतरेय
- 40 अध्याय
- पञ्चिका में विभक्त (5-5 अध्याय समूह)

| सायण भाष्य, कीथ – अंग्रेजी अनुवाद इसके द्वारा, पं. गङ्गाप्रसाद उपाध्याय – हिन्दी अनुवाद, हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

② कौषीतकि (शाङ्खायन)
- बाष्कल शाखा वर्तन में उसकी संहिता नहीं
- 30 अध्याय, अध्याय → खण्ड (226)
प्रथम 6 अध्याय (पाक यज्ञ – अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपौर्णमास, ऋतुयज्ञ)

यजुर्वेद के ब्राह्मण
① शतपथ
- शुक्ल का एकमात्र
- 100 अध्याय
माध्य. – 14 काण्ड – 100 अध्याय – 7624 कण्डिकाएँ (प्रपाठक व ब्राह्मण में)
काण्व – 17 काण्ड – 104 अध्याय – 6806 कण्डिकाएँ
- अन्तिम 6 अध्याय ज्ञान काण्ड – बृहदारण्यकोपनिषद्

② तैत्तिरीय – कृष्ण का एकमात्र स्वतन्त्र ब्राह्मण ग्रन्थ
- I-II काण्ड – अष्टक, 8 पाठक भी, तृतीयकाण्ड 12 अध्याय
└ प्रक्षिप्त
- नासदीय सूक्त, वैदिक ज्योतिष

(1) मैत्रायणी
- मैत्रायणी संहिता का 4th अध्याय
  └ कुल 3 अध्याय में विभक्त
- पर्वतापाख्यान (1/10/13) पर्वत → प्रजापति के पुत्र थे। इन्द्र पंख काटना

सामवेद के ब्राह्मण (सामवेद के 8 ब्राह्मण)

① ताण्ड्य
- 25 अध्याय (पंचविंश / प्रौढ़ / महाब्राह्मण)
- आख्यान-बहुल विश्व
- व्रात्ययज्ञ (17वें)
- आर्यावर्त भूगोल

सोमयाग - 1 - 1000 वर्ष यज्ञ

② षड्विंश ब्राह्मण (अद्भुत ब्राह्मण)
- ताण्ड्य का परिशिष्ट
- 2 संस्करण - जीवानन्द (कलकत्ता 1881) 5 प्रपाठक में विभक्त
  - तिरुपति (1967) 6 अध्याय

③ सामविधान
- जादू टोना
- तीन प्रकरण में विभक्त

④ आर्षेय
- 3 प्रपाठक 82 खण्ड
- सामवेद की अनुक्रमणी (ऋषियों की)

⑤ दैवत (देवताध्याय)
- सबसे छोटा सामवेदीय
- सायणभाष्य
- तीन खण्ड

⑥ उपनिषद्
- 2 भाग - 10 प्रपाठक
- प्रथम भाग - 2 प्रपाठक (मन्त्रब्राह्मण / छान्दोग्यब्राह्मण)
- गृह्यसंस्कार वर्णित

(7) शाट्यायनोपनिषद्

- 5 खण्ड → सूत्र
- 2 टीकाएँ – तिरुपति – प्रकाशित

(8) वंश

- 3 खण्ड
- आर्षेय के समान ऋषी सूची, वंशावली

→ सभी – बर्नेल ने 1870-80 टीकासहित प्रकाशित
पुनः केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ – 1960-70

(9) जैमिनीय

- पहले भारत/कोलम्बिया में कोलम्बो प्रकाशित
- डॉ रघुवीर, नागपुर (1954) प्रकाशित
- शतपथ के समान विशाल, 5 अध्याय
4 – उपनिषद् ब्राह्मण, 5 – आर्षेय।

अथर्ववेद का गोपथ

- 2 भाग – पूर्वगोपथ (5), उत्तरगोपथ (6 अध्याय)
- ओंकार से तीन वेद उत्पन्न — प्रो. ब्लूमफील्ड – वैतानसूत्र के बाद
- गायत्री महिमा

आरण्यक

- 'अरण्य एव पाठ्यत्वादारण्यकमितीर्यते'
- सायण - 'अरण्याध्ययनादेतदारण्यकमितीर्यते'
- ब्रह्म विषयक चिन्तन प्रारम्भ

ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद
ऐतरेय शाङ्खायन	शुक्ल बृहदारण्यक वाजसनेयि काण्व कृष्ण तैत्तिरीय मैत्रायणी	तलवकार (जैमिनीय)	

① ऐतरेय (शाकल)

- 5 भाग (आरण्यक) — प्रधान तीन - महीदास
- → 1 - महाव्रत वर्णन जो ऐतरेय ब्राह्मण के गवामयन का अंश
- → 2 (3 अध्याय) अन्य, प्राणविद्या, पुरुष विवेचन
  - 4-6 अध्याय - ऐतरेयोपनिषद
- → 3 - संहितोपनिषद (संहिता, पद, क्रम, स्वर-व्यञ्जनादि)
- → 4 - लघुकाय (महानाम्नी ऋचाएँ संकलित) महाव्रत के आदिन पठनीय
- → 5 - शौनक
- सायण भाष्य

② शाङ्खायन (कौषीतकि)

- 15 अध्याय, (3-6) कौषीतक्युपनिषद
- 6 - उशीनर, मत्स्य, काशी विदेह पांचाल
- 13 उपनिषद अंश (विशेष - बृहदारण्यक)

③ बृहदारण्यक – शतपथ ब्राह्मण का अंतिम भाग
- शंकर, रामानुज, सायण भाष्य

④ तैत्तिरीय
- 10 परिच्छेद (प्रपाठक)
- (7-9) तैत्तिरीयोपनिषद्
- 10 - महानारायणीयोपनिषद्

⑤ मैत्रायणीयोपनिषद्

⑥ तलवकार
- तवल = संगीतज्ञ
- जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण
- 4 अध्याय → अनुवाक
- 4 के 10 अनुवाक – केनोपनिषद् है
- सामवेद के ताण्ड्य ब्राह्मण से सम्बन्धित छान्दोग्यारण्यक उपनिषद् जो छान्दोग्योपनिषद् का आरम्भिक भाग है।

उपनिषद

उप + नि + षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु
(नाश) (प्राप्ति) (शिथिल)
गुरु के समीप बैठकर प्राप्त किया गया ज्ञान

शङ्कराचार्य –
उपनिषादयति सर्वानर्थकरं संसारं विनाशयति, संसारकारणभूताम् अविद्याम् च शिथिलयति, ब्रह्म च गमयति। (ईशा- भाष्य के आरम्भ)

संख्या

→ प्राचीन – 14
→ मुक्तिकोपनिषदानुसार – 108

ऋक्	यजु	साम	अथर्व
10	19 (शु) 32 (कृ)	16	31

→ कल्याण 'उपनिषदङ्क' – 220
→ उपनिषद् वाक्य महाकोश – 223
→ चौखम्बा, 128

ईश केन कठ प्रश्न मुण्ड माण्डूक्य तित्तिरः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा ॥ मुक्ति.

– 10 पर शंकरभाष्य
└ परिचित = श्वेताश्वतर + कौषीतकि

ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद
ऐतरेय कौषीतकि	शु. ईशावास्य (18 मन्त्र) बृहदारण्यक कृ. कठ, तैत्तिरीय श्वेताश्वतर, मैत्रायणी महानारायण	छान्दोग्य, केन	मुण्डक प्रश्न माण्डूक्य

मैत्रायणी
– बृहदारण्यक – सबसे बड़ा, माण्डूक्य सबसे छोटा – 8 मन्त्र

मुख्य विषयवस्तु

① ब्रह्मतत्व 'सर्वं खलु इदं ब्रह्म' (छान्दोग्य) ब्रह्म तज्जलान् - तज्ज, तल्ल, तदन् (शांकर)

② आत्मतत्व
- आत्मा, अन् प्राणने
- अणोरणीयान् महतो महीयान् (कठ)
- अयमात्मा ब्रह्म (माण्डूक्य 1-2)
- यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत् प्रयन्त्यभिसंविशन्ति, तद् विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्मेति (तैत्तिरीय)

③ अद्वैततत्व
① प्रज्ञानं ब्रह्म (ऐत 1/3/3)
② अहं ब्रह्मास्मि (बृहदारण्यक 1/4/10)
③ तत्त्वमसि (छान्दोग्य)

④ प्राणसिद्धान्त
- प्राणो वाव ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च (5/1/1)

⑤ सृष्टि विज्ञान
- तैत्तिरीय - जनक - लीन
- आत्मा ने (एकाकी जीवन से असन्तुष्ट) स्त्री पुरुषरूप धारण

⑥ कर्म सिद्धान्त

अथो खल्वाहुः काममय एवायं पुरुष इति, स यथाकामो भवति, तत्क्रतुर्भवति, यत्क्रतुर्भवति तत्कर्म कुरुते, यत्कर्म कुरुते तदभिसम्पद्यते (बृह 4/4/5)

⑦ नैतिक
- शांति कल्याण
- सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः (तैत 1/11)
- दाम्यत, दत्त, दयध्वम् (बृह) (कठ)
- मा गृधः कस्यस्विद् धनम्

① ऐतरेय

- ऐतरेय का II आरण्यक / 4-6 अध्याय
- विश्व उत्पत्ति, पुरुषमुक्ताधारित आदि
- तृतीय अध्याय - 'प्रज्ञान' आत्मा वर्णन

② कौषीतक्युपनिषद्

- कौषीतकि - III - VI
- 4 अध्याय (7, 15, 9, 20 खण्ड)
- गद्यात्मक
- प्रथम देवयान + पितृयान (मृत्यु के बाद मार्ग) वर्णन
  द्वितीय प्राण विवेचन
  तृतीय इन्द्र प्रतर्दन ब्रह्मविद्या उपदेश।

③ ईशोपनिषद्

- शुक्ल - 40 अध्याय
- अत्यन्त प्राचीन, केवल 18 पद्यात्मक मंत्र

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥

④ बृहदारण्यकोपनिषद्

- शुक्ल - शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्याय
- गद्यात्मक,
  I - मधुकाण्ड, II संवाद - गार्ग्य बालाकि काशिराज अजातशत्रु
  याज्ञवल्क्य - पत्नी
  III - याज्ञवल्क्य (विदेहराज जनक सभा + ऋषि)
- मधुविद्या (V)

⑤ तैत्तिरीयोपनिषद्

- कृ. तैत्तिरीय - तैत्तिरीय आरण्यक - 10 प्रपाठक के (7-9)
- शिक्षावल्ली - प्राचीन शिक्षा पद्धति
- ब्रह्मानन्द वल्ली
- भृगु वल्ली, इसी प्रकरण को बादरायण का ...

⑥ कठोप

- कृ कठशाखा -
- कुछ को छोड़कर पद्यात्मक
  2 अध्याय - 3-3 वल्लियों में विभक्त
- प्रथम - यम नचिकेता (क्रोधशांति, स्वर्गीय अग्निविद्या, आत्मतत्व) वर
- II - आत्मा की व्यापकता

⑦ श्वेताश्वतर

- परवर्ती (कृ.)
- सांख्य + वेदान्त नहीं

⑧ मैत्रायणी

- 7 प्रपाठक, सबसे अर्वाचीन
- सांख्य, यज्ञ, हठयोग

⑨ महानारायण

- कृष्ण - तैत्तिरीयारण्यक → 10 प्रपाठक
- सायण ने भाष्य रचना
- कर्मकाण्डीय प्रतीत, कहीं - रुद्र की स्तुति भी

⑩ छान्दोग्य

- अत्यन्त प्राचीन
- तलवकार → छान्दोग्य ब्राह्मण → अंतिम 8 अध्याय
- विशालकाय गद्यात्मक उपनिषद्
- प्रवाहण जैवलि संवाद

⑪ केनोपनिषद्

- तलवकार / जैमिनीय उपनिषद् - 4 खण्ड
- 'केनेषितं पतति प्रेषितं मनः' से प्रारम्भ
- 34 मन्त्र

⑫ प्रश्नोपनिषद्

- अथर्ववेद - पैप्पलाद - पिप्पलाद से 6 प्रश्न पूछे

पिप्पलाद शिष्य को -
'त्वं हि नः पिता योऽस्माकमविद्यायाः परं पारं तारयसीति'

(13) मुण्डकोपनिषद्

- अथर्व - शौनक -
- मुण्डित सिर वाले - त्याग पराकाष्ठा (3 - मुण्डक में विभक्त
  अध्ययन अधिकार शिरोव्रती - 'शिरोव्रतं विधिवद् यैस्तु चीर्णम्'
  3/2/10
- पद्यात्मक
  I - विद्या — अपरा (वेद-वेदाङ्ग) — परा (ब्रह्मज्ञान) 'अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते'
  II - द्वैत - 'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया'
  'सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः'

(14) माण्डूक्य
- 12 मन्त्र गद्यात्मक
- ओंकार की महत्ता (सर्वमोङ्कार एव)
- (अयमात्मा ब्रह्म, सोऽयमात्मा चतुष्पात्, 2)
- गौडपाद ने 'माण्डूक्यकारिका' 4 खण्डों में विभक्त 215 पद्य, अद्वैत.

वेदाङ्ग साहित्य

उद्देश्य – (अर्थबोध , उच्चारण , याज्ञिक प्रयोग) के
व्या. नि. शि. छ. कल्प. ज्योतिष
वेदाः अङ्ग्यन्ते प्रकाश्यन्ते अनेन

पाणिनीय शिक्षा प्रकार

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते ।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥ (41/42)

(1) शिक्षा

- सायण ! शिक्ष्यन्ते वेदनायोपदिश्यन्ते स्वरवर्णादियोयत्र '
- स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्रोपदिश्यते सा शिक्षा - ऋ. भाष्यभूमि.
- तैत्तरीयउपनिषद् शिक्षावल्ली – (1/2)
  'वर्णः स्वरः मात्रा बलं साम सन्तान इत्युक्तः शिक्षाध्यायः'

(1) वर्ण – 'त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः' (पाणिनि)
21 स्वर + 25 स्पर्श + 8 यादि (अन्तः ऊष्म) + 4 यम + 4 अयोगवाह (ः ...)
+ ळ + ळ्ह = 64/63

(2) स्वर उदात्तानुदात्तस्वरित

(3) मात्रा – ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत

(4) बल – बलं स्थानप्रयत्नौ → आभ्यन्तर (स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, संवृत) ; बाह्य – (11)

(5) साम – 6 दोष – गीतगुबत, शीघ्रता, सिर हिलाकर, यथालिखित, उच्चारण, अर्थ न जानना, अल्पकण्ठता
6 गुण → माधुर्य, अक्षरव्यक्ति, पदच्छेद, सुस्वर, धैर्य, लयसमर्थ

(6) सन्तान (संहिता) – संधि या संहिता के नियम
पर प्रकृतिः संहिता (निरुक्त 1/17)

शिक्षा ग्रन्थ

① प्रातिशाख्य – (प्रक्रिया को अलग-अलग) – प्राचीनतम ग्रन्थ '
ऋक् प्रातिशाख्य, तैत्तरीय प्रातिशाख्य, वाजसनेयी, सामप्रातिशाख्य,
(सामतंत्र, पुष्पसूत्र अक्षतंत्र)
अथर्वप्रातिशाख्य

② पाणिनीयशिक्षा

② कल्प

'कल्प्यन्ते समर्थ्यन्ते यज्ञयागादिप्रयोगाः यत्र'

लक्षण – 'कल्पो वेदविहितानां कर्मणामानुपूर्व्येण कल्पनाशास्त्रम्' – विष्णुमित्र

होता, अध्वर्यु, उद्गाता, ब्रह्मा

① श्रौतसूत्र – श्रौतयाग
– 7 हविर्यज्ञ + 7 सोमयाग 7 = 17

② गृह्यसूत्र – 42 संस्कार
– पाकयज्ञ 7 + महायज्ञ 5
गृह्य यज्ञ

③ धर्मसूत्र – सामाजिक / नैतिक
– वर्णाश्रम-धर्म, व्यवहार, दण्डविधान, प्रायश्चित,
उत्तराधिकार + भक्ष्याभक्ष्य
गौतम (600 BCE)

④ शुल्वसूत्र – मापने की रस्सी, वेदियों की रचना
– भारतीय ज्यामिति का आरम्भ

③ छन्द

छद् + असुन्) आच्छादन
'कात्यायन – यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'
पिंगल – छन्दःसूत्र 4-4 (लौकिक + वैदिक)
सबसे बड़ा – उत्कृति (104)

④ ज्योतिष

• काल गणना
• लगधाचार्य – 'वेदाङ्गज्योतिष' (बाल कृष्ण दीक्षित – 1400 BCE)
• → आर्च (36) मिलित ग्रन्थ | सोमाकर के भाष्य
→ याजुष (43) | प्राप्तिकर्ता

Z

⑤ व्याकरण

ब्रह्मा → बृहस्पति → इन्द्र → भरद्वाज → ऋषि → ब्राह्मण

• ऐन्द्र सर्वप्राचीन

रक्षोहागमलघ्वसन्देह

⑥ निरुक्त

– (निस् + वच् + क्त)

उपलब्ध – यास्क – निघण्टु (5) पर व्याख्या।

– [तीन कांड – नैघण्टुक, नैगम, दैवत] निघण्टु

प्रधान – पद लक्षण – नामाख्यात उपसर्ग निपात

प्रयोजन ① वेदों की निर्वचन परक व्याख्या
② देवताओं के स्वरूप स्पष्ट

निरुक्त – स्कन्दस्वामी, दुर्गाचार्य (1300 CE)
600 CE

शिक्षाग्रन्थ

ऋग्	यजु	साम	सूत्र
पाणिनीय	वाशिष्ठी माण्डव्य भरद्वाज माध्यन्दिनी अवसाननिर्णय	नारदीय	आपिशलि पाणिनि चन्द्रगोमी

कल्प

	ऋग्वेद	यजुर्वेद शुक्ल	कृष्ण	सामवेद	अथर्ववेद
श्रौत	आश्वलायन शाङ्खायन	कात्यायन	बौधायन आपस्तम्ब हिरण्यकेशी वैखानस भरद्वाज मानव	आर्षेय लाट्यायन द्राह्यायण जैमिनीय	वैतान
गृह्य	कौषीतकि आश्वलायन शाङ्खायन	पारस्कर वैखानस वधूल काठक वाराह	बौधायन मानव भरद्वाज आपस्तम्ब हिरण्यकेशी	गोभिल खादिर जैमिनीय	कौशिक
धर्म	वशिष्ठ विष्णु	हारीत शङ्ख	बौधायन आपस्तम्ब हिरण्यकेशी	गौतम (600 B.C.)	
शुल्ब (यजु. से सीधा सम्बन्ध)		कात्यायन	बौधायन आपस्तम्ब मानव मैत्रायणीय वाराह वधूल		

वेदों का काल

① भाषाशास्त्रीय मत

↳ जर्मन फ्रेडरिक मैक्समूलर - 1859 - A History of Ancient Sanskrit Lit.
- सिकन्दर का आक्रमण (326 BCE) + बौद्ध (583) तक पूर्ण
- छन्द काल 1200 - 1000 BCE
  मन्त्र 1000 - 800 BCE
  ब्राह्मण 800 - 600 BCE

↳ अवेस्ता (1000 BCE) (इ ओल्ड टेस्टा. - आक्रमण)
- मैक्डोनल 1300 BCE (भारतीय - ईरानी मिश्रण)
- 1400 BCE माना जाता है

② ज्योतिषशास्त्रीय मत

↳ लुडविग - सूर्यग्रहण - प्रमाण
↳ याकोबी (जर्मनी हरमन)
- कृत्तिका नक्षत्र - 2500 BCE (शतपथ - विषुव पूर्व, अब - मृगशिरा (हिलाल))
  2000 साल लगेगा
  ऋग्वेद - 4500 BCE
- ध्रुवतारा

↳ बालगंगाधर तिलक
- रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी आदि - एक नक्षत्र पीछे 972 वर्ष में रहता है
- अदिति काल - 6000 - 4000 (देवता स्तुतियाँ की रची हुई आदि)
- मृगशिरा (4000-2500) ऋग्वेद के अधिकांश मन्त्र
- कृत्तिका (2500-1400) (तैत्तरीय संहिता, शतपथ ब्राह्मण अंतिम वेदांग ज्योतिष)
- अन्तिम काल (1400-500) सूत्र साहित्य (कल्प, वेदांग)

↳ विन्टरनित्स - 3000 BCE (वैदिक)
  संस्कृति 4000 BCE

③ पुरातत्व

① बोगाजकुई (1400 BCE)
- विंकलर 1907 में शिलालेख
- हित्ती-मितानी जातियों की राजाओं की संधि
मित्र, अरुन(वरुण), इन्द्र, नासत्यि
- विन्टरनित्ज़ 2000 में भारतीय उत्तर पश्चिम जातियाँ पश्चिम गईं

② सिंधु घाटी सभ्यता
- 1922 में उत्खनन (उत्खनन)
- (3500 – 1750) NCERT

↳ जॉन मार्शल
- सैंधव के विनाश के बाद वैदिक

↳ सर मोर्टिमर व्हीलर
- आर्यों को सैंधव का विनाशक

↳ दोनों एक खण्डन और सूर्यकांत - अश्व वेद में सैंधव में नहीं

∴ 1600 BCE

- Painted Grey Ware PWG
- Northern Black Polished Wares NBPW

उत्तर वैदिक 1000-600 BCE

④ भूगर्भशास्त्रीय
↳ सप्तसिंधु के चारों ओर समुद्र था ऋ (9/33/6, 10-46-2)
↳ [illegible] सरस्वती के निकट भी समुद्र है
↳ सरस्वती शुतुद्रि मिलकर गर्जन करते हुए समुद्र - (3/33/2)
↳ 25000 BCE

⑤ पौराणिक
↳ डॉ. कुञ्जन - 2 वंशज में पौराणिक प्रमाण
↳ शकुन्तला वर्ष 3101 BCE – आर्यभट्ट (399 CE)
↳ ज्योतिष का भी समर्थन - 6000 BCE

वेद पर भाष्य

① भास्कर (800 BCE - वैज्ञानिक भाष्यकार) 14 अध्याय
600 ऋचाओं की पूर्ति

② सायण (1400 CE, भक्ति व्याख्याकार) विजयनगर - हरिहर [माधवाचार्य गुरु]

वेदा — मक्ति

स्कन्दस्वामी	700 CE ऋ	ऋ	नारायण उद्गीथ पूर्ण
वेंकटमाधव	1100 CE ऋ	ऋ	
सायण	1400 ऋ		वेदार्थ प्रकाश

अन्यकालीन

हरिस्वामी	शतपथ ब्राह्मण ऋ	638 CE
माधवभट्ट	संहिता ऋ	'ऋक् माधवीय' (1400 CE) ऋक् पूर्ण (कृ)
भट्ट भास्कर	तैत्तरीयसंहिता (कृ)	'ज्ञानयज्ञ' (निर्देश [illegible] भावकर [illegible] 1100 CE + सायण)
महीधर	माध्यन्दिन (शु)	
उवट	" भाष्य →	(भोजकालीन 1018-1060) [वेददीप] ऋक् प्रातिशाख्य, यजु. प्रातिशाख्य, ऋक् सर्वानुक्रमणी ईशोपनिषद पर भी भाष्य
हलायुध	काण्व (शु)	ब्राह्मणसर्वस्व (बंगाल - लक्ष्मणसेन सभासद)
अनन्ताचार्य	काण्व (21-40)	1600 CE
आनन्दबोध	काण्व (शु.) (31-40)	
माधव	सामवेद पूर्वार्चिक उत्तरार्चिक	'विवरण' 'छन्दसिका विवरण' बाणभट्ट के गुरु 'उत्तर विवरण' कादम्बरी [illegible]
भरतस्वामी	सामवेद	1272-1310 होयसल राजा रामनाथ [illegible]
गुणविष्णु	कौथुम (सा.)	1200 CE 'छान्दोग्य मन्त्र भाष्य'

उपवेद

अथर्ववेद
सायणभाष्य ही उपलब्ध है

भारतीय अर्वाचीन

① स्वामी दयानन्द सरस्वती (1828-1883)
- 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' - एकेश्वरवाद
- शुक्ल (माध्यंदिन)
- ऋ. 7 मण्डल के कुछ सूक्तों संस्कृत - हिन्दी
  - श्रीपाद सातवलेकर ने हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित

② अरविन्द (आध्यात्मिक) (1872-1950)
- वेद रहस्य 'On the Vedas'
- Hymns to Sacred fire' अग्नि सूक्त अंग्रेजी अनुवाद
  - आध्यात्मिक –
    पं. कपालिशास्त्री - सिद्धाञ्जन भाष्य (2 खण्ड)
- पांडिचेरी में आश्रम की स्थापना

पाश्चात्य परम्परावादी

① विल्सन (1784-1860)
- ऋग्वेद अनुवाद
  (सायण के भाष्य - अंग्रेजी में - 6 खण्ड 1850)

② मैक्समूलर (1823-1900)
- सायण - ऋग्वेद - 1849-74 प्रकाशन
- पूर्वी धर्मग्रंथमाला (Sacred Books of the East) 50 खण्ड
अन्य: India ! what it can teach us

पाश्चात्य भाषाशास्त्री

↳ ऋग्वेद का प्रथम अनुवाद — विलियम जोन्स

① रुडाल्फ रॉथ (1821-95) जर्मन
- वेद का साहित्य और इतिहास (1846)
- निरुक्त का आलोचनात्मक संस्करण (1852)
- संस्कृत महाशब्द कोश 1852-75) (बोथलिंग की)
  संकलित आकारकी ऑफ आइंस

② ग्रासमान (1809-77 ई.) जर्मन
- ऋग्वेद का शब्दकोश 1867, 1877
- ऋग्वेद का जर्मन में पद्यानुवाद

पाश्चात्य पद्धति समन्वयवादी

① लुडविग (1837 - 1912) एकजाति प्रथम सिद्धान्तिक
- 6 खण्ड - ऋ. जर्मन अनुवाद + टीका

② ग्रिफिथ
- 4 वेद (अंग्रेजी पद्यानुवाद)
- वा. रामायण की "

③ ओल्डनबर्ग (1854 - 1920) जर्मन
- मैक्स. ग्रन्थ संपादित
- ऋग्वेद का पाठालोचन तथा टिप्पणी 1909, 12
- वेद का धर्म (Religion des Veda)
  कर्मकाण्ड को मानना ही वैदिक धर्मज्ञान होगा

④ गेल्डनर
वैदिक अध्ययन (3 खण्ड)
ऋ. जर्मन अनुवाद

⑤ मैकडानल 1854
- वैदिक धर्म (1880)
- वैदिक देवशास्त्र (1897)
- वैदिक इंडेक्स (1912) वैदिक रीडर
(India's Past Oxford 1927)

(6) रेनु (फ्रेंच लुई रेनु)

- वेदविषयक साहित्य सामग्री
- वैदिक शब्दों पर विचार
  वैदिक भाषा का व्याकरण (1952
  वैदिक कर्मकाण्ड (1954)
  16 उपनिषद विवेचन (1943-56)
  ऋग्वेद के सोमसूक्त (1953)

• Dr. देवराज चानना ने अनुवाद अंग्रेजी 1965 Destiny of the Veda in India

वेद से सम्बद्ध प्रमुख ग्रन्थ

ह्विटने संस्कृत ग्रामर, मैक्डॉनल वैदिक ग्रामर, वैदिक ग्रामर फॉर स्टूडेन्ट

रामगोपाल वैदिक व्याकरण ; सिद्धान्त कौमुदी 'स्वर वैदिक प्रक्रिया'

रॉथ + भारलिंक - संस्कृतवोर्टरबुख, मोनियर विलियम्स - Sanskrit English Dictionary

डॉ. सूर्यकान्त वैदिक कोश

ब्लूमफील्ड - वैदिक कंकार्डेन्स, जैकोब उपनिषद वाक्यकोश

विश्वबन्धु - वैदिक पदानुक्रम कोश

भारतीय विद्याभवन - वैदिक एज (खंड)

हिलेब्रांट - वेदिशे मीथालोजी, मैकडॉनल - वैदिक मिथालॉजी

कीथ - Religion And Philosophy of Veda and Upnisada

रेनु - Vedic India, रामगोपाल - इण्डिया ऑफ वैदिक कल्पसूत्राज

RAMAYANA,

MAHABHARATA,

PURANA,

[History of Sanskrit Literature]

PART II

रामायण

- आदि (श्रेष्ठ / प्रथमप्राप्त) काव्य
- विकासनशील काव्य
- 7 काण्ड (बाल, अयोध्या-अरण्य-किष्किन्धा-सुन्दर-युद्धोत्तर) 24000 पद्य, 500 सर्ग, चतुर्विंशतिसहस्रश्लोक
- अनुष्टुप (सर्वाधिक), उपजाति, वंशस्थ (छन्द) + उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास

संस्करण

① बम्बई (देवनागरी)

- 1902 CE KP परब के सम्पादन, निर्णयसागर बंबई प्रकाशन
- गीताप्रेस गोरखपुर (हिन्दी अनुवाद), RTH ग्रिफिथ अंग्रेजी (1870)

टीका

- 'तिलक' नागेशभट्ट 'राम' (राम अभ्युदय)
- 'भूषण' गोविन्दराम
- शिरोमणि

② बंगाल

- इटली विद्वान् गोरेशियो 1843-1867 (...) + अनुवाद (इटली)
- 1854-58 फ्रेंचानुवाद

③ पश्चिमोत्तर (कश्मीर)

- DAV College लाहौर Research Department 1923
- कटक की टीका भी

④ दाक्षिणात्य

- कुम्भकोणम् (मद्रास) विलास बुक डिपो, 1929-30
- प्राय: बंबई से मिलता है

आलोचनात्मक → महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

पक्ष –

- क्षेमेन्द्र रामायणमंजरी – कश्मीर संस्करण के निकट
- भोज – रामायणचम्पू – बंबई
- हरिवंश (236) बंगाल सामीप्य

प्रमुख टीकाएँ

- धर्माकूतम् – त्र्यम्बक मखिन्
- वाल्मीकि हृदयम् – अहोबल

विषयवस्तु (कांड)

① बालकाण्ड (77)
- पूर्वपीठिका
- कुशीलव (कथागायक)
- महाभारत भी –
  विश्वामित्र, वशिष्ठ, वामनावतार (29), कार्तिकेय (34-37)
  सगरोपाख्यान, गंगावतरण, सागरमंथन etc.

② अयोध्या (119)
- अभिषेक तैयारी (आरम्भ)
- अंतिम – चित्रकूट to दण्डकारण्य (राम)

③ अरण्यकाण्ड (75)
- दण्डकारण्य – पम्पा सरोवर

④ किष्किन्धा (67)
- पम्पा सरोवर देखकर दुःखी (राम) सीता वियोग
- सागर तट

⑤ सुन्दर (68)
- बृहत्
- हनुमान नायक (नाम - सुन्दर)
- नामकरण – कोशिक काव्यात्मक वर्णन (सुन्दर)

⑥ युद्ध (128)
- पाश्चात्य → रामायण की समाप्ति यहीं

⑦ उत्तरकाण्ड
- इतिहास, पुराणात्मक आख्यान
- राम प्रश्न → अगस्त्य ऋषि (रावणवंश) (हनुमान)
- सीतापरित्याग etc.
- अंतिम सर्ग पाठफल

पद्य

- 645 सर्ग, 24000 से ज्यादा पद्य
- बालकाण्ड में आरम्भ में 500 सर्ग की बात कही गई।

प्रक्षिप्त अंश

- बालकाण्ड + उत्तरकाण्ड
  - वेबर (Uber Das Ramayan 1870)
  - याकोबी (H. Jacobi Das Ramayan)
  - विन्टरनित्स (समर्थक)

मत – बालकाण्ड = उत्तरकाण्ड (भाषा दृष्टि से समान)

- भारतीय मत
  बाल + उत्तर
  - कुछ सर्ग प्रक्षिप्त (न कि सम्पूर्ण काण्ड)
  - जिन पर टीकाएँ नहीं

मत – किसी भी संस्करण में बालकाण्ड को नहीं जोड़ा
- बालकथा मूलकथा से असम्बद्ध
- पुराणों का इन कथाओं पर पर्याप्त प्रभाव
  150 सर्ग
- अवतारवाद बाद में जोड़ा गया (राम = विष्णु)

- अरण्य में लक्ष्मण (अकृतदार:)
- उत्तर (सुग्रीव-विस्तार)
- रामायण का महत्व 2 बार
  युद्ध + उत्तर
  - सीतानिर्वास
  - दु:ख वाल्मीकि
  - न पुन:

रस

आनन्दवर्धन (840 CE) – करुण रस

रामायण टीका

1400	रामानुजीय	
1475	वेंकट	सर्वार्थसार
1500	वैद्यनाथ दीक्षित	रामायणदीपिका
1525	ईश्वर दीक्षित	विवरण
1550	गोविन्दराज	रामायणभूषण
1575	अहोबल	वाल्मीकिहृदय
1600	महेश्वरतीर्थ	रामायणतत्त्वदीपिका
1650	माधवयोगी	अमृतकतक
1700	राजा रामवर्मा (शृङ्गवेरपुर UP)	रामायण तिलक
1865	वंशीधर + शिवसहाय	रामायण शिरोमणि

- डॉ. आफ्रेक्ट – कैटलोगस कैटलागोरम
  - 30 टीका उल्लेख
- (15–17 CE) – 10 टीकाएँ
- अप्पयदीक्षित (1554–1626)
  'रामायणतात्पर्यसंग्रह'
- त्र्यम्बक मखी (1750 Apx)
  'धर्माकूत'

रामायण का काल

श्लेगल	11 BCE	
याकोबी	800 BCE - 500 BCE	(भाषाशैली)
कामिल बुल्के	600 BCE	
विन्टरनित्स	300 BCE	पाटलि
वेबर	326 BCE	(एलेक्जेंडर + दशरथ जातक
मेक्डॉनल, काशीप्रसाद जयसवाल, जयचन्द्र सत्यालंकार	500 BCE	

① महाभारत से सम्बन्ध

- महाभारत में वाल्मीकि को आदरणीय ऋषि
- वनपर्व में रामोपाख्यान
- रामायण के पात्रों को महाभारत को परिचय है
- 100 BCE में लिख गया होगा।

② बौद्ध जैन साहित्य से सम्बन्ध

बौद्ध –
- अयोध्या राम के द्वारा बुद्ध निन्दा (प्रक्षिप्त)
- दशरथ जातक (इसमें पुष्पकाव्य का पद्य प्राप्त)
- 'सद्धर्मस्मृत्युपस्थान' बौद्ध – वाल्मीकि का प्रशंसा (जम्बूद्वीप = किम्बर्जन)
  → प्रो. सिल्वाँ लेवी (फ्रांसीसी)
- अश्वघोष – बुद्धचरित / सौन्दरनन्द (100 CE)
- कुमारलात – कल्पना मण्डितिका (गद्यपद्यात्मक) उल्लेख – सार्वजनिक पाठ रामायण)
- चीनी स्रोत – 400 CE – लोकप्रिय

जैन – विमलसूरि (100 CE) – रूपान्तरण 118 सर्गों प्राकृत काव्य पउमचरिय

भाषाशास्त्रीय आधार

- याकोबी - रचना अप्रचलित मृत (संस्कृत) भाषा में लोकप्रिय रचना नहीं
  खण्डन - विन्टरनित्स - संस्कृत लोकप्रचलित थी, जीवित

- पाणिनि सम्मत भाषा का खण्डन
  अतः पाणिनि पूर्व

अन्तः साक्ष्य

- कोसल की राजधानी अयोध्या (बौद्ध + जैन + पतञ्जलि = साकेत)
- रामायण उत्तरकाण्ड - लव द्वारा श्रावस्ती राजधानी बनाये जाने का उल्लेख
- 35 सर्ग (बालकाण्ड) - गंगा पार (जहाँ बाद में पाटलिपुत्र हुआ)
- मिथिला, विशाल, उल्लेख (बुद्ध - दोनों एक वैशाली)
- रामायण - छोटे राज्य (बुद्ध - 16 महाजनपद - अंगुत्तर निकाय)

- वेबर 'यवन' (326) (दो स्थानों पर)
  खण्डन - विन्टरनित्स - प्रक्षिप्त

- मूर्ति पूजा नहीं (मूर्ति पूजा = अवतारवाद
  • फाह्यान - बुद्ध
  • पतञ्जलि (150 BCE) महाभाष्य - आयतन कार्य-मंदिर

अन्य रामायण ग्रन्थ

① योगवसिष्ठ
- वसिष्ठ द्वारा राम को दिये गए आध्यात्मिक उपदेश (वेदान्त - अद्वैत)
- 900 CE से पूर्व (कश्मीरी कवि अभिनन्द ने 5000 संक्षिप्त किया)
- 700 CE (डॉ. भीखनलाल आत्रेय)
- 6 प्रकरण, 27687, महारामायण भी

② अध्यात्म रामायण — सन्त (रामानन्द सम्प्रदाय) 13-1400 CE
- राम को ब्रह्म
- 7 काण्ड → अध्याय, 4000 श्लोक
- शिव पार्वती संवाद के अन्दर | ब्रह्माण्ड पुराण का भाग माना गया
- प्रभाव - रामचरितमानस + एकनाथ 'मराठी रामायण'

काव्य

③ अद्भुत रामायण
- 27 सर्ग , वाल्मीकि माने जाते हैं
- सीता जन्म , नारद शापेन लक्ष्मी → सीता , मन्दोदरी
- सीता ने 1000 सिर वाले रावण का वध काली स्वरूप द्वारा

④ आनन्द रामायण
- अध्यात्म रामायण के उद्धरण
- 1500 CE
- 122500 पद्य Ap.
- 9 काण्ड (सारयात्रायागविलासजन्मविवाह - राज्यमनोहरउपासना)

रामायण उपजीव्य

① महाकाव्य

- कृष्णमाचार्य 'इतिहास ग्रन्थ' (History of Classical Sanskrit Literature) में 54 महाकाव्यों (उपजीव्य) उल्लेख

भट्टि	रावणवध (भट्टिकाव्य)
अभिनन्द	रामचरित
क्षेमेन्द्र	रामायणमंजरी
माधवभट्ट	राघवपाण्डवीय
रघुनाथ	रामायण सार
कालिदास	रघुवंश (9-15)
कुमारदास	जानकीहरण (20 सर्ग)

② कथा

सोमदेव	कथासरित्सागर
हरिशंकर	गीतराघव
अनन्तभट्ट	रामकथा

काव्य

वेंकटध्वरी	यादवराघवीय
सुभट	दूतांगद
जयदेव	प्रसन्नराघव

चम्पू

भोज	रामायणचम्पू
विश्वनाथसिंह	रामचन्द्रचम्पू
अनन्ताचार्य	चम्पूराघव
दिवाकर	अमोघराघव

नाटक/रूपक

भास	प्रतिमा, अभिषेक
भवभूति	महावीरचरित, उत्तररामचरित
धीरनाग	कुन्दमाला
राजशेखर	बालरामायण
शक्तिभद्र	आश्चर्यचूडामणि
मुरारि	अनर्घराघव
दामोदर मिश्र	महानाटक/हनुमन्नाटक
जयदेव	प्रसन्नराघव
रामदेव	जानकीपरिणय
महादेव	अद्भुतदर्पण

तत्कालीन संस्कृति और व्यवस्था

(1) आश्रम + वर्ण व्यवस्था

- अपवाद - विश्वामित्र + त्रिजट ब्राह्मण - कृषि उपार्जन)

क्षत्रं ब्रह्ममुखं चासीद् वैश्याः क्षत्रं अनुव्रताः ।
शूद्राः स्वधर्मनिरताः त्रीन् वर्णानुपचारिणः । (बाल/6/19)

- सौहार्द, सौमनस्य, परस्पर

ततः समुत्थाय कुले कुले ते राजन्यवैश्याश्च वृषलाश्च विप्राः ।

ब्राह्मण - पठन पाठन यजन याजन दान प्रतिग्रह
- संयताश्च प्रतिग्रहे (बाल 6/13)
- नाविद्वान् ब्राह्मणः कश्चित्
- अवध्यो ब्राह्मणो अदण्ड्यः (अयो 5/32)

क्षत्रिय

- क्षत्रियैर्धार्यते चापो नार्तशब्दो भवेदिति (बाल 6/19)
- दानं दीक्षा च यज्ञेषु तनुत्यागो मृधेषु हि (अयो. 40/7)
- नाराजके जनपदे धनवन्तः सुरक्षिताः ।
शेरते विवृतद्वारा कृषि गोरक्ष जीविनः। (अयो 67/18)

वैश्य

- गोरक्षा, कृषि, व्यापार
- कच्चित् ये दयिताः सर्वे कृषि गोरक्षजीविनः ।
वार्तायां संश्रितास्तात लोकोऽयं सुख मेधते (अयो 100/47)

शूद्र

- चैल प्रक्षालक (धोबी) श्मश्रुसाधक (नाई), अनुलेपक स्नापक
- निम्न शूद्र - चाण्डाल
- सम्मान ० शबरी - तपोधने ! कच्चिते वर्धते तपः ।
- ,, ० शम्बूक मुनि (शूद्र)

~~आश्रम व्यवस्था~~

आश्रमसम्बन्धीवाद

- आश्रम समुच्चयवाद
- विकल्पवाद
- बन्धवाद (गृहस्थैव श्रेष्ठाः)

ब्रह्मचर्य

- ब्रह्म - वेद, अर्चनः
- पुस्तकीय न कि व्यावहारिक ज्ञान + इन्द्रिय संयम + शुचिता।
- वेदैश्च ब्रह्मचर्येश्च गुरुशिष्याय कर्षितः (अयो 2/84)
- . विद्यास्नातक
  . व्रतस्नातक (आयुर्वे
  . सर्वविद्याव्रतस्नातक

गृहस्थ

'गृहेस्थितं'।

- ऋषि ऋण - स्वाध्याय - ब्रह्मचर्य
  देव ऋण - यज्ञ - वानप्रस्थ, गृहस्थ
  पितृऋण - संतति - गृहस्थ
- राजसूय, वाजपेयी, अश्वमेध यज्ञ -

वानप्रस्थ

- आत्मोन्नति प्रयोजन

सन्यास

- कोई विशेष सन्दर्भ प्राप्त नहीं
- केवल रावण - छद्मवेश सीता अपहरण

(ii) पारिवारिक संरचना

- संयुक्त, भ्रातृप्रेम, मर्यादा, वचन
- शत्रुता नियम
  मरणान्तानि वैराणि। निवृत्तं नः प्रयोजनम्।
  क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव ॥

रामायण क्या ?

काव्य –

कृत्स्नं रामायणं काव्यमीदृशैः करवाण्यहम् । (बाल० 2/41)

यशस्करं काव्यमुदारदर्शनः (बाल 2/42)

इतिहास

- स तु मेधाविनौ दृष्ट्वा वेदेषु परिनिष्ठितौ ।
  वेदोपबृंहणार्थाय तावग्राहयत प्रभुः । (बाल 4/6)

शास्त्रीय

- रामो विग्रहवान् धर्मः
- रामो हि धर्मविभाव्यते
- शासनात् वापि मोक्षाद्वा स्तेनः पापात् प्रमुच्यते ।
  राजत्वशासन पापस्य तदवाप्नोति किल्बिषम् ॥

महाकाव्य

- सर्वप्रथम प्राप्य सर्गबद्ध रूप
  किं प्रमाणमिदं शास्त्रं का प्रतिष्ठा महात्मनः ।
  कर्ता काव्यस्य महतः क्व चासौ मुनिपुङ्गवः ॥ (उत्तर 94/23)

महाभारत

- विश्व साहित्य का सबसे बड़ा ग्रन्थ । लाख से कुछ अधिक शतसाहस्त्रीसंहिता

धर्मे अर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ॥(1/62/53)

- कृष्णद्वैपायन वेदव्यास रचयिता (पराशर के पुत्र, माता-सत्यवती)
  - यमुनाद्वीप में जन्मात् द्वैपायन
  - कृष्णवर्णात् कृष्ण • वेदविभक्तेः वेदव्यास
- चन्द्रवंश (कौरव, पाण्डव) - गयासुद्दीन अली वाजबीनी 'रज़्मनामा'

विकास

① जय 8800 (धर्म चर्चा) - [100पर्वों में था - सौति → 18 पर्व) आदि 2/84-85]
- जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा (महा 1/62/20)
- नारा. ई. (आदिपर्व - 65 से जय आरंभ वर्तमान)

② भारत (24000)

चतुर्विंशतिसाहस्त्रीं चक्रे भारतसंहिताम् ।
उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः (महा. आदि 1/102)

③ महाभारत (100000)
महत्त्वाद् भारवत्त्वाच्च महाभारतमुच्यते ।। 1-1-274)
शतसाहस्त्रीसंहिता

श्रवण विकास

- व्यास - वैशंपायन = जय
- वैशंपायन - जनमेजय = भारत
- सूत नैमिषारण्य में शौनादि को - महाभारत

ऋग्वेद - गाथा शब्द (8/32/1) कण्व द्वारा इन्द्ररचित गाथा उल्लेख

विषय वस्तु — बंबई संस्करणानुसार 2109 अध्याय

आदिपर्व	19 उपपर्व, 233 अध्याय 'अंशावतरण' (उपपर्व) से प्रारम्भ 9000 Ap. पद्य	शकुन्तलोपाख्यान लाक्षागृह, जनमेजय नागयज्ञ
सभापर्व	10 उपपर्व, 81 अध्याय	दिग्विजय, जरासंध वध, राजसूय
वनपर्व	22 उपपर्व 315 अध्याय	इन्द्र कवच, नल, रामाख्यान जयद्रथ द्वारा द्रौपदी हरण
विराटपर्व	5, 82, 2700	अज्ञातवास विराटपुत्री उत्तरा - अभिमन्यु
उद्योग	10, 196, 7100	युद्ध तैयारी, शिखण्डी जन्म अम्बोपाख्यान
भीष्म	5, 6100 पद्य, 122 अध्याय	गीता
द्रोण	8, 202, 10000	अभिमन्यु, घटोत्कच, द्रोण, संशप्तक वध
कर्ण	96, 5500, उपपर्व नहीं	अभिमन्यु, ~~कर्ण वध~~
शल्य	2 (ह्रद प्रवेश + गदापर्व) 65, 3700	
सौप्तिक	ऐषीक उपपर्व, 18, 810	द्रोपदी पुत्र हत्या कृपाचार्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा
स्त्रीपर्व	(उपपर्व) जल प्रदान, स्त्रीविलाप, श्राद्ध 27, 820	कर्ण का श्राद्ध (कुन्ती गांधारी → कृष्ण श्राप (वंश)
शांतिपर्व	राजधर्मानुशासन, आपद्धर्म, मोक्ष धर्म उपपर्व, 365, 14725	सबसे बड़ा पर्व हंसगीता (299) पराशरगीता (290-98)
अनुशासन	2, 168, 10000 Ap.	दानधर्म (166) भीष्मस्वर्गारोहण [शिव सहस्रनाम + विष्णुसहस्रनाम 17वें अध्याय में]
आश्रमवासिक	3, 39, 1100	धृत, गांधा, कुन्ती, विदुर वनगमन ↳ युधिष्ठिर पराम्र्श (15 वर्ष)
मौसल	8, 304	यादववंश नष्ट, यदुवंश विनाश मुसल के कारण + मुसल के टुकड़े के बाण से मृत्यु

महाप्रस्थानिक	3,114	सबसे छोटा, युधिष्ठिर सदेह शरीर-स्वर्ग पाण्डव हिमालय यात्रा
स्वर्गारोहण	5,220	कृष्ण, अर्जुन आदि के दिव्यलोक में मिलना अंतिम अध्याय 'महात्म्य' भारत सावित्री (महाभारत का सार)
(14) आश्वमेधिक	अनुगीता (दर्शनशास्त्र) ब्राह्मण गीता	34 पर्व वैष्णवधर्म

संस्करण

① कलकत्ता

- 1834-39 5 भागों में बिना टीका प्रकाशित हुआ था
- इसमें हरिवंश पर्व भी है
- दूसरा 1875 अर्जुनमिश्र + नीलकंठ टीका के साथ प्रकाशित

② बंबई

- 1862 नीलकंठी टीका के साथ प्रकाशित
- (गीता प्रेस गोरखपुर, हिन्दी) प्रकाशित (अलग से हरिवंशपर्व)
- इसमें हरिवंश पर्व नहीं

③ मद्रास

- तेलगु लिपि में 1855-60
- हरिवंशपर्व + नीलकंठ टीका के उद्धरण सह

आलोचनात्मक
- पुणे महाराष्ट्र, K Bhandarkar Oriental Research Institute (BORI), 24 जिल्द,
- 1923 में विराटपर्व से प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। सम्पादक - उतगीकर

हरिवंशपर्व

- आदिपर्व के द्वितीय अध्याय (100 पर्व में सम्मिलित)
- खिलपर्व (~~प्रक्षिप्त~~ / परिशिष्ट) स्वतंत्र ग्रन्थ
- 16374, वैशम्पायन जनमेजयं उच्चरितवान्।
- महात्म्य पुत्रप्राप्ति। इसका अंतिम पर्व भविष्यपर्व (प्रक्षिप्त)
- 2 या 3 - [हरिवंश, विष्णु (बड़ा), भविष्य] पर्व
  - हरिवंश: • कृष्णवंश • वृष्णि अंधक • पृथु आख्यान
  - विष्णु: • कृष्ण की विविध लीला, प्रद्युम्न अनिरुद्ध विवाह
  - भविष्य: - विष्णु अवतार वर्णन - शिव विष्णु उपासना, कृष्ण द्वारा शिवभक्त पराजय (हंस + डिंभक)

दिव्यालोक में पुष्टि कृष्णद्वैपायन रचित, शांतरसयुक्त

महाभारत का मुख्य रस

- आनन्दवर्धन 4th उद्योग
- शान्तरस + मोक्षपुरुषार्थ प्रधान
- व्यञ्जना द्वारा प्रकट

महाभारत के विशिष्ट ग्रन्थात्मक अंश

① शकुन्तलोपाख्यान
- आदिपर्व (68-74)
- दुष्यन्त ने आकाशवाणी के बाद स्वीकार किया।

② नलोपाख्यान
- वन पर्व (53-79)
- इसे उपपर्व की कोटि दी गई है
- नैषधीय चरित (हर्ष)
  (हंस को दमयन्ती के पास भेजना,)
  (इन्द्र, वरुण, अग्नि, यम) रूप नल
  (कलि का प्रकरण...)

③ रामोपाख्यान
- वनपर्व (274-91)
- मार्कण्डेय मुनि द्वारा युधिष्ठिर को -
- उत्तरकाण्ड की सीतानिर्वासन की कथा नहीं

④ सावित्र्युपाख्यान
- वनपर्व (292-99)
- मार्कण्डेय द्वारा सुनाया गया।

⑤ भगवद्गीता
- भीष्मपर्व (25-42), 700 पद्य, 18 अध्याय
- 'श्रीमद्भगवद्गीता प्रारम्भ' नामक उपपर्व
  - शंकर, रामानुज, मधुसूदन, सरस्वती के द्वारा व्याख्याएँ।
  - मराठी संत ज्ञानेश्वर
  - तिलक, अरविन्द, गांधी

महाभारत पर टीकाएँ

- 26 टीकाएँ लिखे जाने का बोध है
- कुछ सम्पूर्ण महाभारत + पर्व विशेष पर
- विराटपर्व 8 टीका सह - 1915] गुजराती प्रिंटिंग प्रेस
  उद्योगपर्व 5 " - 1920

देवस्वामी / देवबोध	1050 से पूर्व	ज्ञानदीपिका (पूर्ण + पर्व खण्ड में)
वैशंपायन	1050 "	मोक्षधर्म (शांतिपर्व)
विमलबोध	1050 AD.	दुर्गम प्रयोग (महाभारत पर) / विषमश्लोकी / दुर्घटार्थप्रकाशिनी
नारायणसर्वज्ञ	1250	भारतार्थप्रकाश टीका
चतुर्भुजमिश्र	1300	भारतोपाय प्रकाश
आनन्दपूर्णविद्यासागर	1350	पाँच पर्व पर पर उपलब्ध
अर्जुनमिश्र	1350-1400	अर्थदीपिका
नारायण + वादिराज	1600	लक्षाभरण
नीलकंठ	1650	भारतभावदीप

महाभारत का रचनाकाल

① 11वीं, क्षेमेन्द्र भारत मंजरी

② 8वीं, कुमारिलभट्ट ने 10 पर्वों का उल्लेख (12+14भी)
शंकराचार्य ने 'महाभारत को शूद्रों की स्मृति कहा (अधिकार नहीं' के अध्ययन)

③ 6वीं सुबन्धु + 7 बाणभट्ट आख्यानों का उल्लेख (हरिवंशपर्व से परिचितथे)

④ 5वीं, 445, गुप्तकालीन अभिलेख में — 'शतसाहस्री संहिता' उल्लेख

⑤ हर्तेल - 500 (शांति पर्व - ईरियाई 3 अध्याय - अध्ययन के पश्चात)
- चीनी तुर्किस्तान + चीनी साहित्य -

⑥ 600, कम्बोज (कम्पुचिया) {मंदिर के लिये रामायण महाभारत की प्रतियाँ उपहारस्वरूप दिये जाने का उल्लेख)

⑦ डियो क्रिसोस्टोन (यूनानी) 50 CE दक्षिणी पाण्ड्य प्रदेश आया था।
- भारत में 100000 श्लोकों का इलियड प्रचलित था
- विन्टरनित्स के अनुसार - महाभारत = इलियड

⑧ (i) आश्वलायनगृह्यसूत्र (3/4/4) [500 BCE] - मैक्डोनल
- भारत, महाभारत को भिन्न भिन्न दिखाया गया

(ii) बौधायनगृह्यसूत्र में • विष्णुसहस्रनाम (अनुशासनपर्व का अंश) [400 BCE]
• भगवतगीता
• महाभारत चर्चा (2/2/26)

(iii) महाभारत में विष्णु अवतार में बुद्ध नहीं
• हीनयान (100 CE) के बाद

(iv) भारत — बालचरित (हरिवंशपर्व)
- पाश्चात्य - 200 CE
गणपतिशास्त्री + AD पुसलकर - 300 BCE

महाभारत की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था

वर्ण व्यवस्था

शमोदमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् ।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥
कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यं कर्म स्वभावजम् ।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥

उदाहरण

- इन्द्रो वै ब्रह्मणः पुत्रः क्षत्रियः कर्मणाभवत्
- क्षत्रियः शतवर्षी च दशवर्षी च द्विजोत्तमः ।
- सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत्
- चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः (गीता 4/13)
- कारणं हि द्विजत्वे च वृत्तमेव न तु संशयः (वन 2/180)
- शूद्रोऽप्यागमसम्पन्नो द्विजो भवति संस्कृतः ।
  विदुर (दासीपुत्र) ब्राह्मणवत पूज्य
- अदाता ब्राह्मणोऽसाधुर्निस्तेजः क्षत्रियोऽधमः ।
  अदक्षो निन्द्यते वैश्यः शूद्रश्च प्रतिकूलवान् ॥

आश्रम व्यवस्था

- चतुष्पदी हि निःश्रेणी ब्रह्मण्येषा प्रतिष्ठिता ।
  एतामारुह्य निःश्रेणीं ब्रह्मलोके महीयते ।
- 'कच' शुक्राचार्य संवाद नहीं

  सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतो सुखम् ।
  सुखार्थी वा त्यजेत् विद्या विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ॥ (उद्योग 40/6)

उञ्छवृत्ति गृहस्थो यः स्वधर्माचरणे रतः ।
त्यक्तकामसुखारम्भः स्वर्गस्तस्य न दुर्लभः ॥ (शान्ति 191/18)

- असकाल्य पुत्रान्कालेन यौवनस्थान्विवर्ज्य च ।
  समर्थान् जीवने जाता मुक्तश्चरय यथासुखम् ॥
- अकालकृष्टं व्रीहियवं नीवारं भक्षण
- लघ्वाशी नियताहारः सकृदन्ननिवेशितः ।
  अर्थसार्वभूतानां स्तावद् भिक्षुलक्षणम् ॥ (शांति 245/6)
- या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
- कुटीचक, बहूदक, हंस, परमहंस

व्यंग्य – यदि संन्यासतः सिद्धिं राजा कश्चिदवाप्नुयात् ।
पर्वताश्च द्रुमाश्चैव क्षिप्रं सिद्धिमवाप्नुयुः ॥

- धर्मो राजन् गुणः श्रेष्ठो मध्यमो ह्यर्थ उच्यते (शांति 167/8)

पुराण-साहित्य

उल्लेख

① अथर्ववेद – 'ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः॥' (11/7/24)

② शतपथब्राह्मण में पुराण को वेद कहा गया (14/3/3/13)

③ छान्दोग्योपनिषद् (7/1/2) + बृहदारण्यकोपनिषद् (2/4/10)
'इतिहास पुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम्'

④ महाभारत
इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।

निर्वचन

① पुराणमाख्यानं पुराणम्।
② यस्मात्पुरा ह्यनति। (वायुपुराण 1/203)
③ 'जगतः प्रागवस्थामनुक्रम्य सर्गप्रतिपादकं वाक्यजातं पुराणम्।' [सायण (ऐतरेयब्राह्मण)]
④ पुरार्थेषु आनयतीति पुराणम्। (पद्मपुराण)
⑤ पुरा परम्परां वक्ति पुराणं तेन वै स्मृतम् [वायु 1/253]
⑥ मधुसूदन सरस्वती – "विश्वसृष्टि का इतिहास" ही पुराण
⑦ पुरा (अपि) नवं भवति यास्क।

पुराण पञ्चलक्षण

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥ (विष्णु 3/6/24)
★ (अमरकोश आदि)

सर्ग – विश्व सृष्टि, प्रतिसर्ग – प्रलय, सृष्टिनिर्माण, वंश – देवता/ऋषि
मन्वन्तर – मनु काल वर्णन, वंशानुचरित – सूर्य, चंद्र राजा

वंशानुचरित (मत्स्य, वायु, ब्रह्माण्ड, भविष्य, विष्णु, भागवत, गरुड़)

मौर्यवंश – विष्णुपुराण

आंध्रवंश – मत्स्यपुराण

चन्द्रगुप्त I – वायुपुराण

पुराणों की संख्या

① महापुराण

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक्-पृथक् ॥

म – मत्स्य मार्कण्डेय
भ – भविष्य भागवत
ब – ब्रह्म, ब्रह्माण्ड ब्रह्मवैवर्त
व – विष्णु वामन वराह वायु
अ – अग्नि, नारद, पद्म, लिंग, गरुड़, कूर्म, स्कन्द

सात्विक (विष्णु)	- विष्णु, नारद, भागवत, गरुड़, पद्म वराह
तामस (शैव)	- मत्स्य कूर्म लिंग, शिव, अग्नि, स्कन्द
राजस (ब्राह्म)	- ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, ब्रह्म, वामन भविष्य

② उपपुराण 18

सनत्कुमार नारसिंह स्कान्द (शिव) – शिवधर्म – आश्चर्य नारदीय
कापिल औशनस वारुण   कालिका माहेश्वर
साम्ब सौर पाराशर   मारीच भार्गव नन्द

अन्य – चण्डी, मानव, गणेश, नन्द, विष्णुधर्मोत्तर....।

पुराण परिचय

ब्रह्मपुराण	245, 13787	ब्रह्मा ने आदिपुराण, व्यास ने लिखा + कोणार्क (1250) सौरपुराण
पद्म (5-15 CE)	641, 48000	लोमहर्षणपुत्र उग्रश्रवा द्वारा कहा, 5 खण्ड सृष्टिभूमिस्वर्गपातालउत्तर
विष्णुपुराण	126, 6000 (वै)	रामानुज → प्रमाणग्रन्थ
वायुपुराण	112, 11000 (शै)	मगध में प्रचलित (गया महात्म्य-श्राद्ध) 4 भाग (पाद) - प्रक्रिया-उपोद्घात-अनुषङ्ग-उपसंहार उपपुराण - शिवपुराण 7 खण्ड 24000
भागवत (6-10)	12, 335, 18000	10वाँ स्कन्द सबसे बड़ा (90 अध्याय) बालकृष्ण कृष्णलीला... [देवीभागवत - 12 स्कन्ध - 18000, 318 अध्याय (9-11)]
नारद (बृहन्नारदीय)	2 खण्ड - पूर्व 125, उत्तर 82 (18000)	मोक्ष-धर्म, नक्षत्र, व्याकरण, पंचतन्त्र रुक्माङ्गद राजा (एकादशीव्रत-पुण्य) 40 अध्याय युक्त
मार्कण्डेय	प्राचीनतम वैदिक (300 CE पूर्व) 138, 7000	दुर्गामाहात्म्य (81-93) दुर्गासप्तशती आरम्भ महाभारत की कथा द्रौपदी के 4 पुत्रों आदि
अग्निपुराण	383, 11500	अग्नि → वसिष्ठ (उपदेश) विष्णु अवतार विश्वकोशात्मकता | रामोपाख्यान + महाभारतोपाख्यान
भविष्य	2 खण्ड - 41+171 15000	- आफ्रेख्त ने 1903 ऐतिहासिक प्रपञ्च' कहा आपस्तम्ब धर्मसूत्र में उल्लेख (500, 1200 (विकास) अंतिम) (ब्रह्म विष्णु शिव सूर्य प्रतिसर्ग पर्व) अंतिम 1 BCE पूर्व
ब्रह्मवैवर्त	18000	ब्रह्म, प्रकृति, गणेश, कृष्ण खण्ड बड़ा
लिंगपुराण	163, 11000	शिव (28 अवतार) + योग (व्यासभाष्य आधार पर 600 CE के बाद)
वराह	217, 24000	शिव, दुर्गा, गणेश, विष्णु कथाएँ (हाजरा 800-1000) द्वादशीव्रत का माहात्म्य (मथुरा वर्णन) मूर्तिपूजा
स्कन्द	81000 [महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री नेपाल - हस्तलिपि 700 CE]	संहिता + खण्ड (शिवपूजा वैदिक तान्त्रिक विधि) ↳ (सनत्कुमार सूत शंकर वैष्णव, ब्राह्म सौर) → सभी तीर्थ केदार, बद्री, यमु., गंगा - सूतसंहिता पर माधवाचार्य 'तात्पर्यदीपिका' टीका - ब्रह्मगीता (12) सूतगीता (8)

वामन पुराण	95, 10000 (इलाहा - 9-10 CE)	मूलरूप में नहीं, मत्स्य में वर्णित 4 संहिता - माहेश्वरी, भागवती, सौरी, माहेश्वरी
कूर्म	6000 600 CE [9-10]	अतः ब्राह्मी, भागवती, सौरी वैष्णवी (संहिताएँ) प्राप्त - ब्राह्मी ही है • इन्द्रद्युम्न कथा • विष्णु (कूर्म) उपदेश किया शक्ति के 8000 नाम स्तुति • 'पाञ्चरात्र' मत का प्रतिपादन
मत्स्य	291, 14000	प्राचीन, मत्स्य मनु संवाद / जैन + बौद्ध + नास्तिक व्रत, प्रयाग, काशी, नर्मदा, शल्कुण विचार देवप्रतिमा मन्दिर निर्माण, दान (माहात्म्य) नन्द + कुछ आख्यान
गरुड़	229+35 (18000) (9 CE इलाहा)	विश्वकोशात्मक / 18 उपपुराण वर्णन 107 अध्याय 'पराशरस्मृतिसार'
ब्रह्माण्ड	109; 12000 (400-600 CE)	• अध्यात्मरामायण को ब्रह्माण्ड पु. का अंश माना जाता है (पृथक ही है) • नासिकेतोपाख्यान — पृथक भाग कहा गया है • अन्त स्तोत्र माहात्म्य

पुराणों का रचना काल

- व्यास - लोमहर्षण को ज्ञान
- 600 CE तक के राजाओं का ही वर्णन
- अथर्ववेद, महाभारत, धर्मसूत्रों में उल्लेख - 600 BCE

1. तिलक - 200 CE
2. पार्जिटर - 100 CE
3. ~~ईसवी~~ - अल बिरूनी - भारत वर्ष का इतिहास (तारीख-उल-हिन्द) 18-पुराण सूचना

आदि मत्स्य कूर्म वराह, नरसिंह, वामन, वायु, नन्द (महादेव के सेवक) स्कन्द, आदित्य, सोम, साम्ब ब्रह्माण्ड, मार्कण्डेय, तार्क्ष्य (गरुड़) विष्णु ब्रह्म भविष्य

- बाणभट्ट – (600-650) गाँव में वायुपुराण वाचन
  - मार्कण्डेय के देवीमाहात्म्य पर 'चण्डीशतक' की रचना की
- भवभूति मालतीमाधव

डॉ. हाजरा

हरिवंश – 400 CE

विष्णुपुराण	3-400 CE
ब्रह्माण्ड / मार्कण्डेय	3-500 CE
वायु	500 CE
भागवत	600 CE
कूर्म	700 CE
अग्नि	800 CE
नारदीय	1000 CE
स्कन्द	800 CE
गरुड़ + ब्रह्म	1000 CE
ब्रह्मवैवर्त	700 CE (वर्तमान रूप 1600 CE)

| डॉ. सुशील कु. आनन्द पण्डी ‡ अग्निपुराण के लिए PV काणे 700 CE तथा काव्यशास्त्रीय अंश 900 CE

पुराण का महत्व

धार्मिक

- तत्कालीन संस्कृति में देवता (वैदिक प्रचलित थे)
  - मुख्य ब्रह्मा, विष्णु, महेश
- वैदिक कर्मकांड / यज्ञ की परंपरा भक्ति में परिवर्तित हो गई
  भक्ति देव – विष्णु उदय।
  उत्पत्ति + पालन + संहार कर्ता 'त्रिदेव'
- मूर्तिपूजा, सर्वेश्वरवाद, एकेश्वरवाद, ईश्वरीयभक्ति।
- वेदार्थादधिकं मन्ये पुराणार्थं वरानने।
  वेदाः प्रतिष्ठिताः सर्वे पुराणे नात्र संशयः॥
  (पुराण वेदार्थ से श्रेष्ठ)
- वास्तुकला को बढ़ावा मिला
  - कोणार्क सूर्यमंदिर
  - दुर्लभ रोमांचित मंदिरों का विकास

ऐतिहासिक

- (शुंग) हत्वा तेषां यशः कृत्स्नं शिशुनागो भविष्यति। (बिम्बिसार अजातशत्रु – नंद)
  वाराणस्यां सुतं स्थाप्य सा यास्यति गिरिव्रजम्॥
- (मौर्य) दृश्यते नव भूपा ये भोक्ष्यते च वसुन्धराम्।
  सप्तत्रिंशशतं पूर्णं तेभ्यः शुंगान् गमिष्यति॥
- शुंग, आंध्र, सातवाहन, गुप्त का भी उल्लेख

सामाजिक

- आदर्श समाज – आचार संहिताएँ
- वर्णव्यवस्था कर्मणा प्रतीत होती है
- 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'
  अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
  परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

- कर्मनिष्ठा – ब्राह्मण किसान आदि की जी दे निरन्तर
- पर्यावरण

  दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रदः।

  दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः॥ भविष्य।

- देशप्रेम

  – 'रत्नैर्धाम्नैव कृतानां प्रियं भारतभूतगाम'

  – 'गायन्ति देवाः किल गीतकानि

  धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे' (विष्णु 2/3/24)

- ज्ञान + दर्शन + साहित्य + ज्योतिष

History of Sanskrit Literature

1. महाकाव्य
2. गीतिकाव्य
3. स्तोत्रकाव्य
4. गद्यसाहित्य
5. चम्पू साहित्य

PART III

महाकाव्य

कवेः कर्म काव्यम् (कवि + ष्यत्)
कवि 'कु' 'कुङ्' कवते - ध्वनि करना, विवरण देना (आत्मने पद)

① पाणिनि - 'पाताल विजय' / जाम्बवती विजय

- रुद्रट नमि टीका (काव्यालङ्कार)
- क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक [सुबन्धु, कालिदास, दाक्षीपुत्र, हरिचन्द्र, आर्यशूर, भारवि, भवभूति]
  └ श्रीधरदास (1205)
- भोज - सरस्वतीकण्ठाभरण (व्याकरण)
- विरूपाक्ष कोश मत,
- जल्हण - सूक्तिमुक्तावली (पद्य संकलित)

② वररुचि - स्वर्गारोहण

- कृष्णचरित मत
- वाररुचं काव्यम् (पतञ्जलि)
- सदुक्तिकर्णामृत + सुभाषितावली (15वीं)] संकलित
- शार्ङ्गधरपद्धति (1363)

महाकाव्य शैली

① सुकुमार - अनावश्यक विस्तार नहीं (जनसामान्य)
- रस + ध्वनि
- प्रसादगुण / माधुर्य

② विचित्रमार्ग
- पाण्डित्यपूर्ण
- अलङ्करण अधिक
- चित्रकाव्य
- ओज
- भारवि, माघ

उत्तर सीमा

कालिदास

- राजशेखर ने श्रृङ्गार रस की विवेचना करने वाले 3 कालि० उल्लेख
- बल्लालसेनकृत भोजप्रबन्ध (16) धारानरेश भोज की सभा में –
- कुमारदास (500) सिंहली के मित्र (किंवदन्ती)

महाकाव्य – कुमारसम्भव, रघुवंश
गीतिकाव्य – ऋतुसंहार, मेघदूत
नाटक – मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञानशाकुन्तल

शैव सम्प्रदायी

निवासस्थल

- काशी (विद्योत्तमा की स्वयंवर दन्तकथा)
- बंगाल ('दास' उपाधि के कारण)
- विदर्भ (पीटर्सन का मत)
- विदिशा (राजधानी कहने)
- अयोध्या (रघु. में आकर्षण दिखाने)
- मिथिला (उच्चैठ ग्राम में दुर्गाभक्ति के कारण)
- कश्मीर (प्रो. लक्ष्मीधर कल्ला- मत)
- गढ़वाल (मन्दाकिनी के तट पर) डा. अच्युतानन्द घिल्डियाल
- उज्जयिनी

कालिदास का काल

पूर्व सीमा

- मालविकाग्निमित्रम् – शुंगवंशीय राजा अग्निमित्र (पुष्यपुत्र)
- ई.पू. 185 शुंग प्रारम्भ

उत्तर सीमा

- बाण - हर्षचरित - कालिदास प्रशस्ति (606-48)
- ऐहोल - रविकीर्ति (जैनकवि)

येनायोजि नवेऽश्मस्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः॥
- 634 (637)

- 473 मन्दसोर अभिलेख (दशपुर पट्टवाय श्रेणी - सूर्यमंदिर प्रशस्ति) कालि. प्रभाव है

कालिदास के महाकाव्य

लघुत्रयी में - कुमारसंभव, रघुवंश, (मेघदूत काव्य)

बृहत्त्रयी - किरातार्जुनीय, शिशुपालवध, नैषधीयचरित

(1) कुमारसम्भव

- 17 सर्ग, 8 ही कालि. रचित - माना
- 11 वें सर्ग - कार्तिकेय जन्म
- प्रथम सर्ग - 15 पद्य हिमालय वर्णन
- पञ्चम ऋतु
- सप्तम में विवाह

छन्द - 1+3+7 = उपजाति
4 = वियोगनी छन्द (रतिविलाप

रस अंगी - श्रृंगार

सूक्ति - 'विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः।'
'क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसां सतीव'
'विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्'

कुमारसंभव

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् (5/33)

प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः (6/85)

टीकाएँ

- मल्लिनाथकृत संजीवनी टीका (1-7 सर्ग) ।8वाँ
- सीतारामकृत संजीवनी (1-17 सर्ग)
- नारायण पण्डित - 'विवरण'

② रघुवंश

- 19, 1569 पद्य
- 30 राजाओं का वर्णन

1 - राजा का आदर्श
2 - नन्दिनी सेवा (दिलीप)
4 - रघु दिग्विजय
6 - इन्दुमती स्वयंवर
7 - इन्दुविवाह, अजविलाप, वर्णन (गृहिणी सचिवः सखी मिथः)
9 - द्रुतविलम्बित छंद + यमक अलंकार
10 - पुत्रेष्टि यज्ञ
13 - रामयात्रा वर्णन, समुद्र वर्णन, संगम वर्णन
14 - सीता परित्याग, अभिषेक स्नेह
17 - कुश - कुमुद्वती - रानी होने का उल्लेख
18 - अतिथि आदि 22 राजाओं - (कुशपुत्र अतिथि)
19 - राजा सुदर्शन पुत्र अग्निवर्ण (मंत्रियों ने जला दिया था)

रस - वीर अंगी

सूक्तियाँ - सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः । (2/58)

भिन्नरुचिर्हि लोकः (6/30)

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते (11/1)

मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः ।

अश्वघोष

- कुषाणकालीन
- साकेत (अयोध्या) निवासी, कनिष्क सम्पर्क – पेशावर गए
- भदन्त / महाकवि / महावादी (शास्त्रार्थी) / ब्राह्मण थे
- शैव → बौद्ध
- चतुर्थ बौद्ध संगीति I BCE / कुंडलवन (कश्मीर) • वसुमित्र (अध्यक्ष) / बौद्ध विभाजन
  • अश्वघोष (उपाध्यक्ष) / हीन, महा

रचनाएँ

① बुद्धचरित (महाकाव्य)
- 28 सर्ग (14/32 सी आगे नहीं) संस्कृत (शांत)
- अधूरा प्राप्त, तिब्बती + चीनी में अनुवाद सुरक्षित
- डॉ. जॉनस्टन ने अंग्रेजी संपादन + अनुवाद + प्रकाशन | नेपाल दरबार पुस्तकालय
  बंग लिपि – 1300 CE
- पं. अमृतानन्द नेपाली 4 सर्ग जोड़े
- • चीनी अनुवाद – 'फो शो हिंग त्सन किंग' (414–421)
- तिब्बती अनुवाद – क्षितीन्द्रभद्र / महीन्द्रभद्र + मतिराज 7/8 CE

② सौन्दरनन्द
- • पूर्णतः संस्कृत भाषा,
- • 18 सर्ग (शांत)
- • बुद्ध के सौतेले भाई नन्द उसकी पत्नी सुन्दरी
  सुन्दरी पर आसक्त सौन्दर (विशेषता)
- • 1910 संस्करण हरप्रसादशास्त्री (12वीं नेवारी लिपि ताड़पत्र 35 पन्ने)
- • 1928 जॉनस्टन संस्करण

अन्य ग्रन्थ
- 2 खंडित नाटक
- शारिपुत्रप्रकरण (रूपक) अंशतः प्राप्त।
- राष्ट्रपालनाटक (चीनी अनुवाद मात्र मिला)
- संस्कृत ⇒ वज्रसूची (जाति प्रथा पर व्यंग्य)
  – 973–81 चीनी अनुवाद

* गण्डी स्तोत्रकथा (सुन्दर गेय काव्य, बुद्ध + संघ स्तुति)
* नैरात्म्यपरिपृच्छा (महायान तत्त्वमीमांसा)
* त्रिदण्डमाला (आपण कला राहुल सांकृत्यायन को तिब्बत में मिला)
* शतपञ्चाशतक स्तोत्र (वस्तुतः मातृचेट की रचना, तिब्बती में उपलब्ध)

अन्य अश्वघोष ग्रन्थ (संदिग्ध) (16)

① महायान - श्रद्धोत्पाद शास्त्र (चीन + जापान लोकप्रिय)
② सूत्रालंकारशास्त्र (चीनी) - कुमारजीव - 344-413 CE
चीनी प्रकाशित

[बुद्धघोष]

(5-6 CE)

* पद्मचूडामणि
  - 10 सर्ग, 641 पद्य
  - नायक बुद्ध
  - शांत रस

[हयग्रीववध]

(400 CE Ap.)

* भर्तृमेंठ (लुप्त)
* स्मृत राजशेखर, क्षेमेन्द्र (सुवृत्ततिलक), सोमेश्वर, पद्मगुप्तपरिमल,
  सोड्ढल (उदयसुन्दरी कथा), रुय्यक (व्यक्तिविवेक की टीका), शिवस्वामी, मंख,

भारवि

- अवन्तिसुन्दरी कथा (दण्डी) कुछ अंश प्राप्त
  - दण्डी के प्रपितामह
  - वास्तविक नाम दामोदर

समय

- (ऐहोल - 634)
- अष्टाध्यायी की वृत्ति 'काशिका' जयादित्य ने पद्य उद्धृत (किरा०का०)

किरातार्जुनीय

टीकाएँ - (35)
① प्राचीन दुर्विनीत टीका (राजा)
② मल्लिनाथ - घण्टापथ
वल्लभदेव, विद्यामाधव, देवराजभट्ट, क्षितिपालमल्ल, प्रकाशवर्ष, कृष्णकवि, रविकीर्ति, चित्रभानु, एकनाथ | अज्ञात → शब्दार्थदीपिका, प्रसन्न साहित्यचन्द्रिका

- एकमात्र उपलब्ध कृति
- किरातः च अर्जुनश्च = किरातार्जुनौ, तवाधिकृत्य कृतं काव्यं 'किरातार्जुनीयम्' (छन्द्वाच्छ! → छ → ईय)
  15 - चित्रकाव्य, 16 - शिव अर्जुन युद्ध
- वीर अंगी
- क्षेमेन्द्र ने वंशस्थ की प्रशंसा

कुमारदास : जानकीहरण | (650 - 700)

- भोज (1010 - 1055) + हेमचन्द्र (1089 - 1173) उल्लेख किया
- अमरकोश के टीकाकार पद्योद्धृत
  - पदचंद्रिकाकार रायमुकुटमणि (1430)
  - टीकासर्वस्वकार सर्वानन्द (1159)
  - कामधेनुकार सुभूतिचन्द्र (1010 - 1062)

+ शार्ङ्गधरपद्धति (1363), सूक्तिमुक्तावली (1258)
  सदुक्तिकर्णामृत (1205)

- सिंहली भाषा में अनुवाद सुरक्षित
- राजशेखर ने कुमारदास + मेधारुद्र को जन्मान्ध बताया

• 20 सर्ग

• हरिदास शास्त्री - 1893 + नन्दरगीकर 1907 (10 सर्ग प्रकाशित)

• 16 वें सर्ग सम्पादन डॉ० बर्नेट ने लन्दन से किया

जानकीहरण / भट्टि: रावणवध

• व्याकरण + अलङ्कार शास्त्र से परिपूर्ण
• (550 - 610)
• 22 सर्ग, 1624 पद्य (रामजन्म - राज्याभिषेक)
[प्रकीर्ण + अधिकार + प्रसन्न + तिङन्त] काण्ड
9 सर्ग में लिट् लुङ् लृट्...

न तज्जलं यन्न सुचारुपङ्कजं
न पङ्कजं तद् यदलीन- षट्पदम् ।
न षट्पदोऽसौ न जुगुञ्ज यः कलं
न गुञ्जितं तन्न जहार यन्मनः ॥

टीकाएँ -
10-13 ई०
जयमंगल, कुमुदानन्द, केशवशर्मा, अनिरुद्ध, कंदर्पशर्मा
14-18 ई०
नारायणविद्याविनोद, पुंडरीकाक्ष, भरतमल्लिक, भरतसेन, रामचंद्र, मल्लिनाथ, शंकर, श्रीनाथ etc. विद्याविनोद, श्रीधर

माघ

[675 - 700]

• स्ववंश वर्णन (5 पद्य)
• बल्लालसेनकृत भोज प्रबन्ध (16), मेरुतुंग - प्रबन्धचिंतामणि (1360)
प्रभाचन्द्रकृत प्रभावकचरित (1200) जैन ग्रंथ 'पुरातन प्रबन्धसंग्रह'
किताब प्रकाशित
• पिता - सुप्रभदेव
• निवास - श्रीमाल / भिन्नमाल नगर (माउंट आबू - 40 मील)
दुर्गनगरसंगवनि → गुर्जरवंश (6-9)

शिशुपालवध

- 20 सर्ग, 1645 पद्य + कविवंश = 1650
- 34 प्रक्षिप्त (15 वें सर्ग में)
• 19 चित्रालंकार • 20 - वध
- स्रोत - सभापर्व (35-43) + भागवत 10 स्कन्ध
• वीर रस अंगी
• 4 में 22 तथा 6 में 11 प्रकार के छंद प्रयोग
• प्रिय छंद अनुष्टुप

उद्धरण

- ~~अभिनवगुप्त~~ वामन (800) - अतिशयोक्ति के उदाहरण में (4/3/10) उभौ यदि व्योम्नि पृथक् प्रवाहा (3/8)
- नृपतुंग - कविराजमार्ग (अमोघवर्ष आश्रित 814) कन्नड़ भाषा
- आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक
  - रम्या इति प्राप्तवतीः पताकाः (3/53)
  - त्रासाकुलः परिपतन् (5/26)
- सोमदेव (960) यशस्तिलकचम्पू में माघ का उल्लेख

टीकाएँ

मल्लिनाथ - सर्वंकषा

वल्लभदेव - संदेहविषौषधि

ललितकीर्ति - ललितप्रबोधदीपिका (15वीं)

अतिरिक्त - अनंतदेवयानि, चारित्रवर्धन, कविवल्लभचक्रवर्ती, चंद्रशेखर, दिनकर, देवराज, बृहस्पति, भरतसेन, भगीरथ, भरतसेन, महेश्वर, पंचानन, लक्ष्मीनाथ, रंगदेव। + सरस्वतीतीर्थ की अपूर्ण टीका उपलब्ध + मुकुंद + विष्णुदासात्मज अपूर्ण टीका

① शिवस्वामी : कप्फिणाभ्युदय (800-850)
- 20 सर्ग, धर्मपरिवर्तन से समाप्त (सर्ग)
- कश्मीर नरेश अवंति वर्मा काल
- शैव | अवदान शतक में - कप्फिण राजा - उद्धृत
- मम्मट - 'उत्तालस्य कालकरवाल महाम्बुवाहम्' उद्धृत

② रत्नाकर (800-850) : हरविजय (अंधकासुर - शिव)

- 50 सर्ग
- शांत
- 11 सर्ग युद्ध वर्णन में नगर 37-49
- 43/46 सर्ग चित्रकाव्य

→ अवन्ति + चिप्पट जयापीड | मित्र - अवन्तिस्वामी
- बालबृहस्पति उपाधि (जयापीड) अवन्तिवर्मन में
→ रत्नाकर : राजानक : वागीश्वर
→ कृति - वक्रोक्तिपंचाशिका + ध्वनिगाथा पञ्जिका
→ प्रथम व्याख्या ~~अलक~~ राजानक अलक (1000)
→ राजतरंगिणी में वर्णन
→ वसंततिलका की प्रशंसा - क्षेमेन्द्र

① कृष्णमाचार्य - वल्लभदेव टीका अन्तिम
② डॉ. स्टाइन - लघुपंजिका टीका

④ अभिनन्द : रामचरित (850)

+ ~~कादम्बरीकथासार~~

- शतानन्द के पुत्र

- 2 अभिनन्द { रामचरित (शतानन्दपुत्र) / कादम्बरीकथासार + योगवासिष्ठकार (नैयायिक जयन्तभट्ट) - न्यायमञ्जरी लेखक
  8 सर्ग (अनु॰)

- हारवर्ष युवराज (पालवंश)

- भोज ने उद्धृत किया + सोड्ढल 'उदयसुन्दरीकथा (प्रशंसा की)

- क्षेमेन्द्र ने अनुष्टुप् की प्रशंसा

महाकाव्य

- 36 सर्ग
- अपूर्ण + भीम नामक कवि ने परिशिष्ट (4 सर्ग)
- वैदर्भी (माधुर्य प्रसाद)

⑤ क्षेमेन्द्र (1000-75)

- नाम व्यासदास भी
- गुरु अभिनवगुप्त से साहित्यिक शिक्षा ली
- अनन्त + कलश (कश्मीर)

महाकाव्य (19 ग्रन्थ) रामायणमञ्जरी, भारतमञ्जरी, बृहत्कथामंजरी, दशावतारचरित अवदान कल्पलता

उपदेशात्मक काव्य - कलाविलास, समयमातृका, चारुचर्याशतक, सेव्यसेवकोपदेश, दर्पदलन, नर्ममाला, देशोपदेश, चतुर्वर्गसंग्रह

काव्यशास्त्रीय - कविकण्ठाभरण, औचित्यविचारचर्चा, सुवृत्ततिलक

प्रकीर्ण - लोकप्रकाशकोश, नीतिकल्पतरु तथा व्यासाष्टक

(क) रामायणमंजरी (काव्यमाला में प्रकाशित 1903) काण्ड 7

(ख) 1037 भारतमंजरी (19 पर्व) विभाजित " 1898

(ग) बृहत्कथामंजरी (18 लम्बकों) में विभाजित
18-31 - मुख्य त:- अनुष्टुप् प्रयोग

(ख) अवदानकल्पलता (बुद्ध की कथाएँ)
- 108 पल्लव कथाएँ
- 1272 तिब्बती अनुवाद - सोन्तोन् लोचव द्वारा

(5.) दशावतारचरित (काव्यमाला. 1892)
- 10 सर्ग + 10 विष्णु अवतार

(6) मंखक (1100-50) : श्रीकण्ठचरित (कश्मीरी)
- 25 सर्ग, (वीर)
- रुय्यक साहित्यिक गुरु थे
  (अलंकारसर्वस्व + काव्यप्रकाश – 'संकेत' टीका)
- प्रसाद गुणपूर्ण | वैदर्भी + गौडी रीति

अन्य ग्रन्थ

(1) लक्ष्मीधर : चक्रपाणिविजय
- भोजकालीन
- सुभाषितों की रचना भी की
- 20 सर्ग
- बाणासुर की पुत्री – अनिरुद्ध (कृष्ण पौत्र)
- वैदर्भी (उषा) (7 ~~सर्ग उपलब्ध : 4 खंडित~~)

(2) लोलिम्बराज : हरिविलास (कृष्ण)
- भोजकालीन
- अन्य आयुर्वेद के ग्रन्थ वैद्यजीवन + वैद्यावतंस
- 5 सर्ग

श्रीहर्ष : नैषधीयचरित । (12-13)

- गहड़वाल क्षत्रिय काशी के राजा । विजयचन्द्र + जयचंद्र इनका
  बार में कान्यकुब्ज राजधानी बनाई

- नैषध में उल्लेख -
  विजयप्रशस्ति (5), स्थैर्यविचारप्रकरण (4),
  खण्डनखण्डखाद्य (6), गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति (7) अर्णववर्णन (9)
  छिन्दप्रशस्ति (17), शिवशक्तिसिद्धि (18), नवसाहसाङ्कचरितचम्पू (22)

  खण्डखण्ड० में ईश्वराभिसन्धि का उल्लेख
  (वेदान्त ग्रंथ)

प्राप्त :- नैषध + खण्डनखण्डखाद्य

- राजशेखरसूरि - 'प्रबन्धकोष' में विवरण दिया

① नैषधीयचरितम्

- नलदमयन्ती (महा - वन पर्व)
- 22 सर्ग (2 और सर्ग 13=56 पद्य || 19 = 67)
- सभी 100 < हैं (पद्य) | सबसे बड़ा 17वाँ सर्ग - 222
- 14 - वरण 16 में विवाह संस्कार, 22 - सन्ध्या-रात्रिवर्णन
- समान्तिपरिचय
- श्रृङ्गार अङ्गी, वैदर्भी रीति

| 7 - उपजाति, 4 - वंशस्थ
| अचलधृति, त्रोटक, दोधक
| प्रथिवी | 1-1 छन्द में

टीकाएँ

- आफ्रेक्ट (Aufrecht) 23 टीका उल्लेख ।
  → चाण्डू पं. नैषधदीपिका (1296) (विद्याधर टीकाकार उल्लेख नैषध पर)
  → नारायण - नैषधीयप्रकाश
  → जिनराज - सुखावबोध
  → मल्लिनाथ - जीवातु
  → चारित्रवर्धन तिलक
  नरहरि दीपिका
  विद्याधर साहित्यविद्याधरी

द्विसन्धान महाकाव्य परंपरा

(अधिकतर काव्यमाला में प्रकाशित)

① राघवार्जुनीय
- भट्टभीमकृत / भौमक / भूमट्ट / भूमभट्ट / भीम / भूप
- क्षेमेन्द्र उल्लेख (सुवृत्त तिलक)
- 27 सर्ग (कार्तवीर्य अर्जुन + रावण)

② विद्यामाधवकृत पार्वतीरुक्मणीय
- 9 सर्ग
- सोमदेव (1120-38) सभापंडित (चालुक्य)

③ राघवपाण्डवीय (1123-1140)
- 18 सर्ग (रामायण + महाभारत)
- धनञ्जयकृत (जैन) / श्रुतकीर्ति
- भोज ने उल्लेख - (1031 + धनञ्जय) - 1000 पूर्व रचना
- राजशेखर - '(द्विसन्धाने निपुणतां सतां चक्रे धनञ्जयः)

④ राघव पाण्डवीय (1182-97)
- कदम्बराजा कामदेव के आश्रित
- माधवभट्ट / कविराज
- 13 सर्ग (राम / रावण - युधिष्ठिर / दुर्योधन) 668 पद्य
- पारिजात हरण महाकाव्य भी लिखा
  - 10 सर्ग
  - कृष्ण - सत्यभामा (पारिजात वृक्ष स्वर्ग)

⑥ राघवनैषधीय
- राम + नल की कथा
- भट्टाचिरीरमित्र ने उल्लेख (1650)

⑦ रामपालचरित (~~11वीं उत्तरार्ध~~)
- जैनकवि सन्ध्याकरनन्दी
- रामपाल (11वीं) + राम (क्लिष्ट)
- 'रसिकरञ्जन' में शृङ्गारपरक + वैराग्यपरक पद्य

[काल - 1542]

(8) वेंकटाध्वरी - यादवराघवीय विलोमकाव्य (1600ई०)

- 300 पद्य
- सीधा - राम परक
  उलटकर - कृष्णपरक

(9) राघवपाण्डवयादवीय - पं. चिदम्बर

- राम - युधिष्ठिर - कृष्ण
- 3 सर्ग

इन्होंने 'पञ्चकल्याणचम्पू' की भी रचना की। जिसमें एक साथ राम, कृष्ण, शिव, विष्णु, सुब्रह्मण्य (कार्तिकेय) विवाह।

- यह विजयनगर - राजा वेंकट (1586-1614) सभा

(10) सप्तसन्धान

- 9 सर्ग
- कृष्ण, बलराम, (5 तीर्थंकर - ऋषभदेव, शांतिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर)

व्याकरण के ज्ञान कराने वाले महाकाव्य

1. श्रेणिक चरित
2. वासुदेवकृत वासुदेवविजयम् + युधिष्ठिरविजयम्
3. नारायणभट्ट धातुकाव्य
4. हेमचंद्र कुमारपालचरित / द्व्याश्रयमहाकाव्य
5. श्री नारायण का सुभद्राहरण

जैन महाकाव्य परम्परा

① जटासिंह नन्दी (या जटिल) – 'वराङ्ग चरित'
- 1938 - माणिक चन्द्र जैन ग्रन्थमाला, बंबई से डॉ. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये
- 700 CE
- वरांग (22वें तीर्थंकर नेमिनाथ - कृष्णकालीन)
- 31 सर्ग (अश्वघोष प्रभाव)

② वीरनन्दी - 'चन्द्रप्रभचरित'
- 970-75
- 18 सर्ग
- 8वें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ (कालिदास प्रभाव)

③ असग - 'शांतिनाथ चरित' एवं वर्धमान चरित
- 16वें शांतिनाथ
- 24 वर्धमान महावीर
- 18 सर्ग (2 महावीर, अन्य पूर्वजन्म)

④ वादिराजकृत पार्श्वनाथ चरित
- 12 सर्ग
- 23 तीर्थंकर
- चालुक्य नरेश जयसिंह की सभा में थे (1042 ई.)
- अन्य ग्रन्थ - न्यायविनिश्चयविवरण + प्रमाणनिर्णय

⑤ वर्धमानकृत 'वराङ्ग चरित' (II)
- 14वीं
- 15 सर्ग

⑥ हरिश्चन्द्र का धर्मशर्माभ्युदय
- कायस्थ जैन
- 1230 की पाण्डुलिपि में मिला
- नैषध + शिशु प्रभाव
- अन्य कृति - 'जीवन्धरचम्पू' [आधार - वादीभसिंह कृत गद्यचिन्तामणि (1100 CE) + क्षत्रचूड़ामणि]
- 21 सर्ग
- 15वें तीर्थंकर धर्मनाथ का चरित वर्णित
- सुकुमार + शांत
- कथानक स्रोत 'उत्तरपुराण' [जिनसेन + गुणभद्र रचित]

जैन महाकाव्य (अन्य)

	महासेन	प्रद्युम्नचरित	14सर्ग
1160	माणिक्यचन्द्र	शान्तिनाथचरित	
	वाग्भट I	नेमिनिर्वाण	
1221	अभयदेव	जयन्तविजय	
1250	अमरचन्द्र	पद्मानन्द महाकाव्य	19 सर्ग (ऋषभदेव)
	जिनपाल उपाध्याय	सनत्कुमार	24, सनत्कुमार चक्रवर्ती
1219	माणिक्यचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथचरित	10सर्ग, 6770 श्लोक
1255	भावदेवसूरि	पार्श्वनाथचरित	8 सर्ग 6074
1268	विनयचन्द्रसूरि	मल्लिनाथचरित	8 सर्ग
1257	चन्द्रतिलक	अभयकुमारचरित	12सर्ग (राजगृह राजकु. की
1300	जिनप्रभसूरि	श्रेणिकचरित (व्याकरण को)	18 सर्ग, महावीर समकालिक राजा
17वीं	हेमविजयगणि	विजयप्रशस्तिकाव्य	21सर्ग, तीन मुनि
16वीं	कविराजमल्ल (अकबरकालीन)	जम्बूस्वामीचरित	
	सर्वानन्द	जगडूचरित (गुजरात के जगडू व्यापारी शाह	7 सर्ग
	वादीभसिंहसूरि	क्षत्रचूडामणि जीवंधरचरित (गद्यग्रन्थ)	लम्भ विभाग चरितप्रधान
	कीर्तिराज	नेमिनाथ	
14-15	पद्मनाभ	यशोधर	
14-15	चरित्रसुन्दर	महीपालचरित	
16	पद्मसुन्दर	पद्मसुन्दर महाकाव्य	

जैन काव्य

धनेश्वरसूरि	शत्रुञ्जयमाहात्म्य
सकलकीर्ति	सुदर्शनचरित
वादिराज	यशोधरचरित
जयशेखर	जैनकुमारसम्भव
धनराज ~~चरित्रसुन्दर~~	त्रिशतीशृङ्गार

प्राकृत महाकाव्य

① प्रवरसेन - सेतुबंध / रावणवहो
- बाण ने हर्षचरित में उल्लेख
- यह राजा थे - कश्मीरनरेश प्रवरसेन II / वाकाटक नरेश प्र.II
  - वाकाटकप्र. चंद्रगुप्त पुत्री प्रभावती गुप्ता का विवाह हुआ
  - If He - [425-450 CE]

* 14 आश्वास में निबद्ध + युद्धकांड + आर्या छन्द (गाथा)
- महाराष्ट्री प्राकृत (दण्डी ने प्रशंसा की)
- 10 आश्वास में - राक्षसी सम्भोग प्रभाव - भट्टिकाव्य (11), जानकीहरण (8), अभिनन्दकृत रामचरित (18), काकाविन (जावा) + कम्बरामायण (तमिल)

② वाक्पतिराज - गउडवहो
- ऐतिहासिक महाकाव्य
- 1209 गाथाएँ (पद्य) आर्याछन्द
- कन्नौज राजा यशोवर्मा के सभाध्यक्ष
  - का गौडनरेश पर विजय प्राप्ति

- ग्राम्यजीवन
- विन्ध्यवासिनी पूजा

- जैनपरंपरानुसार - यह महाकाव्य कारागार में लिखा गया।
- कश्मीर नरेश ललितादित्य (724-760) ने यशोवर्मा को पराजित किया 734 (उल्लेख नहीं)

प्रकीर्ण महाकाव्य

① चाणक्यनीति - डॉ. लुडविक स्टर्नबाख ने प्रकाशित (1963)

(क) प्रथमवाचना - वृद्धचाणक्य - 8 अध्याय, 124 श्लोक (सरल प्राचीन)

(ख) चाणक्य नीतिदर्पण - 17 अध्याय, 333/336 (मानवधर्मसूत्र + महाभारत में कुछ पद्य प्राप्त)
- अनुष्टुप् + अन्य भी छन्द

(ग) चाणक्यनीतिशास्त्र - 108 पद्य
- मूलसूत्रं प्रवक्ष्यामि चाणक्येन 'प्राचीन माना (अध्याय)

(घ) चाणक्यसारसंग्रह - 300 श्लोक (तीन शतक में विभाजित

(ङ) लघु चाणक्य - 8 अध्याय, 91 श्लोक (1825 ई. यूनानी में प्रकाशित थी)

(च) चाणक्यराजनीतिशास्त्र - 8 अध्याय, 512 श्लोक | सर्वाधिक लोकप्रिय
- तिब्बती तन्ज़ूर में (9वीं) संकलित

② दामोदरगुप्त - कुट्टनीमत
- जयापीड के प्रधान अमात्य थे (779-813)
- 1059 पद्य आर्या
- उदाहरण रुय्यक + मम्मट ने दिए

③ क्षेमेन्द्र (क) कलाविलास
- 10 सर्ग

(ख) दर्पदलन

(ग) चारुचर्या (शतक)

(घ) चतुर्वर्गसंग्रह (धर्मार्थकामकोश)

(ङ) सेव्यसेवकोपदेश - 61 पद्य

(च) समयमातृका (1050) - 8 परिच्छेद

(छ) देशोपदेश - 8 उपदेशों में विभक्त

(ज) नर्ममाला - 3 परिच्छेद (राजकर्मचारियों पर व्यंग्य)

④ अन्य -

(क) अन्योक्ति - अन्योक्तिशतक, अन्यापदेशशतक

(ख) शास्त्र - हलायुध कृत कविरहस्य
- वासुदेवकृत वासुदेवविजय

(ग) श्लेषकाव्य - वासुदेवरचित युधिष्ठिरविजय, रासकाव्य,
- सन्ध्याकरनन्दी का रामचरित

पौराणिक महाकाव्य

① हरिचिंतामणि

- जयद्रथ (12-13)
- पिता कश्मीर के राजाओं के मंत्री थे
  भ्राता (ज्येष्ठ) रुय्यक के अलंकारसर्वस्व पर 'विमर्शिनी टीका'
- पौराणिक शैली + शिवविषयक अनेकाख्यान
- विपुल आकार + अपूर्ण
- प्रसाद गुण + अधिकांश अनुष्टुप्

नरनारायणानंद : वस्तुपाल (1200-1242)

- 16 सर्ग
- नर नारायण के अवतार अर्जुन + कृष्ण की मित्रता
- सहज
- पिता अश्वराज (अश्वराज) + माता कुमारदेवी
- राजा वीरधवल के प्रधान अमात्य थे।
- सोमेश्वर के ऐतिहासिक महाकाव्य में / कीर्तिकौमुदी में
  विस्तार से चर्चा — "सरस्वती का पुत्र कहा"

सुरथोत्सव : सोमेश्वरदेव / सोमशर्मा (

- इनके पूर्वज अन्हिलवाड के चालुक्यवंशीय राजाओं के यहाँ पुरोहित
- सिद्धार्थ कौमुदी चम्पू काव्य भी
- 15 सर्ग + चैत्रवंशीय राजा सुरथ के पुराणप्रसिद्ध आख्यान
- अन्य ग्रन्थ - उल्लाघराघव नाटक, रामाष्टक स्तोत्र, काव्यादर्श और काव्यप्रकाश की टीकाएँ कुछ अभिलेख भी

यमकभारत : माधवाचार्य आनन्दतीर्थ / वासुदेव (1198-1261)
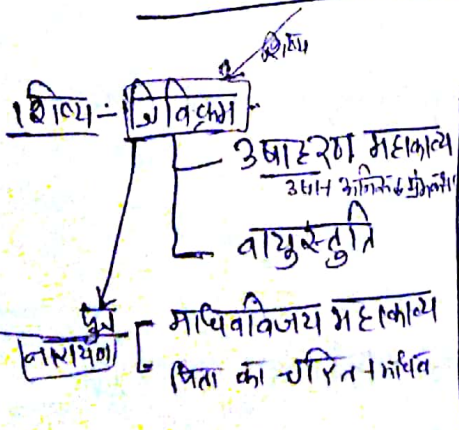
- 37 ग्रंथ मिलते हैं अधिकांश दर्शन
- आर्यस्तोत्र, कृष्णस्तुति तथा द्वादशस्तोत्र प्रसिद्ध
- भागवततात्पर्यनिर्णय शास्त्रीय ग्रंथ
- कृष्णकर्णामृतमहार्णव, शंकरविजय, शंकराचार्यावतारकथा
- यमक अलंकार में महाभारत की कथा वर्णित है

यादवाभ्युदय : वेंकटनाथ (1268-1369)

- पिता अनंतसूरि पितामह पुंडरीकाक्ष
- इनकी शिष्य परंपरा में 121 ग्रन्थ लिखे गये।
- अन्य ग्रन्थ - संकल्पसूर्योदय नाटक, हंससंदेश काव्य, रामाभ्युदयसहस्र, दयाशतक, गोदास्तुति, यमकरत्नाकर।
- • महाकाव्य में यदुवंश के पूर्वपुरुष ययाति के चरित से आरंभ

बालभारतम् : ~~राजशेखर सूरि~~ अमरचन्द्र

- राजशेखरसूरि ने प्रबन्धकोश (1348) में इनका वर्णन
- महाकाव्य प्रारम्भ - 46 पद्य गुरु आदि वन्दना
- 18 पर्व / सर्ग / पद्य || 44 सर्ग + 6950 श्लोक
- • अन्य - पद्मानंद महाकाव्य (19 सर्ग : 19 तीर्थंकरों वर्णन)
  - चतुर्विंशतिजिनेन्द्रसंक्षिप्त चरितकाव्य
  - काव्यकल्पलता, छंदोरत्नावली, मुक्तावली, कलाकलाप

14-15 वीं शताब्दी के महाकाव्य

1. वामनभट्ट बाण - रघुनाथ चरित + नलाभ्युदय
   30 + 8 सर्ग
   - मेघसंदेश शैली पर 'हंससंदेश'
2. सुकुमार कवि - कृष्णविलास (सुकुमार)
3. महाकवि शंकर - कृष्णविजय
   - केरल वर्मा के आश्रय में रहे
   - मलयालम के चन्द्रोत्सव में शंकर की भूरि-2 प्रशंसा की
4. कृष्णशंकर - भरतचरित महाकाव्य
   12 सर्ग
5. चतुर्भुज - हरिचरित महाकाव्य (बंगाल में रामकेलि स्थान पर रहकर लिखा)

(6) विजयनगर राजा सुलुव सिंह - रामाभ्युदय महाकाव्य
- 24 सर्ग

(7) अज्ञातकर्तृक कुशाभ्युदय (आश्रय - रामवर्मा (मिलनराज)
- 8 सर्ग (महाभारत

(8) रामवर्मा :- भारतसंग्रह (अपूर्ण प्राप्त)
- 22 सर्ग
- केरल के राजकुमार + केरलवर्मा का भतीजा थे
अन्य - चन्द्रिका कलापीड (5) नाटक

(9) शिवसूर्य - पाण्डवाभ्युदय (8 सर्ग)

(10) चतुर्भुजकृत - हरिचरितमहाकाव्य (1493)
- (कंसवध की कथा)

(11) रामचन्द्र - गोपाललीलामहाकाव्य (1483)
- (कंसवध)

कवि कर्णपूर के महाकाव्य

- मुगल कालीन (जहाँगीर)
- पिता शिवानंदसेन
- जन्म कुमारहट्ट (कांचनपल्ली) (1524)
- टीकाकार वृंदावन चक्रवर्ती ने इनके महाकाव्य पर टीका की कि 5 वर्ष में चैतन्य दर्शन

रचनाएँ
(1) महाकाव्य - चैतन्यचरितामृतम्, पारिजात हरणम्
(2) आर्याशतक, कृष्णाह्निककौमुदी, तत्त्वावली, श्रीकृष्णचैतन्यसहस्रनामस्तोत्र (खण्डकाव्य / स्तोत्र)
(3) नाटक - चैतन्यचन्द्रोदय
(4) चम्पू - आनंदवृंदावन
(5) शास्त्रीय [काव्य - अलङ्कारकौस्तुभ
गौरगणोद्देशदीपिका, बृहत्-कृष्णगौरगणोद्देशदीपिका, श्रीमद्भागवतटिप्पणी टीका (गौडीय संप्रदाय से संबन्धित)

चैतन्यचरितामृत
- २० सर्ग 1911 श्लोक
- चैतन्यमहाप्रभु की 47 वर्षों के जीवन -

पारिजातहरण
- हरिवंशपुराण + श्रीमद्भागवत पर आधारित 18 सर्ग
- प्रत्येक सर्गान्त 'श्री' शब्द प्रयोग (भारवि + माघ अनुकरण)

| नीलकंठ दीक्षित के महाकाव्य |

- परिचय नलचरित नाटक की प्रस्तावना में
पुरखों को ब्रह्मसाक्षात्कारकृत, सर्वविद्यागुरु, छंदोग, सोमवीथी, अद्वैतवादी ब्राह्मण
- अच्चनदीक्षित → अप्पयदीक्षित →
नारायणदीक्षित → नीलकंठ
- उनके 8 पुत्र
- 'अद्वैतविद्यामुकुरविवरण' - श्रीरंगराजाध्वरी (5वें पुत्र)
पुत्र अप्पयदीक्षित II
- 'शृंगारकोशभाण' गीर्वाणेन्द्र (3 पुत्र)
- 'वार्तिकाभरण' → (पुत्र) वेंकटेश्वरमखी
'संगीतसुधानिधि' + "रामचन्द्रोदय महाकाव्य"

समकालीन विद्वान्

(1) चोक्कनाथ मखीन्द्र - शब्दकौस्तुभ, धातुरत्नावली, भाष्यरत्नावली
(2) अतिरात्र यज्वा (छोटे भाई) - कुशकुमुद्वतीयनाटक
- (चित्र) मीमांसादोषधिक्कार +
- प्रतिरघुवंश
(3) चक्र कवि - चित्ररत्नाकर + रुक्मिणीहरण + जानकीपरिणय + गौरीपरिणय

नीलकंठ के काव्य

(लघु) — कलिविडम्बनम्, सभारञ्जनम्, अन्यापदेशशतकम्, शान्तिविलास, वैराग्यशतक, आनन्दसागरस्तव, चण्डीशतक, शिवोत्कर्षमञ्जरी, रामायणसारसंग्रह, रघुवीरस्तव, चण्डीरहस्य, गुरुतत्त्वमालिका

(दार्शनिक) - कैयटव्याख्यानम्, शिवतत्त्वरहस्यम्

(नाटक) — नलचरित (चम्पू) — नीलकण्ठविजयचम्पू

महाकाव्य

① गंगावतरण
- 8 सर्ग, 597 श्लोक पद्य (वीरंपद्य)
- जीवन में साधना, संकल्प, तपोनिष्ठा के मूल्य पर

② शिवलीलार्णव
- 22 सर्ग, 1998 श्लोक पद्य
- दक्षिण की सांस्कृतिक परंपरा
- राजा सुन्दर पाण्ड्य (शिव) + मलयध्वज कन्या (पार्वती) = अवतरण
- नारीप्रधान (किरात की तरह)

③ मुकुन्दविलास

17-20 वीं शताब्दी के महाकाव्य

① देवर्षि कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट विरचित - ईश्वरविलास
- आमेर राजा सवाई जयसिंह संरक्षण में
- वैदर्भी रीति युक्त

② पतंजलि चरित
- 8 सर्ग + 538 पद्य
- शांतरस

③ वेंकटकृष्णदीक्षितकृत नटेशविजय
- 10 सर्ग
- शिवलीला

④ राजचूडामणि दीक्षित कृत रुक्मणीकल्याण महाकाव्य

⑤ मधुरवाणी (कवयित्री) कृत रामायण महाकाव्य (तंजौर नरेश रघुनाथ का संरक्षण प्राप्त)
- आधी घड़ी में 100 पद्य रचने की कला

⑥ मेघविजयकृत सप्तसंधान महाकाव्य (विभिन्न तीर्थंकर)
- प्रत्येक पद्य के 7-7 अर्थ एकसाथ निकलते हैं।

⑦ रामपाणिपादकृत राघवीयम् + विष्णुविलास
20 सर्ग, 1572 | 8 सर्ग + 9 अवतार

⑧ बालकेशीदासकृत रघुनाथगुणोदय
-13 सर्ग

⑨ 20वीं शताब्दी में 300 से अधिक महाकाव्य लिखे गए -
गंगाधरशास्त्रीकृत अलिविलासिसंलाप खण्डकाव्य
-9 शतक

पद्मशास्त्री - लेनिनामृतम् | रसिकविहारीजोशी मोहभङ्गम्
सत्यव्रतशास्त्री श्रीरामकीर्तिकौमुदी + बोधिसत्वचरितम्

9वीं	अभिनन्द	रामचरित	36 सर्ग
900	वासुदेव	युधिष्ठिरविजय	8 ॥
1200	कृष्णलीलाशुक	गोविन्दाभिषेक	8 ॥
1330	साकल्यमल्ल	उदारराघव	18 ॥
1460	कुतूहल नरसिंह	रामाभ्युदय	24 सर्ग
1660	श्रीनिवास	भूवराहविजय (यमक)	8 ॥
आधुनिक	बदरीनाथ झा	राधापरिणय	20
"	उमापति द्विवेदी	पारिजातहरण	22
"	रामसनेहीदास	जानकीचरितामृत	108 अध्याय
1968	रेवाप्रसाद द्विवेदी	सीताचरित + स्वातन्त्र्यसंभव	10
1989	अभिराजराजेन्द्रमिश्र	जानकीजीवन + वामनावतरण	21
	श्रमराव	सत्याग्रहगीता + उत्तरसत्या + स्वराज्यविजयम्	
	वेंकटराघवन	मुक्तस्वामीरीसितचरितम्	
	वसंत त्र्यंबक शेवड़े	शुम्भवधम् + विन्ध्यवासिनी-विजयम्	
	श्रीधरभास्कर वर्णेकर	शिवराज्योदयम्	
	उमाशंकर त्रिपाठी	छत्रपतिचरितम्	
	परमानंदशास्त्री	जनविजयम् + श्रीरहरणम्	
	प्रद्युम्न शास्त्री	गणपतिसम्भवम्	

ऐतिहासिक महाकाव्य

भूमिका

- महाभारत, पुराण = वंशावली
- पारिवारिक वंशवृक्ष
- बुद्धचरित - 28 सर्ग (100 BC)
- हर्षचरित - 8 उच्छ्वास
- वाक्पतिराज - गउडवहो (प्राकृत) कन्नौज यशोवर्मा

① पद्मगुप्त (परिमल) नवसाहसाङ्कचरितम्

- आश्रय (धारानरेश वाक्पतिराज + सिन्धुराज)
  - तैलप ने मारा (मुंज) — (नवसाहसांक)
- (980-1050) 1005 में रचित

प्रबन्ध
- 18 सर्ग
- सिन्धुराज - नागराज (बस्तर) शङ्खपालकन्या शशिप्रभा।
- शृङ्गार रस
- अभिनव कालिदास, सुकुमार + कश्मीरी
- उपजाति (1, 9, 14, 17) + अनुष्टुप् आदि

② बिल्हण विक्रमाङ्कदेवचरित (1050-1100)
- 18 सर्ग (1085 CE)
- अन्तिमसर्ग स्ववृत्तान्त + कश्मीरी (खोनुमुख गांव)
- चालुक्य विक्रमा॰ षष्ठ → "विद्यापति"
  - इन्हीं पर

अन्य - कर्णसुन्दरी (भीमदेवपुत्र कर्णदेव संग-विद्याधरराजकुमारी)
- चौरपञ्चाशिका (चौरीसुरतपञ्चाशिका) गीत
- 6 ऋतुवर्णन भी + वैदर्भी + प्रसाद

③ कल्हण राजतरङ्गिणी (कलियुग से 1150 तक का इतिहास)
- शिवभक्त
- एकमात्र रचना + 8 तरङ्ग में विभाजन, 7826 पद्य
- 8 वाँ सबसे बड़ा (3449) फिर सातवाँ 1732 पद्य
- ललितादित्य → यशोवर्मा को मारा (4 तरंग)

- पद्मक (ऐतिहासिक कालक्रम सहित)
- प्रकृ (मन्त्री पुत्र क्षेमगुप्त विवाह दिद्दा -(पति हत्या) -23 वर्ष राज)
- उत्कर्ष (उच्चल से जयसिंह) अंतिम
- नीलमतपुराण

राजतरङ्गिणी की परंपरा

① जोनराज राजतरङ्गिणी
- जैनुल आब्दीन के शासनकाल तक (1467)
- मृत्यु होने पर शिष्य श्रीवर ने जैनराजतरङ्गिणी (1459-1486)

② प्राज्यभट्ट + शिष्य शुक - राजावलि पताका
- अकबर ने कश्मीर को राज्य में मिलाया (1486-15-86)
- 1000 पद्य

③ कर्णाटराजतरङ्गिणी - काशीनाथ मिश्र (20वीं) (पटना एवं संस्कृत विद्या (1994)
- मिथिला कर्णाट राज्य
- 11 तरंग
- कर्णाट राज्य स्थापना (1097) नान्यदेव ने की।

अन्य ऐतिहासिक महाकाव्य

① जल्हण - सोमपालविलास [मंख ने श्रीकण्ठचरित में वर्णन)

② जयानक - पृथ्वीराज विजय (1191-93) (कश्मीर)
- ब्यूलर को कश्मीर से पाण्डुलिपि मिला
- 12 वें के बाद खण्डित (सर्ग)

③ जैनमुनि हेमचन्द्र (1088-1172) - कुमारपाल चरित (कलिकालसर्वज्ञ उपा.)
- 20 सर्ग संस्कृत + 8 प्राकृत - (अन्हिलवाड के राजा कुमारपाल)
- द्याश्रयमहाकाव्य - मूलनाम - चंगदेव

अन्य ग्रन्थ - बालभारत (19 सर्ग) + त्रिषष्टि शलाकापुरुषचरित (10 सर्ग)
प्रमाणमीमांसा, सिद्धहेमचन्द्र / हेमशब्दानुशासन, काव्यानुशासन, अभिधानचिन्तामणि (कोश), छन्दोऽनुशासन, देशीनाममाला (प्राकृतकोश)

(4) सोमेश्वर देव – कीर्तिकौमुदी (वास्तुपाल नामक उदार मंत्री पर) (13वीं पूर्वार्द्ध)
- (15 सर्ग + अन्य सुरथोत्सव महाकाव्य भी)
- 9 सर्ग
- प्राचीन कवियों की प्रशस्ति से प्रारम्भ

वास्तुपाल आश्रित अन्य कवि
- अरिसिंह – सुकृतसंकीर्तन काव्य
  - + प्रत्येक सर्गान्त 5 पद्य + अमरचन्द्र
    - → कविकल्पलता (सूत्रग्रन्थ)
- वसन्तविलास महाकाव्य हरिभद्रसूरि के शिष्य बालचन्द्रसूरि
  - 14 सर्ग

(5) विजयनगर – गंगादेवी (1371) – मधुराविजय
- 8 सर्ग
- कम्पण की पत्नी (बुक्का का पुत्र)

(6) जैनकवि नयचन्द्र – हम्मीरमहाकाव्य (1450-1500)
- 14 सर्ग
- चौहान राजा -

(7) रुद्रकवि – राष्ट्रौढवंशकाव्य (16वीं)
- 20 सर्ग
- मयूरगिरि के बागुल राजाओं का इतिहास

(8) रामपाल चरित – सन्ध्याकरनन्दी (द्विसन्धान महाकाव्य भी)
- (1070-1120)
- 120 आर्या + 4 परिच्छेद
- बंगाल के पालवंशीय राजाओं

(9) अतुल – मूषकवंश – 15 सर्ग (केरल के राजवंश) मूषक पर्वत + मूषक राजा (12वीं उत्तरार्द्ध)

(10) पृथ्वीराजविजय (?) जा· चंड कवि (? सर्ग) + जोनराज की टीका भी प्राप्त (12वीं उत्तरार्द्ध)

(11) पृथ्वीराजविजय – जयानक – 12 सर्ग – पृथ्वीराज के सभाकवि थे

अन्य ऐतिहासिक महाकाव्य

वि	विद्यापति	भूपरिक्रमा		बलराम द्वारा पृथ्वी परिक्रमा ... इत्यादि ...
15C.	उद्दण्डदेव के शिष्य चण्डशरीदेव	महाकालराजीय	10 सर्ग	
15C	राजनाथ II	सूनुनाभ्युदय	13	विजयनगर सम्राट सुतनु
16C	चन्द्रशेखर	सुर्जन चरित	20	चौहानवंशी सुर्जन
1540	माधव उरव	वीरभानूदय	12	बघेलखंड
17वीं	यज्ञनारायणदीक्षित	साहित्यरत्नाकर		तंजौर
17C	रामभद्रांबा	रघुनाथाभ्युदय	12+900	तंजौर-रघुनाथ
17C	सदाशिव	राजरत्नाकर	23 सर्ग 855 पद्य	मेवाड राजा (कुंभा, राणा, सांगा etc. प्रताप, रावसिंह ...)
	जगज्जीवनभट्ट	अजितोदय + अभयोदय	32+10	(अजीतसिंह सं०)
	बाल कृष्णभट्ट	अजितोदय "		
	श्रीकृष्णभट्ट	ईश्वरविलास + कच्छवंश		
	सीताराम पर्वणीकर	जयवंश		
	श्रीकृष्णराम	कच्छवंश + ~~कच्छभट्ट~~		
	रणछोडभट्ट	अमरमहाकाव्य + राजप्रशस्ति		
	बाल कृष्णदीक्षित	अजितचरित्र	10	(अजीतसिंह सं०)
	~~भट्ट जग. रामसिंह II~~	~~अजितोदय~~	~~32~~	
	सीताराम पर्वणीकर	जयवंश	19	(आदिदेव -1835)
18-83-1951	पं० सूर्यनारायण	मानवंश	17, 5008	
1883-	पं० गिरिधारीलाल शास्त्री	मेदपारैतिहास		मेवाड़
1661CE	परमानन्द	शिवभारत	32 अध्याय	महाभारत प्रभाव
	हरि कवि	शम्भुराज चरित		शिवाजी के पुत्र शम्भाजी का चरित
	श्रीधर वंकटेश	शाहेन्द्रविलास	8	शाहजी राजा का तंजौर का अधि कथा
(1845-1915)	केरलवर्मा	विशाख विजय	20	राजा त्रिकनाल

चरितकाव्य परम्परा + अन्य

[वि विज्ञपरिषसायात्म... राव] (आत्मकथा)

1498-1507	व्यासाचल (1498- शंकराचार्य कालीकाल)	शंकरदिग्विजय	शंकराचार्य पर उपजीव्य
	सायण के अग्रजमाधव	संक्षेपशंकरदिग्विजय	
	चित्सुखाचार्य	बृहच्छंकरविजय	
	अनंत	शंकराचार्य चरित	
	आनंदगिरि	प्राचीनशंकर दिग्विजय	
	राजचूडामणि दीक्षित	शंकराभ्युदय	
14वीं	सर्वानंद	जगडूचरित	जगडू (1225-1258) में अपनी सारी संपत्ति लुटा दी।
14c	जयसिंहसूरि	भूपालचरित	कुमारपाल + हेमचंद्र की वंशपरम्परा
1440	राजवल्लभ	भोजचरित	5 प्रस्ताव। आख्यान शैली + अनुष्टुप् / [illegible]
16c	कल्याणमल्ल	सुलैमच्चरित	अर्धऐतिहासिक आख्यान (डेविड सोलोमन) बाइबल
17c	रुद्र कवि	राष्ट्रौढवंश + जहाँगीरचरित + कीर्तिसमुल्लास(खरि) रचित	गुजरात नारायणशाह + खुर्रम (जहाँगीर पुत्र)
1666-1708	देवराजशर्मा	नानकचन्द्रोदय	21 प्रस्ताव + 3579 पद्य
	लक्ष्मीपति/लक्ष्मीधर	अब्दुल्लाहचरित	1600 अनुष्टुप् पद्य (औरंगजेबपुत्र मुहम्मदशाह + मंत्री अब्दुल्ला)
19c	राजराज वर्मा	आंग्लसाम्राज्य	
	श्रीश्वर विद्यालंकार	दिल्लीमहोत्सव + विजयिनीमहाकाव्य	लॉर्ड कर्जन + विक्टोरिया
	वासुदेवशर्मा लाटकर	शाहुचरित (गद्य में)	शाहुमहाराज की जीवनी (1874-1922)
	रामावतारशर्मा (महाकाव्य/पद्यात्मक)	भारतीयमितिवृत्तम् देशान्तरीयेतिवृत्तम्	भारत इतिहास + विश्व
1935	लक्ष्मीनरसिंहशास्त्री	चालुक्यचरित	
20c	पंडिताक्षमाराव	तुकारामचरित + रामदासचरित + सन्तज्ञानेश्वरचरित	शंकरजीवनाख्यानम् (पिता पाण्डुरंग पर)
20c	आंग्लचन्द्रिका - विनायकभट्ट +	इसी समय 'इतिहाससमोमिताभी'	लिखा गया
	गणपतिशास्त्री	श्रीमूलचरित + भारतानुवर्णन	त्रावणकोर के राजा + भारत
	रामावतार शर्मा	भारतीयमितिवृत्तम्	
	ज्ञानकौर	सिक्खाँ काव्यम्	16 सर्ग + सिखों का इतिहास
	सुन्दरराज शर्मा	त्यागराजचरित	संगीतज्ञ संत
	वेंकटरामराघवन्	मुत्तुस्वामिदीक्षितचरित	"

गीतिकाव्य

- खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च) (साहित्यदर्पण) (कविराज) → नायक + प्रतिनायक का प्रभाव
- गीतिकाव्य – आत्माभिव्यक्ति
  - एकभाव केन्द्रित
  - संक्षिप्तता
  - गेयात्मकता

लघुकाव्य प्रकार

- मुक्तक – एक सरस पद्य
- संदानितक – 2 मुक्तक का जोड़ा
- विशेषिक – 3 "
- कुलक – 4
- संघात – एक कवि द्वारा रचित, मुक्तिसमुदाय
- रागकाव्य – विभिन्न राग + नृत्य + गीत (गीतगोविंद)

① कालिदास

→ ऋतुसंहार
- 6 सर्ग + ग्रीष्म से वसन्त (ग्री. वर्षा. शर. हे. शि. व)
- श्रृङ्गारमय
- 144 पद्य

→ मेघदूतम्

- खण्डकाव्य (प्रबन्धकाव्य) + विप्रलम्भ श्रृङ्गार +
- मन्दाक्रान्ता 115, पूर्व (63) + उत्तर (52)
  अर्थान्तरन्यास
  * मल्लि. ने 121 पद्य टीका कहा 6 प्रक्षिप्त
- विल्सन 1813 में अंग्रेजी अनुवाद
- अलकापुरी → रामगिरि
  [ब्रह्मावर्त – आषाढ़कृष्णा यामिनी (एकादशी व्रत छोड़, – श्राप)]

टीकाएँ – 63
- मल्लिनाथ + वल्लभदेव + पूर्णसरस्वती + जगद्धर
- संस्कृत साहित्य में गीता के बाद सबसे ज्यादा टीकाएँ प्राप्त होती हैं

पक्ष

- भामह ने अनुचितमत दोष माना (निर्जीव-कामार्ती)
- गेटे – ऐसा ग्रन्थ कोई नहीं बनाया होगा।
- कीथ – 'शोककाव्य के समीप'
-

मेघदूत काव्य परम्परा

① समस्यापूर्ति काव्य

→ जिनसेन - पार्श्वाभ्युदय - 4 सर्ग + 364 पद्य (23वें पार्श्वनाथ)
- जयधवला टीका + आदिपुराण (रचित) (840) 780 ई०

→ मेघदूतसमस्यालेख - श्रीमेघविजय (जैनमुनि) (1670)
- सप्तसन्धान + शान्तिनाथ चरित्र (रचित)
- काव्य(पत्र) - विजयप्रभ सूरि (गुरु) के पास भेजा)
- देवपत्तन(गुज0) के औरंगाबाद

व्यतिरेक → मदनकीर्ति - कृष्णलीलाकाव्य (व्यतिरेक के प्रत्येक चरण की समस्यापूर्ति)

② भक्तिपरक

→ जिनसेन - पार्श्वाभ्युदय
→ विक्रम - नेमिदूत [समस्यापूर्ति]
→ मेरुतुंग - जैनमेघदूत [15वीं]
→ चारित्रसुंदरगणि - शीलदूत
→ वादिचंद्र - पवनदूत (17)
→ अज्ञात - चेतोदूत
→ विनयविजयगणि - इंदुदूत (18) [1650 CE]
→ मेघविजय - मेघदूतसमस्यालेख

③ शृङ्गारपरक

व्यतिरेक → धोयी कवि - चन्द्रदूत - 23 में 14 प्राप्त
- मालिनी
- यमक

→ मानांक कवि - वृन्दावनकाव्य - 50 पद्य (12वीं उत्त.)
- मेघाभ्युदय - 38 (राजशेखर उल्लेख)
+ क्षेम उद्धृत संग्रहकाव्य.)

→ धोयी - पवनदूत (लक्ष्मणसेन) - कुवलयवती
नायक राजा नायिका
- जयदेव उल्लेख (गीत में)

+ वादिचंद्र सूरि की पवनदूत (17वीं)

अन्य दूत काव्य परम्परा

	कृष्णस्वामी	हंससंदेश		
	वेदान्तदेशिक	"		
	अज्ञात	"	शान्ति	शान्तिकालाधर [illegible]
13	पूर्णसरस्वती	हंससंदेश		
15c	वामनभट्टबाण	हंसदूत		
	उदय कवि	मयूर सन्देश		रंगाचार्य ई.30
	चरित्रसुन्दरगणि	शीलदूत (आत्मकृति) [illegible]		
16c	उद्दंड कवि	कोकिलसंदेश		
	वासुदेव	भृंगसंदेश		
	रूपगोस्वामी	हंसदूत + उद्धवसंदेश		हंसदूत = उद्धव + 101 पद्य (शान्ति 2)
	विष्णुदास	मनोदूत		
	विष्णुत्रात	कोकसंदेश		
	मातृदत्त	कामसंदेश		
	नारायण	सुभगसंदेश		
17c	माधव कवीन्द्र	उद्धवदूत		
	रुद्रन्यायपंचानन	भ्रमरदूत + पिकदूत		पिक = शार्दूल + 31 पद्य
18	श्रीकृष्णदेव	भृंगदूत		[भृंगदूत - गंगानन्द ई.30 16c]
1645	श्रीकृष्णसार्वभौम	पदांकदूत		
	रामपाणिवाद	सारिकासंदेश		
	पुन्नशेरि श्रीधरन् नंबी	नीलकंठ सन्देश		
	अज्ञात	चातकसंदेश		
	तैलंग व्रजनाथ	मनोदूत		[विष्णुदास - वसन्ततिलका ई.30 101 पद्य]
20	रामावतार	मुद्गरदूतम्		
	श्रीकृष्ण पंचानन	वातदूतम्		
	विनयप्रभु	चन्द्रदूतम्		
	श्रीकृष्णतर्कालंकार	चन्द्रदूत		
	परमेश्वर झा	यक्षसमागमकाव्य		+ शुकसंदेश - लक्ष्मीदास

प्राकृत गीतिकाव्य

① गाथासप्तशती (गाहासत्तसई) - हाल (100 AD)
- हाल दक्षिण भारत प्रतिष्ठानपुर के सातवाहन राजा थे।
- शृङ्गार (700 पद्य) / 6 प्रधान + 430 पद्य ...
- आर्या + गाथा (...)

अन्य

① घटकर्पर (घटखर्पर काव्य) [विक्रम के ...]
- 22 पद्य + अन्त्यानुप्रास [पत्नी पति के पास मेघ को ...]
- 8 टीकाएँ (12 टीका-...) ... (... - घटकर्परकुलक + ... घटकर्पर + घटकर्पर...)
  - अभिनवगुप्त - पहला नाम + टीका (घटकर्परकुलक)
  - दिवाकर (II नाम) (घटकर्परकाव्य)
  - गोविन्द ज्योतिर्विद् - (घटकर्पर कथा)
  - + भरतमल्लिक + शंकर + ताराचन्द्र + जीवानन्द + गोवर्धन + वैद्यनाथ

② भर्तृहरि के शतक
- चीनी यात्री इत्सिंग ने मृत्युकाल - 651 (वैयाकरण ...)
  → वाक्यपदीयम्
- हरिहरोपाध्याय (15वीं) भर्तृहरिनिर्वेद नाटक लिखा

(क) शृङ्गार शतक

(ख) वैराग्यशतक

(ग) नीतिशतक

प्रभाव परम्परा (संस्कृतसाहित्य)

- भल्लटशतक (8C) - आनन्दवर्धन उद्धृत [परवर्ती ...]
- शिल्हणकृत शान्तिशतक
- नीलकण्ठ दीक्षित - वैराग्यशतक
- कुसुमदेव - दृष्टान्तशतक
- सोमपाल - शृङ्गारवैराग्य तरङ्गिणी
- धनदराज - नीतिशतक, शृंगारशतक, वैराग्यशतक
- देवीशतक - आनन्दवर्धन (स्तुतिकाव्य)

③ अमरुकशतक [700-750]

- शृङ्गार प्रधान
- 90-114) पद्य प्राप्त
  मालव नरेश अर्जुनवर्मन
  टीका - रसिकसंजीवनी (अर्जुनवर्मदेव) प्राप्तिकाल - 1215

- अमरुक राजा मृत - शंकराचार्य प्रवेश - मण्डनमिश्र की पत्नी भारती को उत्तर
  / - अमरुक नामक कवि
  टीका अन्य - कैरतराज - वेमभूपाल - शृङ्गारदीपिका

- अनुकरण हिन्दी बिहारी + पद्माकर
- आनन्दवर्धन ने इसके प्रत्येक पद्य को महाकाव्य बताया

④ बिल्हण - चौरपञ्चाशिका

- वसन्ततिलका 50 पद्य
- प्रत्येक पद्य अद्यापि से प्रारम्भ
- शृङ्गार

⑤ जयदेव गीतगोविन्द (प्रबन्धकाव्य)

- 12वीं - लक्ष्मणसेन (1180-1206)
- 12 सर्ग / 24 प्रबन्ध (प्रथमसर्ग - दशावतार आरम्भ)
- गीत अन्त्यानुप्रास (तुकबन्दी) + ध्रुवपद (पदावृत्ति)

टिप्पणी -

- विलियम जोन्स - 'ग्राम्य नाटक' (Pastoral Drama)
- लासेन 'गीति नाटक' Lyric Dram'
- फॉन श्रोएडर 'परिष्कृत यात्रा' 'Refined Yatra'
- पिशेल 'संगीत नाटक Melo Drama)

- बंगाल केन्दुली में इनकी स्मृति में पौषशुक्लसप्तमी में उत्सव रात्रि
- प्रतापरुद्रदेव राजा (1499) - वैष्णव + नर्तक - इन्हें संगीत सीखें

टीकाएँ 35

कुम्भकर्ण (1563), शंकरमिश्र (1759), वनमालीभट्ट।

आधार पर

Ⓐ मैसूर नरेश चिक्कदेवराय (1672-1704 ई) गीतगोपाल लिखा

(ख) एडविन आर्नल्ड - The Song Celestial (बुद्ध (The Light of Asia)) अंग्रेजी अनुवाद

(ग) रूकर्ट + देलबर्ग ने जर्मन अनुवाद

⑥ गोवर्धनाचार्य - आर्यासप्तशती
- 700 पद्य (श्रृङ्गार)
- परिच्छेदों = व्रज्या नाम दिया

⑦ पं. राज जगन्नाथ भामिनिविलास (17वीं 1590-1670)
- आन्ध्री तैलंग ब्राह्मण (पिता पेरुभट्ट + माता लक्ष्मी)
- दाराशिकोह (शाहजहाँपुत्र) को शिक्षा दी
- विं - अप्पयदीक्षित + भट्टोजिदीक्षित वाहिकृत

रचनाएँ - रसगंगाधर, चित्रमीमांसाखण्डन
स्तोत्र - गंगा (पीयूष) + अमृत + सुधा + लक्ष्मी + करुणा) लहरी
व्याकरण - प्रौढमनोरमाखण्डन
मुक्तक - भामिनीविलास
प्रशस्तिकाव्य - आसफ विलास (नूरजहाँ-भाई) + प्राणाभरण (कामरूपनरेश)
- जगदाभरण (उदयपुर राजा जगत सिंह)

भामिनिविलास
- मुक्तक पद्य संग्रह
- 4 भाग (विलास) अन्योक्ति /प्रस्ताविक + श्रृङ्गार + करुण + शान्त
  सिंह + हंस कमल आदि || श्रृङ्गारविलास || करुणविलास || शान्तविलास

⑧ क्षेमेन्द्र के लघुकाव्य

(क) मुक्तक (उपदेशात्मक) - चतुर्वर्गसंग्रह (101 अनुष्टुप्)
- चारुचर्या
- दर्पदलन
- नीतिकल्पतरु

(ख) व्यंग्य / विडम्बनपरक / यथार्थ चित्रण -
- सेव्यसेवकोपदेश (61 पद्य) - देशोपदेश (298) 8 उपदेश
- कलाविलास (10 सर्ग - दंभ, लोभ, काम..) - नर्ममाला 3 अध्याय
- समयमातृका (1050 CE, 8 समय विभाजित)

गीतगोविन्द रागकाव्य परम्परा

- 12 सर्ग + आरम्भ शार्दूल वि० / वसंततिलक
- अनेक – गीतगोविंद को महाकाव्य कहा

15c	कल्याण	गीतगङ्गाधर
15	श्याम	गीतपीतवसनम्
16	रामभट्ट	गीतगिरीशम्
16	सोमनाथ मिश्र	कृष्णगीतम्
17	~~रामगीतम् गोविन्दम्~~ जयदेव	रामगीतगोविंदम्
	नंजराज	संगीतगंगाधर
	प्रभाकर शुक्ल	गीतराघवम्
	भानुदत्त मिश्र	गीतगौरीपति
19	जयनारायण घोषाल	पार्वतीगीतम्
20	राधावल्लभ	धीवरगीति / गीतधीवर

आर्यासप्तशती परम्परा

	विश्वेश्वर पाण्डेय	सप्तशती
2018	पं वागीश शास्त्री	राधासप्तशती
	शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी	स्फूर्तिसप्तशती

स्तोत्रकाव्य परम्परा

प्राचीन

- दुर्वासाऋषिकृत → त्रिपुर महिम्नस्तोत्र
  - मानसपूजात्मपद्धति
  - ललितास्तवरत्न
- रावण – शिवस्तुति + शिवताण्डवस्तोत्र
- कृष्णापुत्र साम्ब – साम्बपंचाशिका

(1) पुष्पदन्त : शिवमहिम्नस्तोत्र (9८ ई पूर्व)
- शिखरिणी छन्द 40 पद्य
- नर्मदा नदी - अमरेश्वरमंदिर आधार अंकीर्ण
- कश्मीरी कुछ – 400 CE

(2) मयूरभट्ट – सूर्यशतक
- 7 वीं पूर्वार्ध
- 100 पद्य । स्रग्धरा छन्द

(3) बाणभट्ट – चण्डीशतक
- 100 पद्य स्रग्धरा

(4) शङ्कराचार्य के स्तोत्र

(क) शिवपराधक्षमापणस्तोत्र

(ख) देव्यपराधक्षमापणस्तोत्र

(ग) चर्पटपञ्जरिकास्तोत्र (भजगोविन्दम्)

(घ) आनन्दलहरी (20 पद्य) + सौन्दर्य/ 100 शिखरिणी

(ङ) अष्टाष्टक

(च) त्रिपुरसुन्दरी

अन्य वेदान्त विषयक
- परब्रह्मस्तोत्र
- निर्वाणषट्कम् (शिवोऽहं - शिवोऽहम्)
- साधनपञ्चकम्
- कौपीनपञ्चकम् (कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः)
- द्वादशपञ्जरिका (मोहमुद्गर)
- कनकधारास्तव : (22 पद्य

जैन बौद्ध स्तोत्र

100CE	अश्वघोष	गाण्डीस्तोत्रगाथा	नगाड़े पीटकर धार्मिक उपदेश
200CE	जैन समन्तभद्र	स्वयम्भूस्तोत्र + देवागमस्तोत्र + युक्त्यनुशासन + जिनशतक	143 (24 तीर्थंकर) से
	सिद्धसेन दिवाकर	कल्याणमन्दिरस्तोत्र	32-32 पद्य के 32 स्तोत्र but Now 21 प्राप्त
मयूरकाल	मानतुङ्ग (मातङ्गदिवाकर)	भक्तामरस्तोत्र	ऋषभदेव स्तुति / 48 पद्य वसन्ततिलका दिग+श्वे
	कुमुदचन्द्र	कल्याणमन्दिरस्तोत्र	44 पद्य (तीर्थंकर)
	हर्षवर्धन	अष्टमहाश्रीचैत्य + सुप्रभातस्तोत्र	
8 C	सर्वज्ञमित्र (कश्मीरी)	स्रग्धरास्तोत्र	तारादेवी 37
	वज्रदत्त	लोकेश्वरशतक	अवलोकितेश्वर की स्तुति की
1245	रामचन्द्र	भक्तिशतक	में बुद्ध की स्तुति की

अन्यस्तोत्र

जगन्नाथ (लहरी	अमृतलहरी (10 पद्य - यमुनास्तुति) लक्ष्मी (शिख. 41) गंगा (52 - शि.	सुधा (सूर्य स्रग्धरा 30 पद्य करुणा (विष्णु - 43/55/60)
उमापति द्विवेदी	शिवस्तुति + वीरविंशतिका →	अज्ञात - हनुमल्लाङ्गूलस्तोत्र
रामावतार	आकृतिशतक	(स्रग्धरा - बाण/मयूर शतकसमान)

सुभाषित ग्रन्थ

रूपगोस्वामी	पद्यावली	386 पद्य + 125 कवि (ढाका Un. प्रका)
जल्हण आचार्य	सूक्तिमुक्तावली	
वेदान्तदेशिक	सुभाषितनीवी	
अमितगति	सुभाषितरत्नसन्दोह	(जैनधर्म सम्बद्ध)
सायणाचार्य	सुभाषितसुधानिधि + पुरुषार्थसुधानिधि (व्यास (ग्रन्थ) ... आदि)	

सुभाषित संग्रह

(1) कवीन्द्रवचनसमुच्चय (विद्याकर कृत)
- 1100 में संकलित (आज केवल)
- पाल संरक्षण

(2) सदुक्तिकर्णामृत (श्रीधरदास)
- लक्ष्मणसेन (बंगाल) के धर्माध्यक्ष
- 1205 में
- 485 कवियों (वसुकल्प, योगेश्वर, वल्लभदेव etc.)
- 5 प्रवाह विभाजित (अमर + शृङ्गार + चाटु + अपदेश + उच्चावच)
  प्रवाह → वीचि → 5-5 पद्य

(3) सूक्ति मुक्तावली (जल्हण कृत) / सुभाषितमुक्तावली
- 1257 भानुकवि के द्वारा संकलित

(4) शार्ङ्गधरपद्धति
- 1363 (रणथम्भौर दुर्ग)
- 6300 | प्राप्त - 4689

(5) सुभाषितावली (वल्लभदेव कृत)
- 15वीं
- 350 कवियों -

(6) सुभाषितरत्नभाण्डागार (सबसे बड़ा) [निर्णयसागर + वेंकटेश्वर प्रेस]
- 10,000 < पद्य
- 7 प्रकरण (मंगलाचरण + सामान्य + राजा + चित्र + अन्योक्ति + नवरस + संकीर्ण
- लुडविक - 4 खण्ड अंग्रेजी अनुवाद सहित - 'महासुभाषितसंग्रह' प्रकाशित करवाया।

गद्य तथा चम्पू काव्य

गद्य परम्परा

- वैदिक गद्य (गद्यात्मको यजुः)
- शिलालेखीय गद्य (गिरनार)
- शास्त्रीय (महाभाष्य + अर्थशास्त्र)
- संवादात्मक (उपनिषद)
- काव्यात्मक

गद्य प्रकार

- मुक्तक (समासरहित) • वृत्तगन्धि (छन्द/लयवत्)
- उत्कलिकाप्राय (दीर्घसमास) • चूर्णक (अल्पसमास)

आद्यं समासरहितं वृत्तभागयुतं परम्।
अन्यद्दीर्घसमासाढ्यं तुर्यं चाल्पसमासकम्। साहित्य ॥

गद्य लक्षण

'अनियताक्षरावसानम्' 'गद्यम्'

गद्यकाव्य परम्परा

↳ पतंजलि – वासवदत्ता + सुमनोत्तरा + भैमरथी (उल्लेख)
↳ भोज – वररुचि की चारुमती (उल्लेख)
— वल्लभदेव - सुभाषित में पद्य (वररुचि)
↳ धनपाल - तरंगवतीकथा (कालिदास से पूर्व)
↳ राजशेखर – (रामिल + सोमिल) कृत 'शूद्रककथा (उल्लेख)
↳ बाणभट्ट - भट्टारहरिचंद्र (उल्लेख)
↳ शीलाभट्टारिक (वहीं 4/91)
↳ दण्डी - मनोवती (अवन्तिसुन्दरीकथायाम् अतिनिबिडम्।

गद्यकाव्य भेद

कथा	आख्यायिका
प्रबन्धकल्पना गद्यद्वारा सरस वक्त्र अपवक्त्र छन्द	आख्यायिकोपलब्धार्था कविवंश वर्णन अनुवास उच्छ्वास

कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम् ॥
क्वचिदत्र भवेदार्या क्वचिद्वक्त्रापवक्त्रके ॥६
आदौ पद्यैर्नमस्कारः खलादेर्वृत्त कीर्तनम् ॥

आख्यायिका कथावत्स्यादकवेर्वंशानुकीर्तनम् ।
अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं पद्यं क्वचित्क्वचित् ॥
कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते ।
आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसा येन केनचित् ॥
अन्यापदेशेनाश्वासमुखे भाव्यर्थसूचनम् ॥६

① दण्डी (550 – 600)
काल – पूर्व – लक्ष्मलक्ष्मीं तनोति (काव्यादर्श 1/45) (शाकु. 1/20)
उत्तर – काव्यादर्श आधारित राजसेन कृत 'स्वभाषालंकार' (840)

तीन रचनाएँ
शार्ङ्गधर पद्धति (174)
त्रयोग्नयस्त्रयो वेदास्त्रयो देवास्त्रयो गुणाः ।
त्रयोदण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः ॥

(क) काव्यादर्श
– 3 परिच्छेद (काव्यशास्त्रीय)

(क) दशकुमारचरित (अद्भुत कथा ग्रंथ है।
- गद्यकाव्य (कथा + आख्यायिका)
- 3 खंड (पूर्वपीठिका 5 + मध्य भाग 8 + उपसंहार)
  दण्डी के हैं (मत) अन्य प्रक्षिप्त

- 1250 तेलगू अनुवाद

- टीकाएँ → शिवराम पं. - भूषण
  (मध्य भाग पर ही) कवीन्द्राचार्य - पदचन्द्रिका
  भानुचन्द्र - लघुदीपिका

कथानक राजहंस - वसुमति
राजवाहन + 7 मंत्री + 2 मिथिलानरेश (प्रहारवर्मा)
अपहारवर्मा (उ.2), उपहारवर्मा (3) अर्थपाल (4) प्रमति (5)
मित्रगुप्त (6) मन्त्रगुप्त (7) विश्रुत (8)
+ सोमदत्त + पुष्पोद्भव

(ख) अवन्तिसुन्दरीकथा।
- मालव नरेश अवन्तिसुन्दरी की प्रणय
- 1924 - MR Kavi -
- 1954 - पूर्ण प्रकाशन (तिरुवनन्तपुरम्)
- बलदेव उपाध्याय - इस पर ही 'दण्डिनः पदलालित्यम्' सूक्ति प्रचलित

② सुबन्धु (550 - 600)
- वासवदत्ता एकमात्र
- हर्षचरित (बाण) - कविनामगलद्दर्पो नूनं वासवदत्तया।
- प्रत्यक्षरश्लेषमय प्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधिर्निबन्धनम्
- गौडीरीति
- नायक चिन्तामणि पुत्र कंदर्पकेतु - नायिका वासवदत्ता
  स्वप्न खोज में निकलना (राजा शृंगार)

③ बाणभट्ट (606 - 648)

- शिलादित्य हर्ष का वर्णन
  - स्थाण्वीश्वर (थानेश्वर)

रचनाएँ

- चण्डीशतक (दुर्गास्तुति)
- पार्वतीपरिणय नाटक

(क) हर्षचरित (आख्यायिका)

- 8 उच्छ्वास
- वक्त्र अपरवक्त्र छन्द प्रयोग
- कुल को अपूर्ण माना

(ख) कादम्बरी कथा

- अपूर्ण थी | पुत्र पुलिन्दभट्ट / भूषणभट्ट ने की पूर्ण
- पूर्वार्द्ध (बाण) + उत्तरार्द्ध (पुत्र)

पुण्डरीक + चन्द्रमा

महाश्वेता — प्रेम → शाप → वैशम्पायन + चन्द्रापीड — कादम्बरी → जाबालि

शुक + शूद्रक

④ धनपालकृत - तिलकमंजरी (1000 CE) - (जैन कवि)

- राजा मुंज + भोज (आश्रय) → सरस्वती उपाधि
- नायक (हरिवाहन) + नायिका (तिलकमंजरी)
  सहनायक (समरकेतु) + मलयसुन्दरी

स्रोत [मेरुतुंग - प्रबन्धचिन्तामणि
प्रभाचन्द्र - प्रभावकचरित

अन्य रचनाएँ - संस्कृतनाममाला, पाइअलच्छीनाममाला

- ऋषभपञ्चाशिका (स्तुति)
- स्तोत्र - श्रीवीरस्तुति वीरस्तुति

अन्य गद्यकार

11c	वादीभसिंह	11 लम्भक	गद्यचिन्तामणि (आख्यायिका) + तमिल निवासी (दिगम्बर) 11 लम्भक / 5 अन्य - स्याद्वादसिद्धि + नवपदार्थ निश्चय
14c	मेरुतुंग	11 प्रबन्ध	प्रबन्ध चिन्तामणि (ऐतिहासिक महापुरुषों + कवियों
12c	प्रभाचन्द्र		गद्यकथाकोश ॥ 81 कथा
13c	जिनभद्र		प्रबन्धावली
14c	राजशेखरसूरि		प्रबन्धकोश / चतुर्विंशति प्रबन्ध
1450 CE	वामनभट्टबाण	वत्सगोत्रीय (कोमटि पु.)	वेमभूपाल-चरित (आख्यायिका) तेलंगाना शासक वेमभूपाल पर अन्य काव्य ग्रन्थ - अमरुकपर शृंगारमंजरी टीका, नलाभ्युदय + रघुनाथ-चरित (30) + पार्वतीपरिणय नाटक + शब्द चंद्रिका + शब्दरत्नाकर (कोश ग्रन्थ - 2)
18c	विश्वेश्वरपाण्डेय	पूर्व + उत्तर	मन्दारमञ्जरी (पूर्व + उत्तरभाग) + ग्रन्थारम्भ 21 आर्या (कविवर्णन) [शिष्य रचना] अन्य ग्रन्थ - वैयाकरणसिद्धान्त सुधानिधि (अष्टाध्यायी टीका) तर्ककुतूहल + दीधितिप्रवेश (नव्यन्याय ग्रन्थ टीका) शृङ्गारमञ्जरी (सट्टक प्राकृत) + अलंकारकौस्तुभ + रसचन्द्रिका + अलंकारप्रदीप + अलंकार मुक्तावली + कवीन्द्रकण्ठाभरण + रोमावलीशतक + आर्यासप्तशती
1858-1900	अम्बिकादत्त व्यास		शिवराजविजय + (78 Books) (उपन्यास है ऐतिहासिक) गद्य काव्यमीमांसा
1850-1913	हृषीकेशभट्टाचार्य		निबन्धशैली - 'प्रबन्धमञ्जरी' (1930 में प्रकाशित) 11 निबन्ध (संकलित)
1890-1954	क्षमाराव		कथापंचक + ग्राम ज्योति + कथामुक्तावली
	आधुनिक		① T K Ganapati + मथुरादत्त दीक्षित etc.

चम्पूकाव्य

'गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते'
(साहित्यदर्पण 6/336)

गद्यानुबन्धरसमिश्रितपद्यसूक्तिर्हृद्या हि वाद्यकलया कलितेव गीतिः। (1/3)
(भोज - नारायणचम्पू)

① त्रिविक्रमभट्ट - नलचम्पू (900 ई० / 10 CE)
- मदालसाचम्पू
  - नल - 7 उच्छ्वास (नल-दमयन्ती)
- 'यामुन त्रिविक्रम' उपाधि (यमुना श्लोकों) (6/1 ...)

② हरिश्चन्द्र - जीवन्धरचम्पू (897)
कथा-आश्रित - (गुणभद्र - उत्तरपुराण)

③ सोमदेवसूरि यशस्तिलकचम्पू (959)
- पुष्पदन्त ने इसी पर जसहरचरिउ लिखा
- अरिकेसरी III के आश्रित (वाग्भट्ट)
कथा (राजा यशोधर - राजा यशोमितरानी)

④ भोज - नारायणचम्पू (1050 - 1054)
- धारानरेश थे
- किष्किन्धाकाण्ड तक लिखा
- पूराकिया • लक्ष्मणसूरि - युद्धकाण्ड
  • वेंकटराज - उत्तरकाण्ड

⑤ सोड्ढल - उदयसुन्दरीकथा (11 C)
- गुजरात के कायस्थ थे
- 25 पद्य अन्य कवि + बाण (हर्ष) अनुकरण

⑥ अनन्तभट्ट - भारतचम्पू (15 C)
- 12 स्तबक + 1041 पद्य + 200 गद्यखण्ड
- वैदर्भी + महाभारत

आख्यान, निदर्शना, लघुकथा।

भूमिका -
- अश्वमेध यज्ञ में पारिप्लव आख्यान कहे जाते थे।
- 4 प्रकार लोककथा (मनोरंजन), नीतिकथा, पशुकथा, मुग्धकथा।
- गण्डव्यूहसूत्रम् (बौद्ध धार्मिक)
  विमलकीर्ति निर्देश
  कुमारलात कल्पनामण्डितिका

① बृहत्कथा

- गुणाढ्य (78 CE)
  - पैशाची प्राकृत (1 लाख पद्य माने जाते थे)
  - गोदावरी आंध्रराज। सातवाहन काल
  - खं-करा (1070 CE)

नायक
- नरवाहनदत्त
- 28 पत्नियों की प्राप्ति

इसकी वाचनाएँ (Recensions)
- नेपाली (बुधस्वामी - बृहत्कथाश्लोकसंग्रह)
- प्राकृत (संघदासगणि + धर्मदासगणि (वसुदेव हिंडी)
- कश्मीरी (क्षेमेन्द्र - बृहत्कथामञ्जरी
  सोमदेव - कथासरित्सागर)

② बृहत्कथाश्लोकसंग्रह - बुधस्वामी (300-400 CE)

- नेपाल से हरप्रसाद शास्त्री ने प्राप्त - 1893
- 28 सर्ग (4539) अपूर्ण
- लाकोत ने फ्रेंच अनुवाद + प्रकाशन
- 28 पत्नी वृत्तान्त but 6 पत्नी तक ही पहुँचता
  If 28 वृत्तान्त - 100 सर्ग + 25000 पद्य
- प्रेरणा स्रोत (आर्यशूर जातकमाला)

③ वसुदेवहिंडी (500 CE) - संघदास गणि

(अप.)

- नायक - श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव
- 29 विवाह / 29 लंभक में विभाजित #6 प्रकरण
- धर्मदास गणि ने पूर्ति - 100 लंभक + 100 विवाह
  'मध्यखण्ड' भी

(4) बृहत्कथामञ्जरी - क्षेमेन्द्र (1000 - 1100)

- 18 लम्भक / लम्बक → 7500 पद्य
- अन्त में 41 पद्य में (लम्बकसूची + उपसंहार)
- 18 लम्बक - कथापीठ + कथामुख + लावाणक + नरवाहनजन्म + चतुर्दारिका + सूर्यप्रभ + मदनमंचुका + वेला + शशांकवती + विषमशील + मदिरावती + पद्मावती + पंच + रत्नप्रभा + अलंकारवती + शक्तियशा + महाभिषेक + सुरतमंजरी

पत्नी मदनमञ्जुका कलिंग
नायक नरवाहनदत्त

(5) सोमदेव कथासरित्सागर (11C) क्रम बदल नहीं

- सर्वाधिक विशाल
- 1070 CE में रचा
- कश्मीरनरेश पत्नी सूर्यवती के मनोरंजन ....

- 18 लम्भक
- 124 तरंग
- 21388 पद्य
- 761 बड़े पद्य अन्य अनुष्टुप्
- 16 लम्भक = सुरतचरित
- 12 लम्भक (8 - 32 तरंग) = वेतालपंचविंशतिका

बृहत्कथा की प्रशंसा

- हर्षचरित
- नलचम्पू
- तिलकमंजरी
- आर्यासप्तशती

(6) पंचतंत्र

- विन्टरनित्स - संसार में भारत के सिवा अन्य समृद्ध कथासाहित्य नहीं
- मैक्डोनल - कथासाहित्य में पंचतंत्र सबसे महत्वपूर्ण
  - मूल नाम - करटक दमनक रहा होगा।

पंचतंत्र (200 CE Ap.)
- विष्णुशर्मा
- अनुमान 12 खण्ड - शेष 5 बचे

1 मित्रभेद (22 कथा) + 1 मित्रसम्प्राप्ति (6)
काकोलूकीय (16) + लब्धप्रणाश (11)
+ अपरीक्षितकारक (14)
(बिना विचार किये कार्य दुष्परिणाम सहना।)

संस्करण
- तन्त्राख्यायिका (300 CE)
  - डॉ हर्टल 1990 में प्रकाशित
  - 2 प्रतियाँ कश्मीर से शारदालिपि की प्राप्त
- सरलपञ्चतंत्र (1100)
  - जैन विद्वान (अज्ञात रचित)
  - Buhler + Kielhorn = संपादन प्रकाशन
- पूर्णभद्र - का पंचतंत्र (1199 जैन)
  - 'पञ्चाख्यानक' भी
  - 'अलंकृत वर्णना' शुद्धता।
  - ↳ आधारित (1660) मेघविजय - पञ्चाख्यानोद्धार
- दक्षिणभारतीय
  - 5 संस्करण प्राप्त + तमिल श्रोत भी
- नेपाली (1484)
  - 3 संस्करण हस्तलिखित
  - 2 संस्कृत + 1 नेवारी (संस्करण)
- हितोपदेश
  - 4 भाग
  - धवलचंद्राश्रित कविनारायण
  - 17 कथाएँ अन्यत्र नहीं

- उत्तरपश्चिमी
  - हाकी वागनि का गुणाढ्य ने की
  - अब यह मंजरी + सागर (बृहत्कथा) में समाविष्ट

- पहलवी संस्करण
  - खुसरो अनोशरवां (531-79)
    बोरजोई ने अनुवाद रूपान्तरण

पञ्चतंत्र महत्त्व

–

(7) हितोपदेश (1000-1100 CE)

- धवलचंद्राश्रित (बंगाल) नारायणपण्डित कृत
  - पाण्डुलिपि 1373 की मिलती है।
  - रुद्रभट्ट का पद्य उद्धृत है अतः 11 वीं से पहले की नहीं
- 4 भाग (मित्रलाभ + सुहृद्भेद + विग्रह + संधि)
- 43 कथाएँ (4 मुख्य + 39)

(8) वेतालपञ्चविंशतिका (12C AD.) – शिवदास

- संस्करण – जंभलदत्त + वल्लभदेव + सिद्धिकूर (मंगोल)
- 24 + 1 विक्रमादित्य की कथा | अन्य ग्रन्थ – कथार्णव

(9) सिंहासनद्वात्रिंशिका | द्वात्रिंशत्पुत्तलिका | विक्रमचरित (12-13c)

- राजा भोज को भूमि में गड़ा सिंहासन प्राप्त
- 32 पुतलियाँ + 32 कहानियाँ

संस्करण – पद्यात्मक (दक्षिणी)
– गद्यात्मक (जैनकवि क्षेमकर 14वीं)
– चम्पू (दक्षिणी)

∴ दक्षिण में 'विक्रमार्कचरित' से प्रसिद्ध

- इंजर्टन ने हार्वर्ड ओरियंटल सीरिज (1926) में अनुवाद + संस्करण

अन्य परम्परा में विकसित सिंहासनबत्तीसी

(क) अनंतकृत - वीरचरित (30 सर्ग)

(ख) शिवदास - शालिवाहन (गद्ययुक्त 18 सर्ग)

(ग) आनन्द - माधवनलकथा (गद्य (संस्कृत+प्राकृत)

(घ) विक्रमोदय (अज्ञात)

(ङ) पंचदण्डछत्रप्रबन्ध (15c, जैन)

(10) शुकसप्तति

2 संस्करण — सरल (प्राकृतमूल पर) 1897
रिचर्ड श्मिट प्रकाशित — अलंकृत (चिंतामणिभट्ट)(12-13c) 1901

कथा - मदनसेनपत्नी - आहूर-शुक

अनुवाद फारसी
└ नक्शावी - 'तूतीनामा'

(11) कथारत्नाकर - नरचंद्रसूरि (13c)
- गुजरात के वास्तुपालाश्रित
- अनर्घराघव नाटक पर टीका लिखी
• 15 तरंग

(12) प्रबंधचिन्तामणि - मेरुतुंगाचार्य (14c)
• 5 प्रकाश → अनेक प्रबन्ध → प्रत्येक प्रबन्ध एक कहानी राजा...
अन्य - महापुरुषचरित (जैन मुनि पर)

(13) प्रबंधकोश - राजशेखर सूरि (14c)
• चतुर्विंशतिप्रबन्ध (अन्य नाम ग्रंथ)
• 24 महापुरुषों से सम्बद्ध वृत्तान्त

(14) विद्यापति पुरुषपरीक्षा (15c)

- पिता गणपति, ~~माता~~
- अन्य - अवहट्ठ (कीर्तिलता
  - पदावली
- 41 अत्यन्त रोचक कथाएँ (→ 44 भी)
- पृथ्वीराज चौहान से सम्बद्ध 2 कथाएँ -

(15) कथाकौतुक - श्रीवरकवि / श्रीधर (15c
- अब्दुर्रहमान की फारसी - यूसुफजुलेखा का अनुवाद
- 14 कौतुक → 50-150 पद्य
- अन्य - जैनराजतरंगिणी (इतिहास महाकाव्य)

(16) भरकटद्वात्रिंशिका (जैनसाधु विरचित) (14c)
- भरकट (शिवभक्त - सम्प्रदाय)
- देशज शब्द + अपभ्रंश-गीत-गाथाएँ

(17) भोजप्रबन्ध - बल्लालसेन (13c)
- इसी की कथा में कालिदास, माघ, दण्डी, को प्रस्तुत... | मल्लिनाथ भी

(18) कथाप्रकाश - जगन्नाथ मिश्र (17c)
- भारवि की पंक्ति - शकुन्तला का (4th story)

(19) नन्दोपाख्यान / नंदबत्तीसी / नंदबत्रीसी (1654)
- पद्य मिश्रित गद्य
- नंदबत्रीसी - तत्वविजयगणि (हस्त लिखित में)
- नंद नृप कथा (1609) - सहस्रऋषि (1004 पद्य)

(20) ईलरामाकथासार - राजानकभट्टाह्लादकवि
- 13 सर्ग / विविध छंद
- नायक - मुरादबख्श + वेश्या (धूर्त)

अन्य कथाएँ

1580	राजवल्लभ पाठक	भोजप्रबन्ध + चित्रसेन पद्मावती कथा	चित्रसेन पद्मावती + (हंसयुगल थे)
	समयसुंदर	कालिकाचार्य कथा	
	कविकुंजर	राजशेखर चरित / सभारंजन प्रबन्ध	
1600 AD.	महादेव	मुद्राराक्षस कथा	
17 C	अनन्तशर्मा	मुद्राराक्षस पूर्वकथानक	बुंदेलखंड - चित्रभानु आश्रित
बौद्ध 350-400 CE	आर्यशूर	जातकमाला / बोधिसत्त्वावदानमाला	34 कथाएँ / प्रथम जातक व्याघ्रीजातक, केवल पालि जातकों से उद्धृत
100	अव	अवदानशतक	
200		दिव्यावदान	बुद्ध के महनीय कर्म / इसी पर क्षेमेन्द्र (बोधिसत्त्वावदानकल्पलता)
300	कुमारलात	कल्पनामण्डितिका / सूत्रालंकार	
जैन 906 / 12c	सिद्धर्षि	उपमितिभवप्रपञ्च कथा	8 प्रस्ताव + अनुष्टुप / मुख्य अनु. AN कथा, यात्रा प्रकाशित
15c	जिनकीर्ति	चम्पक श्रेष्ठिकथानक + पालगोपालकथानक	
17	हेमविजयगणि	कथारत्नाकर	

History of Sanskrit Literature

1. रूपक (दृश्यकाव्य)
2. व्याकरणशास्त्र
3. काव्यशास्त्र

PART IV

रूपक, सिद्धान्त, उद्भव, विशेषताएँ

- नाटकान्तं कवित्वम् (कवित्व की अंतिम सीमा)
- सन्दर्भेषु दशरूपकं श्रेयः (काव्या-सूत्र 1/3/30)
- न हि रसादृते कश्चित्-अर्थः प्रवर्तते (नाट्यशास्त्र 6/31)
- नाटकं हि भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम् (मालवि० 1/4)

अवस्थानुकृतिर्नाट्यं रूपं दृश्यतयोच्यते।
रूपकं तत्समारोपात् दशधैव रसाश्रयम्॥

→ दृश्यम् ~~तत्राभिनेयम्~~ → श्रव्यं श्रोतव्यमात्रम् (साहित्यदर्पण)
तस्य रूपक संज्ञाहेतुमाह तद्रूपारोपात्तु रूपकम् ।(सा०

नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः।
ईहामृगांकवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश॥(सा०द०)

→ अवस्थानुकृतिर्नाट्यम् (भरत) ~~नृत्यं~~ धर्मीति नाट्यम् (नृत्य गीत वाद्य)

① नाटक

- कथानक - प्रसिद्ध / इतिहास / पुराण
- नायक - विख्यातवंश / राजर्षि (धीरोदात्तयुक्त)
- रस - शृंगार / वीर रस

अन्य विशेषताएँ
(क) अर्थप्रकृति (बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी, कार्य)
(ख) अवस्थाएँ (आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति, फलागम)
(ग) संधियाँ (मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श, निर्वहण)

- अंक → 5 - 10 अंक
→ 10 - महानाटक (बालरामायण, हनुमन्नाटक)
→ अंतिम अंक (अद्भुत रस प्रयोग)

'काव्येषु नाटकं रम्यं, नाटकान्तं कवित्वम्'

अभिनय 4 प्रकार
भवेदभिनयोऽवस्थानुकारः स चतुर्विधः।
आङ्गिको वाचिकश्चैव माहार्यः सात्त्विकस्तथा॥

③ प्रकरण

- कथानक - कविकल्पित
- पात्र - राजपरिवार प्राय नहीं / समाज सामान्य पात्र
- नायक - धीरप्रशान्त - मंत्री / ब्राह्मण / वणिक्
- नायिका 1/2 — कुलीन
  — वेश्या (गणिका)
  - मालतीमाधव (एक नायिका)
  - मृच्छकटिक (2 प्रकार)
- रस - शृङ्गार प्रधान
- भेद - 21 (नाट्यदर्पण)
- <u>संकीर्ण</u> प्रकरण → 'धूर्त, विट, चेट से युक्त'

④ भाण

- धूर्त चरित्र का वर्णन
- रस स्पष्ट नहीं
- मुख, निर्वहण संधि प्रयोग
- 10 संगीत भेद (लास्यांग) प्रयोग
- गुप्तकाल के प्रसिद्ध - पद्मप्राभृतक + धूर्तविटसंवाद + उभयाभिसारिका + पादताडितक
- भावप्रकाशन में 9 भेद (कथानक पर)

⑤ प्रहसन

- हास्यप्रधान
- कथानक कल्पित
- धूर्त पाखण्डी (जैन / बौद्ध साधु + जाति ब्राह्मण)
  - शुद्ध प्रहसन (पाखण्डी, विप्र, चेट, चेटी पात्र)
  - विकृत प्रहसन (नपुंसक, कंचुकी, तपस्वी पात्र)
  - संकीर्ण प्रहसन (धूर्त चरित्र + 13 वीथ्यंग मिश्रण)
    (वीथ्यंग → चमत्कार अभाव)
    → उद्घात्यक, अवलगित, प्रपञ्च, त्रिगत, छल, वाक्केली, अधिबल, गण्ड, अवस्यन्दित, नालिका, असत्प्रलाप, व्याहार, मृदव

5) डिम (4 अंक)

- कथानक प्रसिद्ध
- 3 वृत्तियां (भारती, सात्वती, आरभटी) + कौशिकी निषेध
- हास्य / शृङ्गार नहीं
- मानवेतर नायक (देवता, गंधर्व)
  भूत, पिशाच etc. उद्धत कोटि के 16 पात्र
- रौद्र रस प्रधान (माया, इन्द्रजाल, युद्ध, आगार, सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण)
- 4 अंक, विमर्श संधि नहीं
  उल्लेख भरत — त्रिपुरदाह

6) व्यायोग (1 अंक)

- कथानक इतिहास प्रसिद्ध (भीम, दुर्योधन आदि)
- गर्भ, विमर्श संधि नहीं
- हास्य, शृंगार को छोड़कर अन्य रस
- युद्ध (स्त्री अकारण - अस्त्रीनिमित्त संग्रामः)
- एक दिन की घटना
  भास - मध्यमव्यायोग

7) समवकार

- इतिवृत्त इतिहास पुराण (देवता, दैत्य कथा) पात्र (12)
- 3 वृत्तियाँ (भारती, सात्वती, आरभटी) + कौशिकी ✗
- विमर्श संधि नहीं, बिन्दु अर्थप्रकृति नहीं, प्रवेशक नामक अर्थोपक्षेपक नहीं
- वीर रस
  — नाट्यशास्त्र — समुद्रमंथन
  भास — पंचरात्र (कुछ घटित लक्षण)

8) वीथी (1 अंक) (भाण के समान कुछ)

- 2 संधियाँ (मुख, निर्वहण)
- शृंगार पूर्ण परिपाक न होना
- कौशिकी वृत्ति + 13 तरंग
- वीथी → 'रसों' की माला
  → अनुपलब्ध लक्षण

⑨ अङ्क (1 अंक) (1-3 भी)
- उत्सृष्टिकाङ्क भी (संशय, निवारण)
- इतिहास प्रसिद्ध
- साधारण पात्र
- मुख, निर्वहण सन्धिप्रयोग + भारतीवृत्ति
- करुण रस प्रधान (स्त्री रुदन)
- वाग्युद्ध – जय पराजय

⑩ ईहामृग (4 अंक)
- प्रख्यात + कल्पित
- 3 सन्धि (मुख, प्रतिमुख, निर्वहण)
- नर, देवता रूप में नायक, प्रतिनायक (वध नहीं पर प्रतिरोध)

प्रमुख
└ नाटक + प्रकरण (5 अंक)

उपरूपक   18 उपरूपक
नाटिका त्रोटकं गोष्ठी सट्टकनाट्यरासकम् ।...

उद्भव
- पाणिनि → शिलालिन् + कृशाश्व + कर्मन्द
  - पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः (4/3/110)
  - कर्मन्दकृशाश्वादिनिः (4/3/111)
- महाभाष्य – कंसवध + बालिवध
- अश्वघोष – शारिपुत्रप्रकरण

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला
न स योगो न तत् कर्म नाट्येऽस्मिन्न विद्यते।

रूपकों के पात्र

① नायक

- धनञ्जय → 22 गुण (दशरूपक 2/1-2) + 8 सात्विक गुण शोभा विलास माधुर्य स्थैर्य, तेज, लालित्य, माधुर्य, औदार्य
- धीरोदात्त (महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
  स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥ (वही 2/4-5)
- धीरोद्धत (दर्पमात्सर्यभूयिष्ठो मायाच्छद्मपरायणः।
  धीरोद्धतस्त्वहङ्कारी चलश्चण्डो विकत्थनः॥ (वही 2/5-6)
- धीरललित (निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः) (2/3)
- धीरप्रशान्त (सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः) (2/4)

↳ अनुकूल – पत्नी पर अनुरक्त
↳ दक्षिण – अनेक नायिका अनुराग
↳ शठ – स्त्री को ठगना + अन्यत्र प्रेम
↳ धृष्ट (निर्लज्ज – अपमान प्रेम द्वारे (घृष्ट))

(क) नायक मित्र (शृङ्गार सहायक)

- पीठमर्द (नायिका प्रसन्न करने वाला नायक के अनुकूल बनाना)
- विट (कामशास्त्र / गीत निपुण)
- चेट (नायक-नायिका मिलाने में कुशल)
- विदूषक (विकृत वेश, वचन से हास्य उत्पन्न करने वाला)

(ख) मंत्री (अर्थसहायक)

(ग) कुमार, सुहृद, दण्डनायक (दण्ड सहायक)

(घ) दूत (संवाद सहायक)

(ङ) अंतःपुर में – नपुंसक, किरात, मूक, वामन आदि (दशरूपक 2/44)

③ नायिका

- श्रृंगारप्रधान रूपक में अनिवार्य
- शोभा + कांति + दीप्ति + यौवन (गुण)
  वारह + रूप + वचन + हाव (स्वकांतिता)

प्रकार

(क) सामाजिक व्यवहार
= स्वीया (अपनी) - परकीया (प्रेमिका) - सामान्या (वेश्या/गणिका)

(ख) वय अनुसार
- मुग्धा (युवावस्था में पदार्पण करने वाली) - मध्या - प्रगल्भा (प्रौढ़ा/काम-चतुर)

(ग) मान की दृष्टि से (रूठना)
- धीरा (नायक परकीया- पत्नी नायिका ताने) मानसिक चोट
- अधीरा (क्रोध से कटुवचना)
- धीराधीरा (ताने सुनाती + रोती)

(घ) प्रकृतिगुण
= उत्तमा
- मध्यमा
- अधमा

(ङ) पति के प्रेमानुसार
- ज्येष्ठा - कनिष्ठा

(च) अवस्थानुसार (8)
- स्वाधीनभर्तृका (पतिवश/साथ)
- वासकसज्जा (घर सजाने वाली
- विरहोत्कण्ठिता (प्रतीक्षा)
- खण्डिता (प्रियतम अन्य स्त्री समागम-जानकर ईर्ष्यायुक्त)
- कलहान्तरिता (पति के अपराधी होने पर तिरस्कार करके पछताने वाली)
- प्रोषितभर्तृका (जिसका पति विदेश)
- अभिसारिका (कामपीड़ित होकर नायक के पास जाने वाली या बुलाने वाली)

सहायक
(दूती + दासी + सखी + निम्नकुलीन + धात्री पुत्री, पड़ोसिन)

नायिका के अलंकार

20 अलंकार (अंगज (3) भाव, हाव (आंख, भौंहें), हेला (स्पष्ट रूप से प्रीति का प्रकाशन)
अयत्नज (7) शोभा कान्ति, दीप्ति माधुर्य, प्रगल्भता, औदार्य, धैर्य
स्वभावज (10) लीला, विलास, विच्छित्ति (अल्प सजावट से कान्ति बढ़ना), विभ्रम (हड़बड़ी में आभूषण पहनना) किलकिञ्चित (क्रोध, आँसू, हर्ष, भय मिश्र)
मोट्टायित (प्रियतम के भावों से प्रभावित), कुट्टमित (बाधा करना पर भीतरी आनन्द ऊपरी क्रोध)
बिब्बोक (गर्व, अभिमान), ललित (कोमल, [illegible] अंग विन्यास)
विहृत (अवसर पाकर भी लज्जावश अनुकूल बात न बोलना)

नाट्यवृत्तियाँ

- शृङ्गारे कौशिकी, वीरे सात्वत्यारभटी पुन: ।
रसे रौद्रे च बीभत्से । वृत्ति सर्वत्र भारती ॥

		अनुकृत
• शृङ्गार (सहायक हास्य) - कौशिकी		सामवेद (नृत्य गीत)
• सात्वती - वीर (तदाश्रित अद्भुत)		यजुर्वेद (शौर्य, दया)
• आरभटी - रौद्र (तदाश्रित करुणा) - बीभत्स (" भयानक)		अथर्ववेद (वध, युद्ध इन्द्रजाल)
• भारती - शब्दवृत्ति सभी रसों में		ऋग्वेद (शब्दप्रधान

~~भरत~~

नान्दी

- मांगलिक अनुष्ठान

① या सृष्टि: स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्त: (प्रधान सत्ता है) श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् ॥
यामाहु: सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिन: प्राणवन्त:,
प्रत्यक्षाभि: प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीश: ॥

जल, अग्नि, होता, चन्द्र सूर्य, आकाश, वायु, पृथ्वी, वायु

② उदयनवेन्दुसवर्णा वासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम् ।
पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम् ।

- उदय काल के चन्द्र के ~~धवल के समान~~ धवल
- प्रियतमा को आसव (मदिरा) दे चुकी है ।
- खिले कमल के समान भरी, वसन्त ऋतु के समान कमनीय

प्रस्तावना

- अभि. - सूत्रधार - अलमतिविस्तरेण, आर्ये यदि नेपथ्यविधानमवसितम् इतः...
  - कालिदासग्रथितवस्तुनाभिज्ञानशाकुन्तलनामधेयेन नवेन नाटकेनोपस्थातव्यमस्माभिः

सूत्रधारकृतारम्भैर्नाटकैर्बहुभूमिकैः सपताकैर्यशो लेभे भासो देवकुलैरिव
– बाणभट्ट (हर्ष. 1/15)

भरतवाक्य

प्रवर्तताम् प्रकृतिहिताय पार्थिवः, सरस्वती श्रुतिमहती महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः॥

-

इमामपि महीं कृत्स्नां राजसिंहः प्रशास्तु नः॥

नाटक का उद्भव

जग्राह पाठ्यं ऋग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि॥

1. भरत - ब्रह्मा ने चार वेदों से ग्रहण - पाठ्य, अभिनय, संगीत, रस
2. मैक्समूलर, सिल्वाँ लेवी, फॉन श्रोएडर, हर्टल - संवाद सूक्त
3. Weber + Windish - यूनानी (ग्रीक) (326 से सम्बन्ध (BC))
4. पिशल - कठपुतली नृत्य Puppet Shows
5. डॉ. रिजवे - वीर सिद्धान्त (वीर पूजा)
6. उत्सव सिद्धान्त - यूरोप -
7. ल्यूडर्स + स्टेन कोनो - छायानाटक (छायाचित्र)
   प्राप्त 1243 CE - दूतांगद
8. प्रो. हिलब्रांड - अनुष्ठान

65

भास (300-200 BC) बौद्ध - 300 | T गणपति शास्त्री ने खोजा

- उदयन - प्रतिज्ञायौगन्धरायण + स्वप्नवासवदत्त
- रामायण - प्रतिमा + अभिषेक
- महाभारत - ऊरुभंग, दूतवाक्य, पंचरात्र, दूतघटोत्कच, कर्णभार, मध्यमव्यायोग + बालचरित (कृष्ण)
- लोक कथा - अविमारक + चारुदत्त

समीक्षा ग्रन्थ

- A D Pusalker - Bhasa: A Study.
- Dr. Nemichandra Shastri - महाकवि भास
- V. Venkatachalam - भास

उल्लेख

बाण (650), दण्डी (600-700), वाक्पतिराज (750) + वामन (800)
राजशेखर (900) + अभिनवगुप्त (1000) + भोजदेव (1100)
रामचन्द्रगुणचन्द्र (12c)

(क) प्रतिज्ञायौगन्धरायण (4 अंक) | प्रतिमा (7) भूमिका के कारण | अभिषेक (6) (किष्किं→राम अभि.)

(ख) स्वप्नवासवदत्तम् (6 अंक) (5-स्वप्न)

(ग) ऊरुभंग (करुण प्रधान)

(घ) दूत वाक्य (कृष्ण दूत - 1 अंक)

(ङ) दूतघटोत्कच (अभिमन्यु मृत्योपरान्त, धृतराष्ट्र के पास कृष्ण ने भेजा + करुण + उत्सृष्टिकांक

(च) मध्यमव्यायोग (भीम द्वारा घटोत्कच के हाथ से ब्राह्मण पुत्र रक्षा)

(छ) कर्णभार (ब्राह्मणवेशधारी इन्द्र कवच ---) उत्सृष्टिकांक

(ज) पंचरात्र (3) (समवकार परिवर्तित रूप + द्रोण पाण्डव मिल जाएँ)

(झ) बालचरित (5) हरिवंश पर्व

(ञ) अविमारक (6) प्रकरण + हास्य शृंगार + डा. पुसालकर → नाटक
→ ऋषि शाप से अन्त्यज

(ट) चारुदत्त (4) वसन्तसेना + वाणिज्यजीवी ब्राह्मण (प्रकरण) + अपूर्ण - मृच्छकटिक का आधार ग्रन्थ

② कालिदास

(क) मालविकाग्निमित्रम् (5) नाटक (ऐतिहासिक)

- शुंगवंशीय राजा अग्निमित्र + विदर्भराजकुमारी मालविका

(ख) विक्रमोर्वशीय (5 त्रोटक)
└ उपरूपक (5, 7, 8, 9 अंक होते हैं + देव मनुष्य के मध्य ...)

- राजा पुरूरवा (विक्रम) + दिव्यपात्र उर्वशी प्रेमकथा

स्रोत – ऋग्वेद (10/95) + शतपथ ब्राह्मण (5/1 2)

(ग) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक (7 अंक)

- चतुर्थ अंक मर्म (प्राण) + शृङ्गार प्रधान + अप्रस्तुत विधान

स्रोत (आदिपर्व (67-74) महा.)

- काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला
- कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्

③ शूद्रक – मृच्छकटिक (200 – 300 CE?)

- राजा ..., ब्राह्मण

- स्कन्दपुराण – आंध्रवंशी राजा
  – विक्रमादित्य से 27 वर्ष पूर्व
- डॉ भण्डारकर – आंध्रभृत्य राजा शिमुक ही शूद्रक था
  83 BCE सातवाहन
- टीकाकारों ने उल्लेख ⇒ अमरकोश की क्षीरस्वामी टीका
  → वामनीय वृत्ति में
  → काव्यादर्श पर हृदयंगम

कथानक

- चारुदत्त (4) + राजविप्लव = 10 अंक
- प्रकरण (कल्पित होने के कारण)
- 2 प्रेम (चारुदत्त – वसन्तसेना + गौणशर्विलक – मदनिका)
- प्रारम्भ में परिचय (द्विज, ... वीर, ज्ञानी, हाथियों से द्वंद्वयुद्ध, 110 वर्ष में वानप्रस्थी होकर अग्नि में प्रवेश कर प्राणविसर्जन

(4) विशाखदत्त - मुद्राराक्षस + देवीचन्द्रगुप्त

- सामन्त वटेश्वरदत्त → पृथु राजा (भास्कर दत्त) → विशाखदत्त

- पूर्वी (भरतवाक्य में चन्द्रगुप्त + म्लेच्छ आक्रमण)
(प्रस्तावना में चन्द्रगुप्त + सामन्त)

- 7 अंक का राजनीतिक नाटक
- मुद्रा राक्षस की अंगूठी। मुद्रया गृहीतो राक्षसो मुद्राराक्षसः।

पात्र

→ निपुणक - यम पट। गतानुगत्तर (प्रकृतिचित्त परिज्ञाने निपुणत्वं निपुणकः)

→ शोणोत्तर - प्रतिहारी

→ आहितुण्डिक। विराधगुप्त। जीर्णविष (राक्षस गु.)
(सपेरा) (चर) (सपेरा का नाम)

→ चन्दनदास - मणिकार श्रेष्ठी (राक्षसमित्र)

→ शकटदास (राक्षसमित्र)

→ सिद्धार्थक (चाणक्य) शकट का कृत्रिम मित्र

→ काञ्चुकी - मलयकेतु का जाजलि काञ्चुकी

→ स्तनकलश वैतालिक

चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः।
न शालेः स्तम्बकारिता वप्तुर्गुणमपेक्षते॥

(5) चन्द्रक (5 c Ab.) (लुप्त)
- कल्हण ने लोकप्रियता की चर्चा की
- क्षेमेन्द्र ने औचित्य विचार चर्चा में पद्य उद्धृत किये

(6) चन्द्रगोमिन् - लोकानन्दम्
- इत्सिंग
- कल्हण

(7) चतुर्भाणी (क्र)
गुप्तकाल भाण
- शूद्रक - पद्मप्राभृतक
- ईश्वर - धूर्तविटसंवाद
- वररुचि - उभयाभिसारिका
- श्यामिल - पादताडितक

संस्करण - रामकृष्ण + रामनाथशास्त्री

(8) 20वीं में प्राप्त — यज्ञफलम् + दामरम् + प्रौतिक्रमम्
└ पदनाट्य
— इन्हें भासकृत भी बताया गया

(9) भगवदज्जुकम् (610 पूर्व) (प्रहसन)
— बौद्ध प्रव्राजकाचार्य अपने शिष्य शांडिल्य को खोजने आते हैं।
└ बटु बहु

(10) मत्तविलास प्रहसन (7c)
— राजा महेन्द्रविक्रमरचित
- स्रोत - मामण्डूर शिलालेख (दोनों प्रहसनों उल्लेख - उपरोक्त

(11) भट्टनारायण — वेणीसंहार (एकमात्र प्राप्त) नाटक (700 C)
— उपाधि — मृगराजलक्ष्मा (प्रारम्भ)
— किं - आदिसूर ने 5 परिवारों के वैदिक धर्म प्रचार - उनमें ये थे।
└ 650
- 6 अंक
कथानक — भीम दुःशासन और दुर्योधन को मारकर द्रौपदी की चोटी बांधते हैं।
वेणी = चोटी, संहार = सवाँरना

(12) हर्षवर्धन (606—648)
— ह्वेनसांग इन्हीं के काल में आया
— पिता - प्रभाकरवर्धन (हूण हरिण केसरी)

3 रूपक — प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्द

प्रियदर्शिका	रत्नावली	नागानन्द
- 4 अंक नाटिका - वत्सनरेश उदयन + आरण्यिका (प्रियदर्शिका) प्रेम	- 4 अंक (नाटिका) - उदयन + सिंहल रत्नावली प्रेम	• 5 अंक नाटक • बोधिसत्त्व राजा की कथा • जीमूतवाहन स्वबलि देकर शंखचूड नामक नाग की रक्षा करता स्रोत — वेताल पं. + बृहत्कथा • शांत अंगी (शृंगार भी

भवभूति (680-750)

- राजशेखर ने इन्हें वाल्मीकि अवतार कहा = उत्तर
- गोवर्धनाचार्य - आर्यासप्तशती में - 'भवभूति वाणी = पर्वतीय श्रुति'
- विदर्भ देश (पद्मपुर)

(क) मालतीमाधव प्रकरण
- 10 अंक
- विदर्भराज के मन्त्रीपुत्र माधव + पद्मावती नरेश के मन्त्री पुत्री मालती + मकरन्द + मदयन्तिका (प्रणयकथा)

(ख) महावीरचरित
- 7 अंक नाटक (बाल → युद्ध = 6 काण्ड)

(ग) उत्तररामचरित नाटक (7 अंक)
- सीतानिर्वासन + तृतीय अंक छाया (3)
- सुखान्त
- करुणरस प्रधान

(14) भीमदेव (भीमट)
- 5 नाटक लिखे (लुप्त
- तीन का उल्लेख - स्वप्नदशानन, प्रतिज्ञाचाणक्य, मनोरमावत्सराज

(15) वीणावासवदत्तम् (15c Ab.)
- उदयन कथाश्रित
- 8 अंक प्राप्त + 2 अंक (शायद लुप्त)

(16) दिङ्नाग - कुन्दमाला (6 अंक) नाटक (रामकथा - लवकुश)
- 1923 में रामकृष्ण ने सम्पादन प्रकाशन
- अन्य नाम धीरनाग / वीरनाग / नागय्य / रविनाग
  दिङ्नाग (मैसूर की प्रतिलिपि में)

800 A.D.C	मुरारि	अनर्घराघव	नाटक(7)	महाकवि (बाल वाल्मीकि) रामायण (विश्वामित्र, ...)
800-850	शक्तिभद्र (शंकराचार्य शिष्य अनुमान)	आश्चर्यचूडामणि (रा॰)	नाटक (7)	रामकथा कृत्य - उन्मादवासवदत्ता नाटक (अनुपलब्ध)
880-930	राजशेखर (यायावरीय)	बालरामायण बालभारत (2 अंक प्राप्त) विद्धशालभञ्जिका कर्पूरमञ्जरी	10 (नाटक) नाटिका सट्टक(4)	शार्दूल + अनुप्रास ऊपरी स्वयंवर, द्यूत क्रीडा, चीरहरण विद्याधरमल्ल + अपनी प्रेमिका को शालभञ्जिका (गुड़िया) के रूप में प्राप्त करना चन्द्रपाल + कुन्तल (राजकु.) कर्पूरमञ्जरी
880-930	क्षेमीश्वर	चण्डकौशिक नैषधानन्द	नाटक (5) नाटक(7)	मार्कण्डेय पुराण नल + दमयन्ती
1050 C.A.D.	पद्यात्मक ही है (अज्ञात) संस्करण: पाश्चिमभारतीय, पूर्व भारतीय	हनुमन्नाटक • दामोदरमिश्र → • मधुसूदनमिश्र	14 अंक/568 9 अंक/758	सूत्रधार + विष्कम्भक नहीं पिशल + ल्यूडर्स (छायानाटक का प्रमाण)
	जयदेव (गीतगोविन्द + नैयायिक भिन्न)	प्रसन्नराघवनाटक + (चन्द्रालोक)	7 अंक (नाटक)	बालकाण्ड (4) + रावण बाणासुर (?) etc - प्रसाद गुण
1200 CE	वत्सराज	कर्पूरचरित भाण हास्यचूडामणि प्रहसन किरातार्जुनीय व्यायोग समुद्रमंथन समवकार रुक्मणीहरण ईहामृग त्रिपुरदाह डिम	 3 अंक 4 अंक	(एक जुआरी द्यूत क्रीडा (परमर्दिदेव के समय) आचार्य ज्ञानराशि का उपहास शिव + अर्जुन युद्ध (भरत ने वर्णन समुद्रमंथन से देवासुर...) शिशुपाल + रुक्मी स्पर्धा + कृष्ण द्वारा हरण शिव द्वारा त्रिपुरासुर विनाश
1013	कृष्णमिश्र	प्रबोधचन्द्रोदय (दार्शनिक प्रतीकात्मक)	6 अंक (नाटक)	कीर्तिवर्मा का अभिलेख मिला उनके मंत्री वत्सराज थे। - शांतप्रधान + अद्वैतवेदान्त प्रति.
1230	यशपाल	मोहराजपराजय	5 अंक (नाटक)	हेमचन्द्र से कुमारपाल दीक्षा
13 C	वेदान्तदेशिक	संकल्पसूर्योदय	10 (नाटक)	मोह की पराजय + ज्ञान उदय
1524-160	कर्णपूर (परमानन्ददास) (चैतन्य के अनुयायी)	चैतन्यचन्द्रोदय		

शारद्

काल	लेखक	कृति	प्रकार	विशेष
1684-1710	आनन्दराय मखिन् (शरभोजी के प्रधानमंत्री) तंजावुर	विद्यापरिणय	नाटक	अद्वैत + शृङ्गार सामञ्जस्य
		जीवानन्दन	"	शिव की भक्ति एवं मोक्ष प्राप्ति.
	नल्लाध्वरिन्	चित्तवृत्तिकल्याण जीवन्मुक्तिकल्याण राजा जीव (पत्नी के साथ)	जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्थाएं	श्रीरंगम् - 1944 में प्रकाशित विश्लेषण शैली का शोधकार्य
1173-6	रामचन्द्र	कौमुदीमित्रानन्द + मल्लिकामकरन्द (प्रक.)	प्रकरण	
12c	यशश्चन्द्र	मुद्रितकुमुदचन्द्र	"	धार्मिक शास्त्रार्थ
13c	रामभद्रमुनि	प्रबुद्धरौहिणेय	"	
17c.	उद्दण्डकवि	मल्लिकामारुत	(10) "	
1-4c.	कृष्णमाचार्य	भगवदज्जुकीय	प्रहसन	
600-30	महेन्द्रविक्रमवर्मा (पहले-जैन → शैव)	मत्तविलास	1 अंक "	3 दृश्य में विभक्त
12c.	~~लटकमेलक~~ शंखधर	लटकमेलक (धूर्तसमागम)	"	गोविन्दचन्द्र के राजकवि थे।
	वत्सराज	हास्यचूडामणि	2 अंक "	पैरोडी (विडम्ब काव्य) भी ?
1295-1350	कवि ज्योतिरीश्वर	धूर्तसमागम	2 अंक "	अन्य → वर्णरत्नाकर (मैथिली) → पञ्चसायक (कामशास्त्र)
1600	शंकरमिश्र	गौरीदिगम्बर	2 अंक "	धार्मिक (भवानी मिश्र के पुत्र)
16c AP.	जगदीश्वर भट्टाचार्य	हास्यार्णव	"	
	रत्नकुमार राजमणि शास्त्री	चतुर्भाणी	भाण	पूर्वोक्तम् -
700 CE	चन्द्र	लोकानन्द		तिब्बती भाषा
800 CE	अनंगहर्ष	तापसवत्सराज	6 अंक नाटक	उदयन -
(895-955)	कुलशेखरवर्मन्	तपती संवरण	(6) "	
		सुभद्राधनञ्जय	(5) "	
	बिल्हण	कर्णसुन्दरी		चालुक्य नरेश कर्णदेव के विवाह का वर्णन

12 C	रामचन्द्र (यादवाभ्युदय + राघवाभ्युदय)	नलविलास, सत्यहरिश्चन्द्र, निर्भयभीम, रघुविलास (8)		(रूपक) + कौमुदीमित्रानन्द, मल्लिकामकरंद, निर्भयभीम व्यायोग
13	मदनपाल	पारिजातमंजरी	(नाटिका)	अर्जुनवर्मा की प्रेमकथा + ओज
	जयसिंह सूरि	हम्मीरमदमर्दन नाटक	5 अंक (नाटक)	
	रविवर्मा (केरल)	प्रद्युम्नाभ्युदय	(5) नाटक	
1420	वामनभट्ट बाण	पार्वतीपरिणय	5 अंक	
1500	रूपगोस्वामी	विदग्धमाधव		
15 C	हरिहर	भर्तृहरिनिर्वेद	5 अंक	
17 C	महादेव	अद्भुतदर्पण	10 अंक	
17 C	नीलकंठदीक्षित	नलचरित	6 अंक	
18 C	रामवर्मा	रुक्मणीपरिणय		
12 C	रुद्रदेव (काकतीयवंश)	ययाति चरित नाटक, उषारागोदय नाटिका		
	रामभद्र	प्रबुद्धरौहिणेय	6 अंक	
	~~मदन~~ बालचन्द्रसूरि	~~पारिजात~~ करुणावज्रायुध	1 अंक	(श्रीगदित)
	सुभट	दूतांगद नाटक	4 अंक	
13	हरिहर	शंखपराभव व्यायोग		
13	विजयपाल	द्रौपदीस्वयंवर	2 अंक	(श्रीगदित)
13	विद्यानाथ	प्रतापरुद्रकल्याण		ऐतिहासिक
(13-14 C)	हस्तिमल्ल	विक्रान्तकौरव नाटक, मैथिलीकल्याण, अंजनापवनंजय, सुभद्रा		अन्य – कन्नड़ – आदिपुराण + शिवपुराण
	वेंकटनाथ	संकल्पसूर्योदय		प्रतीकात्मक

	~~वीरधर्मदर्पण~~ परशुराम नारायण पाटणकर	वीरधर्मदर्पण		वीर अभिमन्यु की कथा पर
1920	पञ्चानन तर्करत्न	अमरमंगल कलंकमोचन		• प्रताप सिंह के पुत्र अमरसिंह पर
	अम्बिकादत्तव्यास	सामवत		
1937	मथुराप्रसाददीक्षित	भारतविजय		
	महालिंगशास्त्री	10 प्रहसन + नाटक कौण्डिन्य प्रहसन, कलिप्रादुर्भाव, प्रतिज्ञाकौटिल्य	कौण्डि	
1944	हरिदाससिद्धान्त वागीश	मिवारप्रताप + शिवाजी चरित		
1886-1965	मूलशंकरयाज्ञिक	प्रतापविजय संयोगितास्वयंवर छत्रपतिसाम्राज्य		
	वेंकटराघवन्	अनारकली, आषाढस्यप्रथमे दिवसे, अवन्तिसुन्दरी		
	यतीन्द्र विमलचौधरी	40 रूपक		
	श्रीराम वेलणकर	रानीदुर्गावती नाटक		
	परीक्षित शर्मा	27 नाटक (परीक्षिन्नाटकचक्र)		
	वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य	शार्दूलशकट वेष्टनव्यायोग शरणार्थिसंवाद लक्ष्मणव्यायोग मार्जिनाचातुर्य		- परिवार - क्रिमालिकाप्रसाद बंगाल के शरणार्थियों पर नक्सलपंथियों पर कलीबाबा + 40 और
	अभिराजराजेन्द्रमिश्र नाट्य. 1972 नाट्यकोष्ठी	62 एकांकी संस्कृत 'पुष्कलमाला' नाटकपञ्चगव्य नाट्यपञ्चामृत चतुष्पथीय नाट्यसप्तपद		

व्याकरण शास्त्र

भूमिका

- 'व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते येन शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्'
  (शब्दों की व्युत्पत्ति की व्याख्या)

- वैदिक युग – प्रतिपद (पाठ) / सामान्य – (विशेष नियमों से शब्द-ज्ञान देना)

- वेदाङ्ग – मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।
  – प्रातिशाख्य

- 'निरुक्त (700 BC Ap.)

- (तैत्तरीय संहिता 6/4/7) = ब्रह्मा + बृहस्पति द्वारा व्याकरणशास्त्र का परिष्कार- इन्द्र ने

- बोपदेव (13 C.E.) – कविकल्पद्रुम ↳ व्याकरणं अधीयते विदन्ति वा इति वैयाकरणाः
  ↳ इन्द्रश्च काशकृत्स्नापिशली शाकटायनः ।
  पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टादि-शाब्दिकाः ॥

- व्याकरण के विवेचनीय तथ्य
  → प्रकृति – प्रत्यय
  → स्वर + स्वर नियम
  → संधि
  → शब्दरूप + धातुरूप निर्माण

- प्रयोजन – भाषा को नियमित, अनुशासित, व्यवस्थित करना
  – रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः (व्या. महाभाष्य)
  ऊह – यथास्थान शब्दों का प्रयोग
  आगम – शास्त्रों की आज्ञा पालन
  लाघव – लघु रूप में प्रयोग
  असन्देह – साधु + असाधु शब्दों में सन्देह निवारण

प्राक्पाणिनि

1. इन्द्र

- ऐन्द्र व्याकरण + अन्य आयुर्वेद + अर्थशास्त्र मीमांसा ...
- पिता कश्यप + माता अदिति (दक्ष की बेटी)

2. वायु

- इन्द्र की सहायता की (काश्यपसंहिता 1/20) (तैत्तरीय स. 6/47) (वायुपु. 2/44)
  - 'ऐन्द्रावायव:' — रचयिता - वही मातरिश्वा (वायु)

3. भरद्वाज

- चौथा वैयाकरणी (ऋक्तंत्र (1/4))
- भरद्वाज व्याकरण + आयुर्वेदसंहिता + धनुर्वेद + राजशास्त्र
  - प्राप्त — यंत्रसर्वस्व + शिक्षा
    - विमानशास्त्र
    - भंडारकर रिसर्च Institute, Pune से.

4. भागुरि

- भागुर के पुत्र
- भागुरि व्याकरण; त्रिकांडकोष, सांख्यदर्शनभाष्य + दैवतग्रन्थ + ब्राह्मण
  - अलंकारग्रंथ + सामवेदीय शाखा

5. पौष्करसादि

- पिता - पुष्करसत्
- अजमेर (राजस्थान) भारतपुर के पास

6. चारायण

- महाभाष्य में पाणिनि + रौढि + चारायण (स्मरण)
- देवपाल - कठसूत्र उद्धृत - लौगाक्षिटीका
- + चारणीय शिक्षा

7. काशकृत्स्न

- उल्लेख - महाभाष्य + कविकल्पद्रुम
- ग्रन्थ प्राप्त - महाभाष्यप्रदीप + वाक्यपदीय
  - (त्रि अध्यायी व्याकरणग्रन्थ + चतुरध्यायी मीमांशास्त्र) प्रचलित

(8) वैयाघ्रपद

- शतपथ ब्राह्मण (10/6/1/7) + शांखायन आरण्यक (9/6) [उद्धृत]

ग्रन्थ - 'वैयाघ्रपद'

(9) माध्यन्दिनि

- काशिका - कारिका [उद्धृत] (7/1/94)]

ग्रन्थ - 'श्रुनलयणु : पारुपाद' + माध्यंदिनी शिक्षा

(10) शौनक

- चरक पर टीकाकार जज्जट ने (उद्धृत)

[चिकित्सास्थान (2/27)

(11) गौतम

- गौतमसूत्र + गौतमधर्मशास्त्र (अन्य)
- गौतमीशिक्षा काशी से प्रकाशित

(12) व्याडि

- ऋक्प्रातिशाख्य (2/23/28) (उद्धृत) काशिका में दाक्षायण कहा
- उपाध्याय की रचना की

पाणिनिपूर्वक वैयाकरण

- 10 आचार्य
  - आपिशलि
  - काश्यप
  - गार्ग्य
  - गालव
  - चाक्रवर्मण
  - भारद्वाज
  - शाकटायन
  - शाकल्य
  - सेनक
  - स्फोटायन

पाणिनि (500 BCE)

- 'त्रिकाण्डशेष' (पुरुषोत्तमदेव) कोश में 6 नाम
  पाणिन, पाणिनि, दाक्षीपुत्र, शालंकि, शालातुरीय, आहिक
  (पाणिनि ने भी (शालातुरीय))

- कथासरित्सागर के अनुसार गुरु – 'वर्ष'
  (1/4/20)
  महाभाष्य " " – माहेश्वर
  (1/1/20)

अष्टाध्यायी (अष्टौ अध्याया: सन्ति यस्मिन्)
- 8 अध्याय (32 पाद)
- प्रत्येक अध्याय 4 पाद में विभक्त
- 3978 सूत्र + 14 प्रत्याहार सूत्र / माहेश्वरसूत्र

वैशिष्ट्य

1. संज्ञाएँ – व्यवहार संगृहीत (गुण + वृद्धि)
   – कृत्रिम (टि, घ, लु, इत्)
2. प्राचीन भाषा को वर्तमान में भी समझना (निरन्तरता)
3. अनुवृत्ति (पुनरावृत्ति से बचने के लिये) वा/च
   प्रातिपदिकार्थ लिङ्गपरिमाणवचन मात्रे प्रथमा
   सम्बोधने च
   कर्मणि द्वितीया
4. सरल (प्रातिशाख्य नहीं है) (विस्तार + आलम्ब नहीं)
   – व्यवस्थित, सारगर्भित, सन्तुलित, वैज्ञानिक
5. लाघव (न्यूनातिरिक्त – न कम न ज्यादा) अर्धमात्रालाघवेन
   पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः।
6. प्राचीन पूर्वाचार्य उल्लेख
   – ऋतो भरद्वाजस्य – अवङ्स्फोटायनस्य
   – आतो गार्ग्यस्य

अन्य
- अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाणिनीयं मतं यथा
- सिद्धो व्याकरणस्य कर्तृ-अहरत् प्राणान् सिंहान् पाणिनेः।

कात्यायन (350 BCE)

- कात्य, कात्यायन, पुनर्वसु, मेधाजित्, वररुचि (प्रियाऽशोक अनुसार)
- इनको मेधाजित् को left (महाभाष्य)
- श्रुतधर - कथासरित्सागर (कुछ किसी द्वारा कात्यायन)
- 'प्रियतद्धिता दाक्षिणात्याः' (पतञ्जलि ने कहा)

• अन्य ग्रन्थ (अष्टाध्यायी पर वार्तिक)
- वार्तिकपाठ ; स्वर्गारोहण (कृष्णचरित का मत), भ्राजसंज्ञकश्लोक
- स्मृति कात्यायन, उभयसारिका भाण

वार्तिकलक्षण
└ उक्तानुक्तदुरुक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्तते।
तं ग्रन्थं वार्तिकमाहुः वार्तिकज्ञाः मनीषिणः॥

प्रथमसूत्र - सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे

पाणिनि

व्याकरण (5 अंग) शास्त्र
- मुख्य अंग (सूत्र - सूत्रपाठ)
- धातु, गण, उणादि, लिङ्गानुशासन (खिलपाठ)

⊙ धातुपाठ लगभग 2000 → गण में विभक्त (10)
└ धातु का अर्थ भी लिखा Ex. गम्लृ गतौ

⊙ गणपाठ (शब्दों का परिगणन) Ex- राजदन्तादि गण, आकर्षादि गण

पतञ्जलि (200-150 BCE)

अन्य नाम - गोनर्दीय, गोणिकापुत्र, नागनाथ, अहिपति, फणिभृत, चूर्णिकार या पदकार

ग्रन्थ - सामवेदीय निदानसूत्र, योगसूत्र (चरक संहिता का मत), महाभाष्य

अप्राप्य - महानन्दकाव्य, चरकपरिष्करणग्रंथ, कोशग्रन्थ, सांख्यशास्त्र, रसशास्त्र, लौहशास्त्र

प्रशस्ति वाक्य

कृतेऽथ पतञ्जलिना गुरुणा तीर्थदर्शिना।
सर्वेषां न्यायबीजानां महाभाष्ये निबन्धने॥
(वाक्यपदीय का. 2/477)

भाष्य लक्षण

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥
(महाभाष्य 3/1/26)

वैशिष्ट्य

1. आह्निकभवम् /आतम् (आह्निक में अध्याय विभाजन)
2. पाणिनि के सूत्रों का विवेचन
3. लोकप्रसिद्ध आभाणकों का वर्णन
4. मतान्तर में पतञ्जलि मुनि को प्रणाम

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि॥
– आयुर्वेद के रचयिता पतं.

अष्टाध्यायी के वार्तिककार

कात्यायन
भरद्वाज
सुनाग
क्रोष्टा
वाडव
व्याघ्रभूति
वैयाघ्रपद

वार्तिकों के भाष्यकार

2 हेलाराज
3 राघवसूरि
4 राजभट्ट
1 पूर्व पतञ्जलि महाभाष्य

अष्टाध्यायी के वृत्तिकार (टीका)

पाणिनि	शब्दानुशासन पर	प्रमाण - महाभाष्य, काशिका etc.
कुणि		पतञ्जलि से पहले
माथुर		"
श्वोभूति	अष्टाध्यायी वृत्ति	जिनेन्द्रबुद्धि - न्यासग्रंथ में (उल्लेख)
वररुचि/श्रुति	"	वार्तिककार वररुचि से भिन्न अन्य ग्रन्थ - चन्द्रकौमुदी, प्राकृतप्रकाश, कोश उपसर्गसूत्र, लिंगविशेषविधि, निरुक्तसमुच्चय, तैत्तरीय प्रातिशाख्य व्याख्या
देवनन्दी / पूज्यपाद	शब्दावतारन्यास	अन्य - अष्टाध्यायी + शब्दावतारन्यास, जैनेन्द्र व्याकरण, वैद्यकग्रंथ, तत्त्वार्थसूत्रटीका, धातुपाठ, गणपाठ, लिंगानुशासन
दुर्विनीत	शब्दावतार	बृहत्कथा पर टीका + किरातार्जु. 15 सर्ग पर मीमांसक इनके गुरु की रचना मानते हैं (शब्दावतार)
चुल्लिभट्ट	अष्टाध्यायी वृत्ति	काशिका / प्रथम पद्य में उद्धृत

मिलूर		व्याख्याकार (अज्ञात)
जयादित्य + वामन	काशिका	प्रारम्भ - 5 जयादित्य (रचित) अंतिम 3 अध्याय वामन अन्य वामन भिन्न [लिंगानुशासन, विश्रांतविद्याधर (जैन व्याकरण)
विमलमति	भागवृत्ति	अप्राप्य प्रमाण मुख्य - पदमंजरी + भागवृत्ति + अमरटीकासर्वस्व + शब्दकौस्तुभ + सिद्धान्तकौमुदी
भर्तृश्वर + जयंतभट + अभिनन्द		तीनों ने अलग-अलग (8 c Ab.)
केशव + इन्दुमित्र	इन्दुमती वृत्ति	विठ्ठल की प्रक्रियाकौमु. प्रमाण
मैत्रेयरक्षित	दुर्घटवृत्ति	उणादिवृत्ति (प्रमाण) → इस पर सृष्टिधर ने भाषावृत्त्यर्थविवृत्ति लिखी
पुरुषोत्तमदेव	भाषावृत्ति	
शरणदेव	दुर्घटवृत्ति	
भट्टोजिदीक्षित	शब्दकौस्तुभ इस पर टीकाएँ नागेश - विषमपदी वैद्यनाथपायगुण्डे - प्रभा विद्यनाथशुक्ल - उद्योत राघवेन्द्राचार्य - प्रभा कृष्णमित्र - भावप्रदीप भास्करदीक्षित - शब्दकौस्तुभदूषण जगन्नाथ - शब्दकौस्तुभखंडन	महाराष्ट्रीय ब्राह्मण थे अन्य - सिद्धान्त कौमुदी, प्रौढमनोरमा
अप्पयदीक्षित	सूत्रप्रकाश	(17वीं c) - 16 c [illegible]

स्वरचित	अष्टाध्यायी वृत्ति अध्याय	(उद्धोत गोलकाड वालेयी ↳ परिभाषावृत्ति)
अन्नंभट्ट	पाणिनीयमिताक्षर	काशीसे प्रकाशित
काशीकाशी आरंभट्ट (19c)	व्याकरणदीपिका	
दयानन्दसरस्वती (1881 - 1940)	अष्टाध्यायीभाष्य	2 खण्ड + 2 खण्डों में प्रकाशित
नौनार्य	प्रक्रियादीपिका	
नारायण सुधी	अष्टाध्यायीप्रदीप	
रुद्रधर	अष्टाध्यायी वृत्ति	
उदयन	मितवृत्यर्थसंग्रह	

अलबेरूनी के व्याकरण ग्रन्थ (उल्लेख)

- ऐन्द्र व्याकरण - इन्द्रविरचित
- चान्द्र व्याकरण - बौद्धभिक्षु चन्द्र द्वारा विरचित
- शाकट + पाणिनि + कातन्त्र (शर्ववर्मकृत)
- शशिदेववृत्ति + शिष्यहिता वृत्ति (उग्रभूतिकृत) + दुर्गविवृत्ति

त्रिमुनिकाल
(पाणिनि + कात्यायन + पतञ्जलि)

महाभाष्य के ~~वार्तिककार~~ टीकाकार

भर्तृहरि (प्रबन्धचिंतामणि [illegible] भाई)	महाभाष्यदीपिका - चन्द्राचार्य फिर - स्वीर उपाध्याय (आजा [illegible]) } उद्धार (कर्ता)	अन्य – वाक्यपदीय (स्वोपज्ञटीका) भागवृत्ति, मीमांसासूत्रवृत्ति, वेदान्तसूत्रवृत्ति (अनुप०) शब्दधातुसमीक्षा
कैयट (1000-1050 ई.)	महाभाष्यप्रदीप	
विष्णुमित्र (15ई.)	क्षीरोदक टिप्पण	

महाभाष्य प्रदीप के व्याख्याकार

चिन्तामणि	प्रक्रियाकौमुदी + महाभाष्यकैयटप्रकाश
नागनाथ	महाभाष्य प्रदीपोद्योतन
रामचन्द्र सरस्वती	विवरण
नारायण स्वामी	महाभाष्यप्रदीप व्याख्या
नागेशभट्ट 'राम'	महाभाष्य प्रदीपोद्योतन └ वैद्यनाथ पायगुंडे – 'छाया' व्याख्या
मल्लयज्वा	टिप्पण
रामसेवक	व्याख्याकार

काशिका के व्याख्याकार

जिनेन्द्रबुद्धि	काशिकाविवरणपंजिका 'न्यास' टीका – मैत्रेयरक्षित – तंत्रप्रदीप मल्लिनाथ – न्यासोद्योत महामिश्र – व्याकरणप्रकाश
इन्दुमित्र (12वीं)	अनुन्यास
विद्यासागरमुनि (12वीं)	प्रक्रियामंजरी
हरदत्तमिश्र (12c)	पदमंजरी
रंगनाथयज्वा (18c)	मंजरीमकरंद
शिवभट्ट	कुंकुमविकास

प्रक्रियाग्रन्थ

1100 CE	धर्मकीर्ति	रूपावतार (संज्ञावतार + संहितावतार + तिङन्तावतार etc.) (2664 सूत्र)
14c	विमलसरस्वतिसूरि	रूपमाला (2046 सूत्र) (संज्ञामाला + संधिमाला etc.)
14c	रामचन्द्र	प्रक्रियाकौमुदी (2470 सूत्रवीवृति + उदाहरण) (वैकल्पिकउदाहरण) टीका – विट्ठल – प्रसाद शेषकृष्ण (भट्टो. के गुरु) – प्रकाश व्याख्या। ग्रन्थ
1560-1610 CE	भट्टोजिदीक्षित वैय.सि.कौ. ① उत्तरार्ध ② पूर्वार्ध (प्रक्रियानुसार क्रम) वैय. कारिका (७४ अनु.)	वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, प्रौढमनोरमा, शब्दकौस्तुभ, (सिद्धान्तकौमुदी की व्याख्या) वैयाकरणसिद्धान्तकारिका (मूलकारिका लिखी – कौण्डभट्ट ने) अन्य ग्रन्थ – (अशौचप्रकरण + तिथिनिर्णय + त्रिस्थलीसेतु) धर्मशास्त्र (तत्त्वकौस्तुभ + वादमाला + अद्वैतकौस्तुभ) वेदान्त तन्त्राधिकार वेदभाष्यसार, तत्त्वसिद्धान्तदीपिका, तैत्तरीयभाष्य etc.

→ कौण्डभट्ट ने वैयाकरणभूषण - (वैयाकरणसिद्धान्तकारिका पर)
- दर्पण (हरिवल्लभकृत)
- भैरवी (भैरवमिश्र)
- काशिका (हरिराम काले)

→ प्रौढमनोरमा की व्याख्या - हरिदीक्षित ने "शब्दरत्न"

→ नागेशभट्ट (शिष्य भट्टो.) (1660-1724)
- शब्देन्दुशेखर (सिद्धान्त कौमुदी पर)
- परिभाषेन्दुशेखर (परिभाषा - रूप वाक्यों की व्याख्या)
- उद्योत (प्रदीप टीका पर)
- स्फोटवाद, वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा
  - कला (वैद्यनाथ पायगुण्ड)
  - कुञ्चिका (कृष्णमिश्र)
  - परमलघुमञ्जूषा

←→ वरदराज (भट्टो शिष्य)
(1600-1630)
- सारसिद्धान्त कौमुदी
- लघुसिद्धान्त "
- मध्यसिद्धान्त "
- गीर्वाणपदमञ्जरी

→ नारायण भट्ट - प्रक्रियासर्वस्व (20 खण्ड)
(1954 प्रकाशित)

→ पाणिनीय धातुपाठ पर टीकाएँ
- क्षीरस्वामी - क्षीरतरङ्गिणी (11c)
- मैत्रेयरक्षित (12c) - धातुप्रदीप
- माधवाचार्य (14c) माधवीयधातुवृत्ति)
- वर्धमान (1140) गणरत्नमहोदधि।

→ परिभाषाग्रन्थ
- पुरुषोत्तमदेव (12c) लघुवृत्ति
- सीरदेव ~~पुरुषोत्तमदेव~~ - परिभाषावृत्ति (13c)
- नागेशभट्ट - परिभाषेन्दुशेखर (17-18c)
  - गदा (वैद्यनाथ), भैरवी (भैरवमिश्र)
  त्रिपथगा (राघवेन्द्राचार्य), भूति (रामकृष्णशास्त्री)
  विजया (जयदेवमिश्र)

अन्य व्याकरण प्रस्थान

(10 व्याकरण प्रस्थान)
कातन्त्र, चान्द्र, जैनेन्द्र, जैनशाकटायन, भोज, हैम, जौमर, सारस्वत, मुग्धबोध, सौपद्म

① कातन्त्र - दुर्गसिंह
(कलाप व्याकरण) 4 अध्याय (3 - शर्ववर्मा (1C) + 1 किसी कात्यायन)
- दुर्गसिंह (600) की वृत्ति
→ उग्रभूति, त्रिलोचनदास, जगद्धरभट्ट (1300)

- जगदीश तर्कालंकार - शब्दशक्तिप्रकाशिका

② चान्द्र व्याकरण - चन्द्रगोमी (400 CE) बौद्ध
- 6 अध्याय + 3100 सूत्र
- काश्यप भिक्षु ने सार - 'बालावबोधन' (1200 CE)
खण्डन - 'काशिका' में

③ जैनेन्द्रशब्दानुशासन
- औदीच्य संस्करण - 3000 सूत्र
- दाक्षिणात्य - 3700

④ जैनशाकटायन - पाल्यकीर्ति
↳ शाकटायनशब्दानु. 4 - 4 पाद वाले 4 अध्याय जिन्हें सिद्धि के नाम से विभक्त
↳ प्रभाचन्द्र (1000 CE) वृत्तियाँ दोनों पर
↳ यक्षवर्मा - चिन्तामणि टीका

⑤ भोज - सरस्वतीकण्ठाभरण
(1028-1063)
- 6411 सूत्र
- 7 अध्याय संस्कृत + 8 वैदिक व्याकरण
- 3 टीकाएँ

⑥ हेमचन्द्रसूरि - सिद्धहैमशब्दानुशासन
(1088-1172)
- गुर्जर नरेश सिद्धराज के निर्देश पर लिखा
- 4-4 पाद - 8 अध्याय
- 3566 सूत्र, 8 वाँ (अध्याय प्राकृत - 1119)

⑦ क्रमदीश्वर - संक्षिप्तसार
वृत्ति - जुमरनन्दि (14)
- बंगाल में प्रसिद्ध

नरेन्द्र - सारस्वत
- 700 सूत्र (अध्याय)
→ अनुभूति स्वरूपाचार्य — 'सारस्वतप्रक्रिया' (13c)
→ रघुनाथ (भट्टो. शिष्य) लघुभाष्य
→ सिद्धान्त चंद्रिका

⑨ मुग्धबोध - बोपदेव (1300
→ नूतन प्रस्थान
→ नवद्वीप (प.बंगाल) तक ही अध्ययन सीमित

⑩ पद्मनाभ - 'सुपद्म' (15c)
→ मिथिला में था
→ समाप्त

प्राकृत व्याकरण

① प्राकृत का सबसे पहला व्याकरण - (3500BC)
— 'प्राकृतप्रकाश' (वररुचि का)
- भामह : 'मनोरमा' टीका
- 10c - वररुचि
- रामपाणिवाद 'प्राकृतप्रकाशवृत्ति'
- कृष्णलीलांशुक (12c) - श्रीचिह्नप्रकाश

② 'प्राकृतसूत्र' - महर्षि वाल्मीकि को बताया जाता है
/ वाल्मीकिसूत्र
└ त्रिविक्रम - 'प्राकृतसूत्रवृत्ति'

③ त्रिविक्रम (14c) - प्राकृतशब्दानुशासन
सिंहराज — 'प्राकृतरूपावतार'
श्रुतसागर (जैन-16c) — 'औदार्य चिन्तामणि'
शुभचन्द्र — चिन्तामणि
लक्ष्मीधर — षड्भाषाचन्द्रिका
चन्द्र — प्राकृतलक्षण

शेषनाग - प्राकृत व्याकरणसूत्र
└ लंकेश्वर कामधेनु टीका

रामतर्क वागीश (17c) - प्राकृतकल्पतरु
मार्कण्डेय (17c) - प्राकृतसर्वस्व

काव्यशास्त्र

① आत्म/विचारक — उद्भावक

② [illegible] — ध्वनिकाव्य + गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य (वाच्यार्थ व व्यंग्यार्थ समान)
+ चित्रकाव्य (शब्द/वाच्य वैचित्र्य)

भरत 300BC Ap.	आचार्य भरत	नाट्यशास्त्र	गौ. - 36 अध्याय, काव्यमाला - 37 अध्याय 5000+ अनुष्टुप पद्य (प्रायः) टीका - अभिनवगुप्त - 'अभिनवभारती' (खण्डित) प्रकाशित -
500CE/1200CE		अग्निपुराण	
550CE	भामह	काव्यालंकार	6 अध्याय परिच्छेद (5 विषय) काव्यशरीर, अलंकार, दोष, न्याय, शब्दशुद्धि 400 पद्य टीका - उद्भट 'भामहविवरण' (अप्र.)
700CE	दण्डी	काव्यादर्श	3 परिच्छेद + 660 पद्य द्वितीय - अलंकार, तृतीय - यमक
800CE	उद्भट (भट्टोद्भट)	अलंकारसारसंग्रह	केवल अलंकार पर - 6 वर्ग + 79 कारिका + 41 अलंकार - कुमारसम्भव के 100 पद्य उदाहरण टीका — प्रतिहारेन्दुराज (10c) लघुवृत्ति, राजानक तिलक (12) उद्भटविवेक
800CE	वामन	काव्यालंकारसूत्रवृत्ति	5 अधिकरण (काव्यशरीर, दोष, गुण, अलंकार प्रायोगिक)
850CE	रुद्रट (शैव ब्राह्मण)	काव्यालंकार	आर्या छन्द - 734 पद्य + 16 अध्याय 4 रीति + 10 रस etc. टीका - नमिसाधु की व्याख्या (जैन) 11c)

CE 850 CE	आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	4 उद्योत / कारिका / वृत्ति 117
900 CE	मुकुलभट्ट	अभिधावृत्तिमातृका	15 कारिकाएँ अभिधा का ग्रन्थ • भट्टतौत (अभिनवगुप्त – आचार्य [illegible] अभिनवकृत विवरण टीका [illegible] • भट्टतौत – काव्यकौतुक "प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता" • भट्टनायक – नाट्यशास्त्र पर टीका + हृदयदर्पण
	राजशेखर	काव्यमीमांसा	18 अध्याय + 18 अधिकरण थे but last प्रथम अधिकरण 'कविरहस्य' प्राप्त
	धनञ्जय	दशरूपक	भरत के नाट्यशास्त्र का सार ग्रन्थ 4 प्रकाश + 300 पद्य
980-1010 (साहित्यिक काल)	अभिनवगुप्त (शिवाद्वैत/प्रत्यभिज्ञदर्शन)	• ध्वन्यालोकटीका 'लोचन' • नाट्यशास्त्र " 'अभिनवभारती' (उपलब्ध)	ग्रन्थ – ईश्वरप्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी टीका – [illegible] – तन्त्रालोक + [illegible] तन्त्रालोक सार – मालिनीविजयवार्तिक + [illegible]
975-1025	कुन्तक	वक्रोक्तिजीवित	4 उन्मेष / वक्रता के 6 भेद - - कारिका + व्याख्या
1020-1050	महिमभट्ट	व्यक्तिविवेक	खण्डनकाव्यशास्त्रीय ग्रन्थ (ध्वन्यालोक + वक्रोक्तिजीवित • ध्वन्यालोक के 40 उदाहरण लेकर अनुमान सिद्ध • द्वितीय विमर्श में – 'अनौचित्य' को काव्य का [illegible] टीका – [illegible] – ([illegible]) [illegible]
1005-1055	भोज	सरस्वतीकण्ठाभरण	24 शब्दगुण + 24 अर्थगुण + 6 रीति + [illegible] 5 परिच्छेद
		शृङ्गारप्रकाश	36 अध्याय/प्रकाश (शृंगार रस को सिद्ध) 26वाँ प्रकाश (अनुपलब्ध)
1000-1070	क्षेमेन्द्र	औचित्यविचारचर्चा	19 कारिका
		सुवृत्ततिलक	विषयानुसार छन्द-चयन (विवेक)
		कविकण्ठाभरण	55 कारिका (5 सन्धियों विभक्त) कवि [illegible] + [illegible] 3 + [illegible] 5

850 ई.	आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	4 उद्योत + कारिका / वृत्ति
900 ई.	मुकुलभट्ट	अभिधावृत्तिमातृका	15 कारिकाएँ अभिधा पर ग्रन्थ • भट्टतौत (अभिनवगुप्त के गुरु - शान्तरस को मोक्षप्रद व श्रेष्ठ रस) अभिनवकृत विवरण टीका 'निर्देश' में • भट्टतौत - काव्यकौतुक "प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता" • भट्टनायक - नाट्यशास्त्र पर टीका + हृदयदर्पण
	राजशेखर	काव्यमीमांसा	18 अध्याय + 18 अधिकरण थे but lost; प्रथम अधिकरण 'कविरहस्य' प्राप्य
	धनञ्जय	दशरूपक	भरत के नाट्यशास्त्र का सारग्रन्थ 4 प्रकाश + 300 पद्य
980-1010 (आनन्दवर्धन के)	अभिनवगुप्त (शिवाद्वैत/प्रत्यभिज्ञादर्शन)	• ध्वन्यालोकटीका 'लोचन' • नाट्यशास्त्र " 'अभिनवभारती' (उपलब्ध)	ग्रन्थ - ईश्वरप्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी टीका - उत्पलदेव के ग्रन्थ की (2 लघु + बृहत् व्याख्या) - तन्त्रालोक + इसका सार भी - तन्त्रालोकसार - मालिनीविजयवार्तिक + परात्रिंशिकाविवरण।
975-1025	कुन्तक	वक्रोक्तिजीवित	4 उन्मेष / वक्रता के 6 भेद - - कारिका + व्याख्या
1020-1050	महिमभट्ट	व्यक्तिविवेक	खण्डनकाव्यशास्त्रीय ग्रन्थ (ध्वन्यालोक + वक्रोक्तिजीवित) • ध्वन्यालोक के 40 उदाहरण लेकर अनुमेय सिद्ध किए • द्वितीय विमर्श में - 'अनौचित्य' को काव्य का सर्वप्रधान दोष टीका - प्राचीन - (सम्भवतः रुय्यक) अप्राप्त
1005-1055	भोज	सरस्वतीकण्ठाभरण शृङ्गारप्रकाश	24 शब्दगुण + 24 अर्थगुण + 6 रीति + 3 प्रकार अलंकार 5 परिच्छेद 36 अध्याय/प्रकाश (शृंगाररस को सिद्ध) 26वाँ प्रकाश (अनुपलब्ध)
1050-1070	क्षेमेन्द्र	औचित्यविचारचर्चा सुवृत्ततिलक कविकण्ठाभरण	1 कारिका विषयानुसार छन्द चयन (विषय) 55 कारिका (5 सन्धियों विभक्त) कवि रचना 5 सोपान + शिक्षा 3 + कवि वर्ग 5

1050/1100	मम्मट टीकाएँ चण्डीदास - 'दीपिका' विश्वनाथ - 'दर्पण' (14c)	काव्यप्रकाश शंकर टीकाएँ (50 टीका) नरहरितीर्थ 'बालचित्तानुरंजिनी' (1242) गोविन्द ठाकुर 'काव्यप्रदीप' (15) → वैद्यनाथ - 'प्रभा' → नागेशभट्ट 'उद्योत'	10 उल्लास / 142 कारिका / 603 उदाहरण खण्डन → हेमचन्द्र - काव्यानुशासन (1143) → रुय्यक - अलंकारसर्वस्व (1130) टीकाएँ माणिक्यचन्द्र 'संकेत' (1160) श्रीवत्स - सुधासागर (1723) वामनाचार्य झलकीकर - 'बालबोधिनी' -
1100-50	रुय्यक	अलंकारसर्वस्व साहित्यमीमांसा	82 अलंकार, 42 अलंकार सं. + 7 नये अलंकार. 8 प्रकरण (कविभेद, शक्तिभेद, साहित्यनिर्मिति, गुण)
1100 c.	सागरनन्दी	नाटकलक्षणरत्नकोश	नाट्यशास्त्र के वैज्ञानिक क्रम विवेचन
1088-1172	हेमचन्द्र	काव्यानुशासन	8 अध्याय + संग्रहात्मक ग्रंथ अंतिम दो अध्याय - नायक + नायिका + काव्यभेद
	वाग्भट I (जयसिंह आश्रितकवि) (1093-1143)	वाग्भटालंकार	5 परिच्छेद + 260 पद्य इसकी टीकाएँ लिखी गईं
13 c	वाग्भट II	काव्यानुशासन	5 अध्याय (दोष, गुण (ओज + प्रसाद + माधुर्य) 63 अर्थालंकार + 6 शब्दालंकार
12 c	रामचन्द्र गुणचन्द्र +	नाट्यदर्पण	4 अध्याय में कारिका + वृत्ति भी → 12 रूपक (नाटिका + प्रकरणी भी) → 13 उपरूपक
13 c	अमरचन्द्र	काव्यकल्पलता	वृत्ति भी (4 प्रतान के अध्याय)
14 c	देवेश्वर	कविकल्पलता	अनेक टीकाएँ लिखी गईं (इस पर)
13 c	जयदेव (पीयूषवर्ष) + प्रसन्नराघव	चन्द्रालोक	10 मयूख (350 अनुष्टुप् पद्य) टीकाएँ → शरदागम - (1583) → रमा (वैद्यनाथपा. 1750-1800) → सुधा (विश्वेश्वर भट्ट)

1250 CE			
1250	शारदातनय	भावप्रकाशन	नाट्यशास्त्रीय
	सिंह (शिंग) भूपाल	रसार्णवसुधाकर	3 विलास (नाट्य-) अन्य - संगीतरत्नाकर (शार्ङ्गधरकृत) टीका - संगीतसुधाकर पर टीका
1300 C	विद्याधर	एकावली (लक्षणग्रंथ)	8 उन्मेष
1295-1320	विद्यानाथ (काकतीय नरेश प्रतापरुद्रदेव)	प्रतापरुद्रयशोभूषण	7 प्रकरण टीका └ कुमारस्वामी (मल्लिनाथपुत्र) - रत्नापण
1300-1350	विश्वनाथ → षोडशभाषावार-विलासिनी भुजंग	साहित्यदर्पण + चन्द्रकला (नाटिका)	10 परिच्छेद (सर्वांगपूर्ण लक्षण ग्रंथ) (कारिका + वृत्ति + उदाहरण)
16 C	केशवमिश्र	अलंकारशेखर	कारिका + वृत्ति + उदाहरण 22 मरीचि (विभक्त)
16 C	भानुदत्त (मिथिला)	अलंकारतिलक रसमञ्जरी रसतरङ्गिणी	- 5 परिच्छेद (डा. देवस्थली ने संपादन) - नायक + नायिकाभेद (नागेशभट्ट - "प्रकाश व्याख्या") - 8 तरंग + रस निरूपण 5 'नौका' टीका प्रसिद्ध
1490-1563	रूपगोस्वामी	नाटकचन्द्रिका भक्तिरसामृतसिन्धु उज्ज्वलनीलमणि └ श्रृंगाररस ग्रंथ	(भरत + शिंगभूपाल पर आश्रित) दिशाओं के नाम से विभाग में विभक्त (भक्तिरस विस्तृत विवेचन) श्रृङ्गार विवेचन परक ग्रंथ।
15 C	कर्णपूर / परमानन्ददास	अलंकारकौस्तुभ	10 किरण सारबोधिनी टीकासह बंगाल से प्रकाशित
1553-1626	अप्पयदीक्षित	वृत्तिवार्तिक चित्रमीमांसा कुवलयानन्द	शब्दशक्तिविचार (व्यञ्जना पर विचार नहीं) प्रौढ + अपूर्ण (काव्य 3 भेद + श्लिष्टचित्रकाव्य) जयदेव के चन्द्रालोक के 5 मयूख की व्याख्या + 24 नये अलंकार 123 अर्थालंकार (9 टीकाएँ) टीका - आशाधरभट्ट - कारिकादीपिका (1650-1710) └ अन्य (त्रिवेणिका - 3 परिच्छेद शब्दशक्ति)

17 C	पंडित. जगन्नाथ (तैलंग ब्राह्मण)	रसगंगाधर (अपूर्ण)	2 आनन में विभक्त टीका • नागेश व्याख्या - गुरुमर्मप्रकाशिका • बदरीनाथ झा संस्कृत में (टी.) • मधुसूदन शास्त्री (निर्णयसागर प्रे.)
18 C (पूर्वार्ध)	विश्वेश्वर पाण्डेय	अलंकारकौस्तुभ अलंकारप्रदीप रसचंद्रिका अलंकारमुक्तावली कवीन्द्रकण्ठाभरण	(अप्पयदीक्षित जगन्नाथ के मत का खण्डन) इस ग्रन्थ की टीका अलंकारमुक्तावली (स्वकृत)
18 C.	नरसिंह	नञ्जराजयशोभूषण	7 विलास (नायक + काव्य + ध्वनि + रस)

प्रयोजन (काव्य)

- काव्यं सद्दृष्टादृष्टार्थं प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात्। (वामन 1/1/5)

- काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
  सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे। (मम्मट 1/2)
  - यश – कालिदास
  - धन – श्रीहर्षादेर्धावकादीनां
  - राजादिगतोचिताचारपरिज्ञानम्
  - आदित्यादेर्मयूरादीनां इव अनर्थनि.
  - सकल. रसास्वादनसमुद्भूतम्
  - अन्य सुहृत् प्रभु (शब्दप्रधानवेदा.-शास्त्र) / इतिहास / पुराण / कान्ता...

- धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
  करोति प्रीतिं कीर्तिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्॥ भामह 1/2)

काव्य हेतु

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥

- शक्ति: कवित्वबीजरूपः संस्कारविशेषः यां वि. (प्रसृतं / उपहसनीयं)
- लोकस्य स्थावरजङ्गमात्मकस्य... शास्त्राणां छन्दोव्याकरणाभिधानकलाचतुर्वर्गगजतुरग खड्गादि लक्षणग्रन्थानां
- (दण्डचक्रवीरन्याय) – काव्यानां च महाकवीनां
- आदिग्रहणादितिहासानां विमर्शनात् व्युत्पत्तिः।
- त्रय काव्योत्पादने निर्माणे समुल्लासे हेतु: न हेतव:।

शास्त्र

- शासनात् शास्त्रम् (अनुशासित करे)
- शंसनात् शास्त्रम् (शंसन गूढतत्वानां स्फुटीकरणम्)

- यद् विधौ च निषेधे च व्युत्पत्तेरेव कारणम्
- तदेवेयं विदुस्तेन लोकयात्रा प्रवर्तते॥ (श्लोकवा. 1/2/38)

रस सम्प्रदाय	नन्दिकेश्वर, भरत	नाट्यशास्त्र
अलंकार सम्प्रदाय	भामह, उद्भट, रुद्रट	काव्यालंकार
रीति प्रधान	दण्डी वामन	काव्यालं. सूत्र
वक्रोक्ति प्रधान	कुन्तक	वक्रोक्तिजीवित
ध्वनि संप्रदाय	आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक
औचित्य प्रधान	क्षेमेन्द्र	औचित्यविचारचर्चा

रस सम्प्रदाय

लौकिक – मधुर, अम्ल, कटु लवण, काषाय, तिक्त

काव्यगत रस शृङ्गार हास्य करुण रौद्र वीर भयानक बीभत्स अद्भुत शान्त
रति हास शोक क्रोध उत्साह भय जुगुप्सा विस्मय शम

'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद् रसनिष्पत्तिः'

विभाव (कारण) अनुभाव (कार्य), व्यभिचारी भाव (संचार)

आलम्बन (आश्रय), उद्दीपन (बढ़ाना)

आचार्य	मत	पृष्ठभूमि	संयोग	निष्पत्ति	रस की स्थिति
भट्टलोल्लट (स्थायिभाव=रस)	उत्पत्ति/आरोपवाद	अद्वैतवेदान्त	उत्पाद्य-उत्पादक	उत्पत्ति	अनुकार्य (रामादि) नट → नट में
श्रीशंकुक	अनुमितिवाद	न्याय	अनुमाप्य अनुमापक	अनुमिति	अनुकार्य (रामादि) अनुमान = नट
भट्टनायक	भुक्तिवाद	सांख्य	भोज्यकत्व-भोजकत्व	भुक्ति	सामाजिक (साधारणीकरण)
अभिनवगुप्त	अभिव्यक्तिवाद	अलङ्कारवादी अभाववादी	(व्यंग्य-व्यञ्जक) व्यञ्जनवृत्ति	अभिव्यक्ति	आत्मा में (पूर्वजन्म)

→ विभावादिसाधारणीकरणात्मना भावकत्वव्यापारेण भाव्यमानः स्थायी

→ सत्वोद्रेकप्रकाशानन्दमयसंविद्विश्रान्तिसतत्वेन भोगेन भुज्यते।

→ चित्रतुरग न्याय – सम्यक् (रस), मिथ्या, संशयात्मिका, सादृश्यात्मिका

→ भरत – नहि रसादृते कश्चित् पदार्थः प्रवर्तते

अलङ्कार सम्प्रदाय

अलम् + कृ + घञ्

(अलंक्रियते अनेन) अलं भूषणं, पर्याप्तिं करोति इति

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

→ अग्निः उपमा यद् वेद - निरुक्त

→ पाणिनि → उपमानि सामान्यवचनैः, उपमानानि अर्थे, यथा सादृश्ये

→ भरत - उपमा, रूपकश्चैव, दीपकं यमकं तथा।
अलङ्कारास्तु विज्ञेयाश्चत्वारो नाटकाश्रया॥

परिभाषा

- काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलङ्कारान् प्रचक्षते
ते चाद्यापि विकल्प्यन्ते कस्तान् कार्त्स्न्येन वक्ष्यति
- काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात् । सौन्दर्यमलङ्कारः (वामन)
स दोषगुणालङ्कार हानादानाभ्याम्

संख्याविषयक मत

- भरत - 4
- भामह - 38 (2 + 36)
- दण्डी - 37 (2+35
- रुद्रट - 62 15 + 57
- मम्मट - 68 (6 + 62
- विश्वनाथ - 85 (7 + 78)

मूलतत्त्व

↳ भामह + दण्डी = सैषा सर्वत्र वक्रोक्तिः
↳ अभिनवगुप्त - अतिशयोक्ति + वक्रोक्ति
↳ मम्मट - वस्तुध्वनि - अलङ्कारमलङ्कारो वी-तु-२ व्यञ्जितं।

समीक्षा

- उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित् ।
  हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः ॥ (काव्यप्रकाश 1/2)
- रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् — जगन्नाथ
- विच्छित्ति लावन्वती – आर्कि
- वामन — अलङ्कृति - न पुनः
- जयदेव – अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलङ्कृती ।
  असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलङ्कृती ॥
- दण्डी – काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलङ्कारान् प्रचक्षते ।
- मम्मट – तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि

  follower – प्रतिहारेन्दुराज, रुय्यक, भोज, राजशेखर + जयदेव + जगन्नाथ + दीक्षित

रीति सिद्धान्त

प्रवर्तक=वामन

– रीति निर्णये सुवर्णनाभः

परिभाषा

- 'विशिष्टा पदरचना रीति'
- रीतिरात्मा काव्यस्य

रीङ् गतौ + क्तिन् = रीति

विकास

1) वाते वाजुर्या नद्येव रीतिः (प्रवाह) (ऋ 2/37/5)
2) नाभन्यस्य रीतिं परशोरिव (मार्ग) (ऋ 5/48/4)

रीति

1) समग्रगुणा वैदर्भी
2) ओज: कान्तिमती गौडीया
3) माधुर्यसौकुमार्योपपन्ना पाञ्चाली

त्रिगुणवाद

1) माधुर्य - श्रुतिपेशलता + अल्पसमस्तता
(कर्णसुखद) तृतीय अक्षर ज, ग, (ड नहीं)

2) ओज - अतिसमस्तता + अधिकसमास
द्वितीय + चतुर्थ

3) प्रसाद - आरितार्थ समर्पणा + अल्पसमस्तता
(साधारणीकरण)

भेद

1) भामह - वैदर्भी - गौडी (2)
2) वामन - वैदर्भी, गौडी, पाञ्चाली (3)
3) रुद्रट/विश्वनाथ - वैदर्भी, गौडी, पाञ्चाली, लाटीया (4)
4) विश्वनाथ - 4 + मागधी + आवन्ती (6)

रीति के औचित्य

(रसवक्तृवाच्यविषयौचित्यम्)

आलोचना

↳ भामह - वैदर्भमिन्य दस्तीति मन्यते सुधियोऽपरे।
तदेव च किल ज्याय: सदर्थमपि नापरम्॥

↳ आनन्दवर्धन - संघटना - रीति, आधार - आनन्द प्राप्ति

↳ विश्वनाथ
पदसंघटनारीतिरङ्गसंस्था विशेषवत्।
उपकर्त्री रसादीनां सा पुन: स्याच्चतुर्विधा॥
(सा.द. 9/1)

वक्रोक्ति सिद्धान्त

परिभाषा

- वाकछल / परिहास कथन / वचन विदग्धता
- ध्वनि को कौर बनाकर खा लिया (वक्रोक्ति ने)

पृष्ठभूमि

1) भामह + दण्डी + आनन्दवर्धन - सैषा सर्वत्र वक्रोक्ति
   ↳ वक्राभिधेयशब्दोक्तिरिष्टा वाचामलङ्कृतिः। (वक्रोक्ति ...)
2) कुन्तक - अलङ्कारशरीर ही वक्रोक्ति
3) अलङ्कार विशेष मम्मट

(अलङ्कार (वक्रोक्ति))

लक्षण

1) वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्यभङ्गी भणितिरुच्यते (वक्रो. 1/11)
   (विदग्धपूर्ण — कहने का तरीका)
2) विचित्रैवाभिधा वक्रोक्तिः

भेद

वर्णपदपूर्वार्धप्रत्यय वाक्य प्रकरण प्रबन्ध।

ग्रन्थ

- वक्रोक्ति: काव्यजीवितम्

ध्वनिसम्प्रदाय

(आचार्य के (आनन्दवर्धन के अनुसार)

परिभाषा

→ यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ ।
व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः ॥

→ व्यञ्जनाबोधित अर्थ

विरोधी वाद

- अभाव
- भक्ति
- अलक्षणीयता

विग्रह

1) ध्वनति (व्यञ्जक शब्द)
2) ध्वनति (व्यञ्जक अर्थ)
3) ध्वन्यते अनेन (व्यञ्जना शक्ति)
4) ध्वननं (व्यंग्य ही)
5) ध्वन्यते अस्मिन् (काव्य)

उदाहरण – गङ्गायां घोषः
– काकेभ्यो दधिरक्षताम्

प्रकार

वस्तु, अलङ्कार, रस

औचित्य ।

ग्रंथ - औचित्यविचारचर्चा

परिभाषा

उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत् ।
उचितस्य च यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते ॥

पृष्ठभूमि

↳ भरत - यादृश्यो यस्य कर्तव्या विन्यासे भूमिकास्ततः ।
या यस्य सदृशी चेष्टा उत्तमाधममध्यमा (35/1)

↳ आनन्द - मुक्तं लोकस्वभावेन रसौचित्य रुकतौ: पृथक् ।

↳ भोज - 'यशावर्ता नं रामायणस्य औचित्य प्रयोग'

अंग - 27 अंग

पद, वाक्य, क्रिया, कारक, लिङ्ग, वचन, ...

लक्षणा हेतु

मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात् ।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया ॥

- शुद्धा
  - उपादान — कुन्ताः प्रविशन्ति
  - लक्षण — गङ्गायां घोषः
  - सारोपा — आयुर्घृतम्
  - साध्यवसाना — आयुरेवेदम्
- गौणी
  - सारोपा — गौर्वाहीकः
  - साध्यवसाना — गौरयम्
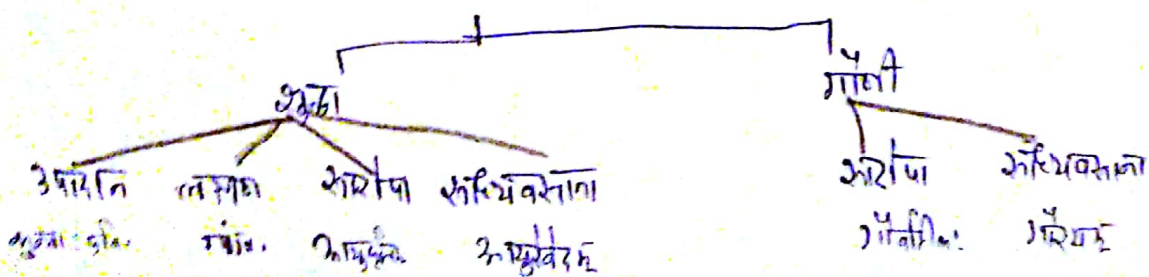
History of Sanskrit Literature

1. आयुर्वेदशास्त्र
2. कामशास्त्र
3. कोशग्रन्थ
4. छन्दशास्त्र
5. ज्योतिष शास्त्र
6. धर्मशास्त्र
7. राजशास्त्र
8. दर्शनशास्त्र

PART V

सुश्रुत — आयुरस्मिन् विद्यन्ते अनेन वा

विषय

शल्य (चीरफाड)	शालाक्य (शलाका - नेत्र, नाक, सिर, मुख)	कायचिकित्सा (जठराग्नि / पाचन)	भूतविद्या (झाड़ फूंक)	कौमारभृत्य (शिशु लालन-पालन)	अगदतंत्र (विष)	रसायनतंत्र, बल (रक्त, रस, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा)
वाजीकरण (पुरुष को शक्ति सम्पन्न बनाने वाली)						

महत्वपूर्ण ग्रन्थ

सुश्रुते सुश्रुतो नैव वाग्भटे नैव भाग्भट: ।
चरके चतुरो नैव स वैद्य: किं करिष्यति ॥

→ चरक → सुश्रुत → वाग्भट के ग्रन्थ

(1) **चरक संहिता**

— 6 स्थान + 120 अध्याय

सूत्रस्थान (आधार), निदानस्थान, विमानस्थान (रोग), शारीरस्थान (शरीर संरचना), इन्द्रियस्थान (रोग निदान)
चिकित्सास्थान, कल्पस्थान, सिद्धिस्थान

टीकाएँ

→ भट्टारहरिश्चन्द्र (400 CE) — 'चरक न्यास'
→ जज्जट — (8 C) — निरन्तरपद व्याख्या
→ चक्रपाणिदत्त (1050-1100 CE) — आयुर्वेद दीपिका
→ शिवदासन (15 C) — तत्वचन्द्रिका

② सुश्रुतसंहिता (100 CE) (शल्य चिकित्सा हेतु प्रसिद्ध)
- 400 C की हस्तलिपि नावनीतक में उल्लेख (काशगर से प्राप्त)
- 6 खण्ड (सूत्रस्थान, निदानस्थान, शारीरस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान, उत्तरतन्त्र)

टीकाएँ
- → जेज्जट
- → गयदास
- → चक्रपाणि
- → डल्हण - निबन्धसंग्रह (1200 CE)

③ वाग्भट (500-600 CE) इत्सिंग ने उल्लेख

(क) अष्टांगसंग्रह
- 6 स्थान + 150 अध्याय
- गद्यपद्ययुक्त
- 12000 पद्य 'द्वादशसाहस्री'

(ख) अष्टाङ्गहृदय
- 6 स्थान + 120 अध्याय
- 7444 पद्य
- 34 टीकाएँ (हेमाद्रि, अरुणदत्त)
- तिब्बती (भोट) भाषा में अनुवाद हो चुका। लोकप्रिय

7 C	माधवकर	रुग्विनिश्चय / माधवनिदान	79 रोग विवरण (अरबी रूपान्तरण 8 C - हारून अल रशीद (के) शासनकाल)
1060 CE	चक्रपाणिदत्त	चिकित्सासारसंग्रह	सिद्धयोग
12 C	वङ्गसेन	चिकित्सासार	रसभस्मनिर्माण विधि
16 C	भावमिश्र	भावप्रकाश	पूर्व मध्य उत्तर (3 खण्ड)
17-18	वैद्यजीवन + आयुर्वेद प्रकाश + योगतरङ्गिणी + भैषज्यरत्नावली		

आयुर्वेद रसायन विज्ञान

7 c	नागार्जुन	रसरत्नाकर
12 c	सोमदेव	रसेन्द्रचूडामणि
	यशोधर	रसप्रकाशसुधाकर
13 c	रसार्ण	रसार्णव
14 c	विष्णुदेव	रसराजलक्ष्मी
14 c	गोपालभट्ट	रसेन्द्रसारसंग्रह
	वाग्भट	रसरत्नसमुच्चय (20 अध्याय)

| कामशास्त्र |

① कामसूत्र (300 CE)

- 7 अधिकरण + 14 प्रकरण + 36 अध्याय + 1250 पद्य
- वीसलदेव (चौहान) (1243-61) यशोधर ने जयमङ्गला नाम व्याख्या

② ज्योतिरीश्वर (1295-1324 - हरिसिंहदेव आश्रित)

- 'पञ्चसायक'

③ कोक्कोक / कोकक का 'रतिरहस्य' (12c)

④ जयदेव - 'रतिमञ्जरी'

⑤ कल्याणमल्ल - 'अनङ्गरङ्ग' (16c)

⑥ वीरभद्र - 'कन्दर्पचिन्तामणि'

कोशग्रन्थ

① अमरकोश – (300 CE) – प्राचीनतम उपलब्ध – नामलिङ्गानुशासन
- बौद्ध लेखक
- 6c चीनी अनुवाद
- काशिका की न्यास (उद्धरण) (700 CE)
- तीन काण्ड (10वर्ग + 10वर्ग + 5वर्ग)
- केवल अनुष्टुप् पद्य 1533

टीकाएँ

→ क्षीरस्वामी – (1108-1130) – अमरकोशोद्घाटन
→ सर्वानन्द (1159) – टीकासर्वस्व
→ सुभूतिचन्द्र (1100) कामधेनु
→ बृहस्पति (1431) पदचन्द्रिका
→ भानुजिदीक्षित (1620-70) रामाश्रमी

② अन्य

6c	शाश्वत	अनेकार्थसमुच्चय / नानार्थकोश / शाश्वतकोश	पूना से 2 बार प्रकाशित
	धनञ्जय	नाममाला अनेकार्थमाला (पूरक) अनेकार्थ निघण्टु	200 पद्य (काशी से प्रकाशित) 153 पद्य
12c	पुरुषोत्तमदेव (बौद्ध)	त्रिकाण्डशेष (~~1053~~) हारावली वर्णदेशना	1053 पद्य + 3 काण्ड + 25 वर्ग 270 श्लोक (समानार्थक + नानार्थक खण्ड वर्तनी / स्त्रीलिंग विवेचना
10c	हलायुध (अर्हतवेदान्ती)	अभिधानरत्नमाला / हलायुधकोश	5 काण्ड + 900 पद्य
	यादवप्रकाश रामानुज	वैजयन्ती	2 खण्ड (वैदिक भी)
1111 CE	महेश्वर	विश्वप्रकाश	नानार्थकोश (शब्द का क्रम अंतिम वर्ण के आधार पर)

1159	सर्वानन्द		
12C	अजयपाल (बौद्ध)	नानार्थसंग्रह	
1250 CE Ap.	मेदिनीकार	विश्वप्रकाश से उद्धृत 'मेदिनी कोश'	
1150	मंख	अनेकार्थकोश	
	हेमचन्द्र	अभिधानचिन्तामणि	10 कोश
आधुनिक	रामावतारशर्मा	वाङ्मयार्णव	6796 पद्य
19c	राधाकान्तदेव	शब्दकल्पद्रुम	5 खण्ड
(1873-84)	तारानाथ तर्कवाचस्पति	वाचस्पत्य	6 खण्ड + वैदिक भी

छन्दशास्त्र

भरत (आचार्य) + अग्नि (8) में रचना कला।

200 BC	पिङ्गल	छन्दसूत्र	8 अध्याय + 308 सूत्र 1-4 (7 सूत्र तक) = वैदिक + लौकिक (अन्य) टीका - (10वीं - हलायुध - मृतसञ्जीवनी ")
600 CE Ap.	ग्रन्थनाम जानाश्रयी - छन्दोविचिति "	→ लेखक 'जनाश्रय' सूत्रात्मक	6 अध्याय
	जयदेव	जयदेवच्छन्दः	8 अध्याय
	जयकीर्ति	छन्दोऽनुशासन	8 अध्याय
1000 CE	केदारभट्ट	वृत्तरत्नाकर	6 अध्याय 15 टीकाएँ → त्रिविक्रम, सुल्हण, सोमचन्द्रगणी रामचन्द्र, नारायणभट्ट (1680)
	क्षेमेन्द्र	सुवृत्ततिलक	
	हेमचन्द्र	छन्दोऽनुशासन	

1500 ई	गंगादासकृत	छन्दोमञ्जरी
1620 ई	चन्द्रशेखर	वृत्तमौक्तिक
1740	कृष्णभट्ट	वृत्तमुक्तावली
	दुःखभञ्जन (काशी)	वाग्वल्लभ (विशालग्रन्थ) 1539 छन्दों का विवरण
		श्रुतबोध

ज्योतिषशास्त्र

भाग — सिद्धान्त, फलित, गणित
↓
- शुद्ध ज्योतिष
- आकाशीय पिण्डों का

ग्रन्थ

480-560	वराहमिहिर	पञ्चसिद्धान्तिका	5 सिद्धान्तों का सार — पौलिश, रोमक, वासिष्ठ, सौर, पितामह — ल 12 देव व्याख्या
	लगध	वेदाङ्ग ज्योतिष	
	प्रथम प्राप्य	सूर्यसिद्धान्त	वराह ने आर्यभट्ट आधार पर खण्डन — 14 अध्याय + पद्यात्मक — आकाशीय पिण्ड
476	आर्यभट (शून्य प्रयोग) (सूर्य स्थिर)	'आर्यभटीय' (10 आर्याछन्द) आर्याष्टशतक	- कलिसंवत् आधार — 121 पद्य + 4 भाग (गीतिकापाद, गणित, कालक्रिया, गोलपा)
(430)	वराहमिहिर अन्यग्रन्थ	बृहत्संहिता (भारतीय टीका में) विवाहपटल योगयात्रा बृहज्जातक लघुजातक	106 अध्याय (सिद्धान्त + फलित) मुहूर्त ... राजा यात्रा में शकुन जन्मकुंडली "

598 CE	ब्रह्मगुप्त / गणकचक्रचूड़ामणि [भास्कराचार्य ने दी उपाधि]	• ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त / ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त • खण्डखाद्यक	24 अध्याय (शुद्ध सिद्धान्त) कर्ण के लिए [illegible] 10 अध्याय (शुद्ध सिद्धान्त)
1114 CE	भास्कराचार्य II	सिद्धान्तशिरोमणि करण कुतूहल लीलावती बीजगणित	14 अध्याय + खगोलविद् 13 + 2... + [illegible]
15-16 C	गणेशदैवज्ञ	ग्रहलाघव	
1586	नीलकण्ठ	ताजिकनीलकण्ठी	
1600	रामदैवज्ञ	मुहूर्तचिन्तामणि	
17 C	कमलाकर	सिद्धान्ततत्त्वविवेक	

धर्मशास्त्र

स्मृति = 150

200 BCE to 50 CE	मनु	मनुस्मृति 12 अध्याय + 2654 पद्य	टीकाएँ • मेधातिथि (825-900) • कुल्लूकभट्ट
200 CE to 300 CE		याज्ञवल्क्यस्मृति	आचार + व्यवहार + प्रायश्चित्त (अध्याय 3) टीका • विश्वरूप - बालक्रीडा (800-850) • विज्ञानेश्वर - मिताक्षरा (1100) • अपरार्क → धर्मशास्त्रनिबन्ध (1150) → बालम्भट्ट ने टीका (18 CE)
100-300 CE		नारदस्मृति लघु + वृहत् (2 संस्करण)	डॉ. जॉली ने सम्पादन - 1028 पद्य + 20 अध्याय टीका • असहाय (750 से पूर्व CE) अनुवाद
12 C		लक्ष्मीधर कृत कृत्यकल्पतरु	
12 C		जीमूतवाहन कृत धर्मरत्न	3 खण्ड (कालविवेक + व्यवहारमातृका + दायभाग)

13 c	हेमाद्रि	चतुर्वर्ग चिन्तामणि
14 c	चण्डेश्वर	स्मृतिरत्नाकर
1377	माधवाचार्य (बुक्कायुक्त)	कालमाधव + पराशरमाधवीय └ 5 प्रकरण └ पराशरस्मृति आधार है
1360-90	विश्वेश्वरभट्ट	मदन पारिजात (9 स्तबक)
1490-1570	रघुनन्दन	स्मृतितत्त्व (28 तत्त्व)
16 c	नारायणभट्ट	अन्त्येष्टिपद्धति त्रिस्थलीसेतु (प्रयाग, काशी, गया) प्रयोगरत्न (संस्कार)
17.	कमलाकरभट्ट	निर्णयसिन्धु शूद्रकमलाकर
(1610-45)	नीलकण्ठभट्ट	भगवन्तभास्कर (12 मयूख) व्यवहारमयूख / व्यवहारतत्त्व
	मित्र मिश्र (ओरछा नरेश वीरसिंह) आश्रय	वीरमित्रोदय (प्रकाश में वि. तीर्थप्रका.
17 c.	अनन्तदेव	स्मृतिकौस्तुभ (7 प्रकरण)

राजशास्त्र

नाम - राजशास्त्र / राजनीति / दण्डनीति / अर्थशास्त्र

"मनुष्याणां वृत्तिरर्थः मनुष्यवती भूमिरित्यर्थः,
तस्याः पृथिव्या लाभपालनोपायशास्त्रम्"

(1) अर्थशास्त्र - 300 BCE - 15 अधिकरण - 150 अध्याय - 180 प्रकरण

→ बौद्ध धार्मिक पर

विनयाधिकारिक, अध्यक्षप्रचार, धर्मस्थानीय, कण्टकशोधन, योगवृत्ति, मण्डलयोनि, षाड्गुण्य, व्यसनाधिकारिक, अभियास्यत्कर्म, सांग्रामिक, संघवृत्त, आबलीयस, दुर्गलम्भोपाय, औपनिषदिक, तन्त्रयुक्ति

(2) कामन्दकीयनीतिसार (800 CE)
- 20 सर्ग
- महाकाव्य शैली
- अनुष्टुप्

(3) यशस्तिलक चम्पू - सोमदेवसूरि (959 CE)

(4) नीतिवाक्यामृत.

(5) शुक्रनीतिसार - 2200 पद्य

(6) भोज - युक्तिकल्पतरु + चण्डेश्वर - नीतिरत्नाकर + नीतिप्रकाशिका

संगीतशास्त्र

- साम (गान)
- राग - षड्ज - वीर — गौर

स्वर		रस		रंग
षड्ज	-	वीर	—	गौर
ऋषभ	-	रौद्र/अद्भुत	—	लाल/पीला
गांधार	-	करुण	—	स्लेटी
मध्यम	-	हास्य	—	श्वेत
पञ्चम	-	शृङ्गार	—	श्यामल
धैवत	—	बीभत्स/भयानक		नीला/काला
निषाद	-	करुण		स्लेटी

• नान्यदेव -	सरस्वतीहृदयालंकार	-(1096-1137)
• शार्ङ्गदेव -	संगीतरत्नाकर	(1210-1247)
• रामामात्य	स्वरकलानिधि	(1610 CE)
• दामोदर	संगीतदर्पण	(1625 CE)
• अहोबल	संगीतपारिजात	(1750-1757)
• राधाकांतदेव	शब्दकल्पद्रुम	
• भातखंडे	स्वरमालिका (गुजराती) गीतमालिका (पत्रिका) अभिनवरागमंजरी (संस्कृत)	आधुनिक

दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)

तत्त्वमीमांसा	ज्ञानमीमांसा	मूल्यमीमांसा
(एकतत्त्व+द्वितत्त्व+बहुतत्त्व)वाद	(प्रमाण+वस्तु+प्रत्यय)वाद	(सौन्दर्य+नीति+स्वर्ग)शास्त्र परार्थवाद

परिभाषा

- √दृश + ल्युट् (अन) - करण प्रत्यय
- दृश्यते अनेन इति दर्शनम्
- दर्शनं ज्ञानसाधनम्

• येन ज्ञायते इदं विश्वम्, इदं वस्तुजातं, ब्रह्म, जीवात्मा प्रकृतिश्च यथार्थरूपेण निरीक्ष्यते दृश्यते परीक्ष्यते समीक्ष्यते विवेच्यते च यत् तद् दर्शनम् ॥

• येनोपायेन सांसारिकाणां पदार्थानां वास्तविकं स्वरूपं ज्ञायते तद् एव दर्शनपदवाच्यम्

• Philos - love, Sophy - Wisdom (विद्यानुराग)

• Phil - Principal, Sophy - Science (तत्त्वविज्ञान)

• दृश्यते तत्त्वं आत्मस्वरूपं, ब्रह्मस्वरूपं वा तत्त्वं येन तद् दर्शनम् ॥

केनोपनिषद् 1/1

केनेषितं पतति प्रेषितं मनः, केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः।
केनेषितां वाचमिमां वदन्ति, चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति ॥

आवश्यकता (मनुसंहिता 6/74)

सम्यग्दर्शनसम्पन्नः कर्मभिर्न निबध्यते।
दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते ॥

प्रस्थानत्रयी (त्रिकालज्ञ)

- एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति (ऋग्वेद 1/164/46)
- उप + नि + षद
- गीतामाहात्म्य - सर्वोपनिषदो गावो, दोग्धा गोपालनन्दनः।
  पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥
- ब्रह्मसूत्र (बादरायण)

भारतीय दर्शन

आस्तिक / वैदिक

- न्याय (गौतम) (प्रमाण)
- वैशेषिक (कणाद) (पदार्थ)
- सांख्य (कपिल) (सिद्धान्त)
- योग (पतञ्जलि) (व्यवहार)
- पूर्वमीमांसा (जैमिनि) (कर्म)
- उत्तरमीमांसा (व्यास) (ज्ञान)

अवैदिक / नास्तिक

- चार्वाक (बृहस्पति, विरोचन)
- बौद्ध
- जैन

नास्तिको वेद निन्दकः
त्रयो वेदस्य कर्तारो भाण्ड-धूर्त-निशाचराः - चार्वाक

चार्वाक दर्शन

अर्थ

- चर्व (चबाना) अर्थ + वाक् (आत्मा, मोक्षादि सिद्धान्त प्रति चर्वितम्)
- भौतिकवादी / लोकायत दर्शन
- चारु + वाक् (सुन्दरवाणी / मधुरवाणी)

प्रवर्तक

- बृहस्पति
- असुरों का प्रतिनिधि विरोचन (छान्दोग्य उप 8/7)

स्रोत

- तत्त्वोपप्लव सिंह - जयराशि भट्ट 800CE
- प्रबोधचन्द्रोदय (रूपक) कृष्णमिश्र

मत

- अनुमान खण्डन - व्याप्ति -
  - दृष्ट से अदृष्ट, ज्ञात से अज्ञात अनुमान
  - स्वार्थ + परार्थ
    - प्रतिज्ञा (पर्वतोवह्निमान्)
    - हेतु (धूमत्वात्)
    - उदाहरण (यज्ञ -)
    - उपनय (तथा च अयम्)
    - निगमन (रसोईशाला)
- प्रत्यक्ष का खण्डन
  - चक्षुः कृष्णताग्रवति
- शब्द प्रमाण खण्डन
- आकाश तत्त्व न मानना (किण्वादिभ्यो मदशक्तिवद् विज्ञानम्)
  - विवेक = ?
- आलोचना - पशुश्चेन्निहतः स्वर्गं ज्योतिष्टोमेन गमिष्यति।
  स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते॥

अक्तियाँ

- अर्थकामौ पुरुषार्थौ
- प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्
- पृथिव्यप्तेजोवायुरिति तत्वानि
- परलोकिनः अभावात् परलोकाभावः
- जल बुद् बुदवज्जीवः

| जैन | आहित दर्शन

- प्रवर्तक
  - महावीर स्वामी (वर्धमान) 599 BCE कुंडग्राम, वैशाली
    बासाढ़ (मुजफ्फरपुर)
  - पिता - सिद्धार्थ, माता - त्रिशला, पत्नी यशोदा, बेटी प्रियदर्शना
  - शिष्य - कैवल्यीपुत्रगोशाल, सुधर्मन्, स्थूलभद्र
  - संरक्षक - हर्यकवंश (बिंबिसार / आजातशत्रु)
  - बालपावापुरी 30 वर्ष (527 BCE
- जिन - जैन (वीतरागी)
- तीर्थंकर प्रथम - आदिदेव (ऋषभदेव)
  23 - पार्श्वनाथ 700 BCE (वाराणसी)

जैनसभा

① 100 BCE (पाटलिपुत्र - स्थूलभद्र द्वारा)
   श्वेत — दिगम्बर

② II 454 CE (भावनगर, गुजरात - देवधर्मि)
   - श्वेतांबरों द्वारा 12 अंगग्रन्थों का संग्रह

जैन सम्प्रदाय

- 16वीं में यापनीय (अतिप्राचीन) आपुलीय गोप्य संघ
- दिगम्बर (भद्रबाहु)
- श्वेताम्बर (स्थूलभद्र)

• परोक्ष (लौकिक)
 मति, श्रुति

• अपरोक्ष (आत्मजन्य)
 अवधि, मनःपर्याय, कैवल (मोक्ष)

• स्यादवाद – सापेक्षतया वस्तु में अनेक धर्म
 – त्रिविध वाक्य
  – दुर्नीति / दुर्नय
  – नय (सामान्य)
  – प्रमाणनय (स्यात्)
 – समन्वयवादी परिलक्षित

• सप्तभङ्गी नय
 – स्यादस्ति – स्यान्नास्ति – स्यादस्ति च नास्ति च
 – स्यादवक्तव्यम् – स्यादस्ति च अवक्तव्यम्
 – स्यान्नास्ति च अवक्तव्यम्
 – स्यादस्ति च नास्ति च अवक्तव्यम् च ।
(प्रत्येक वस्तु की अनन्त गुण, रूप, काल, द्रव्य, देश में सत्ता)

• अनेकान्तवाद

- "अनन्तधर्मकं वस्तु अनन्तधर्मात्मकं तत्वम्"
(अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका)

- गुण + पर्याय की सत्ता को स्वीकृति प्रदानकरने के यह पृष्ठ -

• द्रव्य = गुणपर्यायवद् द्रव्यम् , सत् = उत्पाद व्यय ध्रौव्ययुक्तम् सत्लक्षणम्
(उत्पत्ति) (विनाश) (स्थिर)

• बन्धनमोक्ष (पुद्गल = पूरयन्ति गलन्ति च) (कर्मों के भौतिक स्वरूप को मानना)

- ज्ञानावरणीय - दर्शनावरणीय - मोहनीय - वेदनीय - नाम -
- आयुष्य - गोत्र - अन्तराय

• कर्मपुद्गल से छूटना ही मोक्ष है।

• बन्धन के 5 हेतु

'अविद्याविरति प्रमादकषाययोगा;'

• बन्धन मुक्ति के 5 स्तर

- आस्रव (प्रवाह)
- बन्ध (कर्मपुद्गल जकड़ने)
- संवर (कर्मपु प्रवाह अवरुद्ध)
- निर्जरा (कर्म पु. निष्क्रिय)
- मोक्ष (कर्म पु. नाश)

• त्रिरत्न -

सम्यक दर्शन (आगम के प्रति श्रद्धा)
" ज्ञान (सही + पूरा ज्ञान)
" चरित्र (जैन सिद्धान्त का अनुसरण)

• 5 महाव्रत (अहिंसा सत्य अस्तेय अपरिग्रह - ब्रह्मचर्य)
└ भाव - प्राणीमात्र में प्रेम , अभाव - हिंसा न करना

• गृहस्थ - दायित्व → परिवार + संन्यासी + अतिथि

• " धर्म - अहिंसा + सत्य + अस्तेय

- अनेकान्तवाद
  - अनन्तधर्मकं वस्तु अनन्तधर्मात्मकं तत्वम्"
    (अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका)
  - गुण + पर्याय की सत्ता को स्वीकृति प्रदान करने से यह युक्त-
- द्रव्य = गुणपर्यायवद् द्रव्यम् , सत् = उत्पाद व्यय ध्रौव्ययुक्तम् सत्लक्षणम्
  (उत्पत्ति) (विनाश) (स्थिर)
- बन्धनमोक्ष (पुद्गल = पूरयन्ति गलन्ति च) (कर्मों के भौतिक स्वरूप को मान्य)
  - ज्ञानावरणीय - दर्शनावरणीय - मोहनीय - वेदनीय - नाम -
  - आयुष्य - गोत्र - अन्तराय
    - कर्मपुद्गल से युक्त ही मोह है।
- बन्धन के 5 हेतु
  'अविद्याविरतिप्रमादकषाययोगाः'
- बन्धन मुक्ति के 5 स्तर
  - आस्रव (प्रवाह)
  - बन्ध (कर्मपुद्गल ...)
  - संवर (कर्मपु प्रवाह अवरुद्ध)
  - निर्जरा (कर्म पु. निष्क्रिय)
  - मोक्ष (कर्म पु. नाश)
- त्रिरत्न -
  सम्यक दर्शन (आगम के प्रति श्रद्धा)
  " ज्ञान (शास्त्री + पूरा ज्ञान)
  " चरित्र (अनेकान्त का अनुपालन)
- 5 महाव्रत (अहिंसा सत्य अस्तेय अपरिग्रह -ब्रह्मचर्य)
  └ भाव - प्राणीमात्र में प्रेम, अभाव - हिंसा न करना
- गृहस्थ - दायित्व → परिवार + सन्यासी + अतिथि
- " धर्म - अहिंसा + सत्य + अस्तेय

बौद्ध 563 - 483 BCE

- सिद्धार्थ (बालनाम)
- माँ महामाया, पालनकर्ता (प्रजापति गौतमी), शुद्धोधन
- रोगी, वृद्ध, मृत, संन्यासी

• बुद्धत्व प्राप्ति – गया
• धर्मचक्रपरिवर्तन – सारनाथ
• महाभिनिष्क्रमण (घर छोड़ना)

प्रेम – आत्यन्तिक

1–13 only ①

बौद्ध दर्शन

सामान्य ज्ञान General Awearness

बुद्ध काल - (563 - 483 BCE)

सिद्धार्थ - बचपन का नाम

माँ - महामाया - (प्रजापति गौतमी ने पाला)

बुद्धत्व प्राप्ति - गया

रोगी, वृद्ध, मृतव्यक्ति, सन्यासी

धर्मचक्रप्रवर्तन - सारनाथ (वाराणसी)

महाभिनिष्क्रमण (घर छोड़ना

(सुत्तविनयाधम्मम्, त्रिपिटकम्)

- (त्रिपिटक) 'बुद्ध के उपदेश' तीन भागों में है -
  - → सुत्त - पिटक (सूत्र)
  - → विनय - पिटक
  - → अभिधम्म - पिटक

(पालि भाषा)

- बौद्ध संगीति

राजगृह (राजगिर)

वैशाली (बिहार)

थेरवादी (हीनयान)	महासांघिक (महायान)
→ रूढ़िवादी	लचीले थे
→ साकार रूप को न मानना	मूर्ति पूजा
→ स्वार्थवाद	परार्थवाद
→ यत् सत् तत्क्षणिकम्	
→ अर्हत (स्वयं	बोधिसत्व (सभी के लिए आदि

नालंदा (महायान)

'त्रिपिटक' बुद्ध का उपदेश '4 आर्य सत्य'

◆ दुःख
इदं तं खो पनाभिक्खवे दुःखं अरियसच्चं।
यह समस्त संसार दुःखमय है।

◆ दुःखसमुदय
दुःख के कारण का ज्ञान

◆ दुःखनिरोध
दुःख निरोध हेतु (उपाय)

◆ दुःख निरोधगामिनीप्रतिपद्।
दुःख का निवारण करने वाला मार्ग

'कार्य कारण सिद्धान्त'
प्रतीत्य समुत्पाद | द्वादश निदान चक्र
(आश्रित रहकर उत्पत्ति होना)

↳ अविद्या (मिथ्यानित्य, सत्यासत्य का विवेक न होना)
↳ संस्कार (बन्धनकारक तत्व)
↳ विज्ञान (अविद्या एवं कर्मसंस्कार की उत्पत्ति उत्पन्न ज्ञान)
↳ नामरूप (विज्ञान से युक्त शरीर (भौतिक) (सूक्ष्म))
↳ षडायतन (छः इन्द्रियाँ 5 ज्ञान + 1 मन)
↳ स्पर्श (षडायतन का बाह्य इन्द्रियों से सम्पर्क)
↳ वेदना (अनुभव)
↳ तृष्णा (इन्द्रियों द्वारा सुख के उपभोग की इच्छा).
↳ उपादान (आसक्ति / विषयभोग) चींटी का गुड़ में चिपकना
↳ भव (संसार)
फल के उपभोग हेतु पुनर्जन्म का संकल्प
↳ जाति (पुनर्जन्म - संकल्प की परिणति होना)
↳ जरामरण
दुःखों के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त

(दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा)

दृष्टिसंकल्पवाकर्माजीव्यास्मृसमा

(अष्टांग मार्ग)

सम्यक् दृष्टि
सम्यक् संकल्प
सम्यक् वाक् (शुद्ध वाणी)
सम्यक् कर्मान्त (कर्म का अन्त / हिंसा)
सम्यक् आजीव (आजीविका)
सम्यक् व्यायाम (शुभ एवं अशुभ की उत्पत्ति एवं निरोध हेतु प्रयत्न)
सम्यक् स्मृति (चित्त की एकाग्रता)
सम्यक् समाधान (निर्विकल्प प्रज्ञा की अनुभूति)

(सम्यक् = शुद्ध)

त्रि-रत्न
शील (पंचशील - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, मादक पदार्थ का निवर्तन करना)
समाधि
प्रज्ञा

दार्शनिक सिद्धान्त

हीनयान < सौत्रान्तिक - (बाह्यानुमेयवाद) सुत्त
वैभाषिक (सर्वास्तिवादी / बाह्य प्रत्यक्षवाद)

महायान < योगाचार (विज्ञानवाद)
माध्यमिक - (शून्यवाद)

(1) क्षणभङ्गवाद
(2) नैरात्म्यवाद

(कार्यकारणसिद्धान्त)

→ अविद्यासंस्कारविज्ञान, नामरूपषडायतन/
स्पर्शवेदनातृष्णा, उपादानभवजातिजरामरण//

तत्वमीमांसीय प्रश्न

(?) (क) बाह्य जगत क्या सत्य है? क्या बाह्य जगत में दिखाई देने वाले समस्त पदार्थ 'सत्य' हैं, यदि हैं तो क्या वह मानसिक है या भौतिक?

प्रमाणमीमांसीय प्रश्न

(?) बाह्य जगत में दिखाई देने वाली वस्तुएँ या पदार्थ सत्य हैं तो उनकी यथार्थता का ज्ञान किस पदार्थ से होगा?

तत्वमीमांसीय उत्तर →

(i) शून्यवाद (माध्यमिक)

– माध्यमिककारिका

(नागार्जुन - संस्थापक)

- यहाँ शून्य का तात्पर्य चतुष्कोटि से विमुक्त पदार्थ से है।
  - (1) सत्
  - (2) असत्
  - (3) सतसत् (सत् → असत्)
  - (4) असन्नासत् (असत् → सत्)

* शून्य इन चारों से परे व विलक्षण है।

- माध्यमिक दर्शनानुसार यह समस्त संसार शून्यमय है। अर्थात् द्रष्टा, दृश्य एवं दर्शन त्वान्तर भ्रम हैं।

- * संसार के समस्त पदार्थों को न सत् एवं न असत् मानने के कारण अर्थात् माध्यम मार्ग का परिपालक करने के कारण यह दर्शन माध्यमिक दर्शन कहलाता है।

② विज्ञानवाद (योगाचार)

— लङ्कावतार सूत्र
(चाइनीज़)

प्रमुख लेखक → दिङ्नाग
→ धर्मकीर्ति
→ असङ्ग

• इस दर्शनानुसार बाह्य जगत के समस्त पदार्थ (संसार) शून्य है किन्तु चित्त (समस्त वस्तुओं का ज्ञाता) असत् नहीं हो सकता। क्योंकि चित्त के असत् होने पर समस्त ज्ञान असत् हो जाएगा। अतः चित्त ही विज्ञान एवं शुद्ध चैतन्यरूप सत् तत्व है।

• योग (चित्तवृत्ति की एकाग्रता) और आचार अर्थात् आचरण इन दोनों तत्वों के समन्वय से यह दर्शन योगाचार कहलाता है।

③ सौत्रान्तिक

नामकरण — (सुत्तपिटक) के कारण

① 'मानसिक एवं बाह्य जगत' सत् मानना।

अन्य श्रीलाभ/धर्मत्रात/बुद्धदेव/यशोमित्र

② आचार्य — कुमारलात (200CE)
(कल्पनामंडितिका)

④ वैभाषिक

नामकरण — 'अभिधम्म महाविभाषा' पर आधारित
तर्क देने के कारण वैभाषिक

विभाषा — विकल्प, विरुद्ध भाषा

बाह्यवस्तुएँ - प्रत्यक्षगम्य न कि अनुमेय

विभाषया दिव्यन्ति चरन्ति वा इति वैभाषिकाः

वसुमित्र, शारीपुत्र, आर्यकात्यायनीपुत्र

'बुद्ध के प्रमुख सिद्धान्त'

(1) क्षणभंगवाद

'यत् सत् तत् क्षणिकम्'

→ भौतिक जगत की समस्त वस्तुएँ क्षणिक है। अतः उनमे मोह रखना औचित्य हीन है।

(2) नैरात्म्यसिद्धान्त

'यह आत्मा को नहीं मानता'

→ सामाजिक अव्यवस्था

→ शुभाशुभ कर्मों के भोग के सिद्धान्त अव्यवस्था में परिणत

(1) माध्यमिक	सत् असत् (मध्यम मार्ग)		
(2) योगाचार			

साङ्ख्य दर्शन

(प)

→ निरीश्वरवादी, आस्तिक, प्राचीनतम, कपिल

→ प्रवर्तक — कपिल — (सांख्य सूत्र)

(शिष्य) ↓

आसुरि

↓

पञ्चशिख

↓

ईश्वरकृष्ण (सांख्य तत्त्व कौमुदी — वाचस्पति मिश्र) → सांख्यकारिका

↓

विज्ञानभिक्षु — 16th (सेश्वरवाद) (सांख्यसार, सांख्यप्रवचनभाष्य)

पृष्ठभूमि —

- छान्दोग्योपनिषद
- प्रश्नोपनिषद
- श्वेताश्वतरोपनिषद
- महाभारत
- श्रीमद् भगवद्गीता — सांख्ययोगी ....

सांख्य = ज्ञान, योग = कर्म

सांख्य =

- संख्या विषयक ज्ञान (सामान्य)
- सम्यग् ख्यान
- विवेक ज्ञान (विविच् पृथग् भावे)
  पुरुष प्रकृति के मध्य ज्ञान ही विवेकज्ञान।
- यह द्वैतवादी दर्शन है
- 25 तत्त्व

दुःख त्रय

① आध्यात्मिक
→ शारीरिक – रोग, जरावस्था
→ मानसिक – प्रिय वियोग, अप्रिय संयोग

② आधिभौतिक – (प्राणियों से होने वाले दुःख)
जरायुज (गर्भ से उत्पन्न)
(जराण्डस्वेदुद्भिज) अण्डज (अण्डे से उत्पन्न)
स्वेदज (पसीने से उत्पन्न)
उद्भिज (जल से उत्पन्न)

③ आधिदैविक (चक्रवात, महामारी, भूकम्प)
→ प्राकृतिक आपदा

दुःख त्रय उपाय

[दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघातके हेतौ ।
दृष्टे साऽपार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावात् ॥
लौकिक उपाय
(सांख्यकारिका)

लौकिक उपाय

• स्वर्गकामो यजेत
• क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोके विशन्ति
• व्यक्ताव्यक्तज्ञ विज्ञानात्
प्रकृति — पुरुष

• उत्पत्ति सिद्धान्त

प्रकृति - उत्पत्ति कर्ता

महत् (बुद्धि) अध्यवसायो बुद्धिः
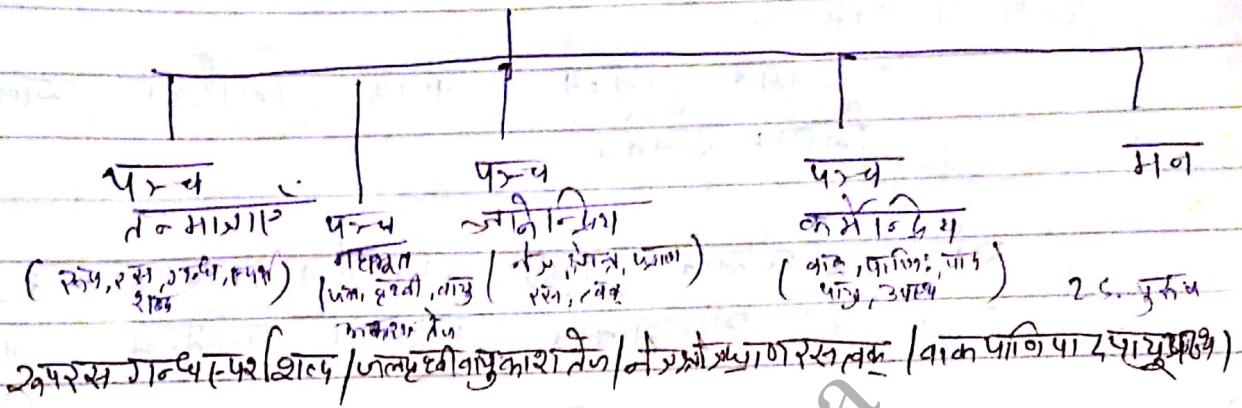
अहंकार अभिमानोऽहङ्कारः

पञ्च तन्मात्राएँ (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द)

पञ्च महाभूत (जल, पृथ्वी, वायु, आकाश, तेज)

पञ्च ज्ञानेन्द्रिया (नेत्र, श्रोत्र, घ्राण, रसन, त्वक्)

पञ्च कर्मेन्द्रिय (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ)

मन

25. पुरुष

रूपरसगन्धस्पर्शशब्द / जलपृथ्वीवायुआकाशतेज / नेत्रश्रोत्रघ्राणरसनत्वक् / वाकपाणिपादपायुउपस्थ)

• कार्यकारण वाद

असत्कार्यवाद (जो अस्तित्व में नहीं)
- न्याय
- वैशेषिक
- हीनयान बौद्ध
- मीमांसा (एक विचारधारा)

सत्कार्यवाद
- परिणामवाद (सांख्य दर्शन) — सतत्त्वतोऽन्यथाभावः — Ex. दूध से दही
- विवर्तवाद (अद्वैत वेदान्त) — अतत्त्वतोऽन्यथाभावः ([illegible] कल्पना)
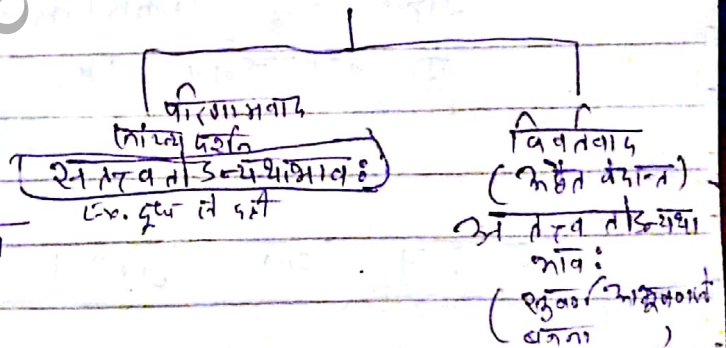
[असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात् ।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम् ॥ (9)

सात्विक धर्म	तामसिक धर्म
धर्म	अधर्म
ज्ञान	अज्ञान
वैराग्य	अवैराग्य
ऐश्वर्य	अनैश्वर्य

(धर्मज्ञानवैराग्यैश्वर्यं सात्विकं)

पुरुष

पुरुष की विशेषताएं –
त्रिगुण, विवेकी, अनेक, चेतन, अप्रसवधर्मी,
अहेतुमान, विषयी, विशेष, अविकारी,

पुरुष के धर्म –
अद्वैतमत, नित्य, व्यापक, निष्क्रिय, अनाश्रित
निरवय स्वतंत्र

(संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात् ।)
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च ॥

(17)

प्रकृति

त्रिगुण
(सत्वं रजस्तमश्चैव गुणात्रयमुदाहृतम्)

सत्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः ॥

(13)

सांख्य का प्रमाण

1. प्रत्यक्ष – इन्द्रियार्थसंनिकर्षोत्पन्नं ज्ञानं प्रत्यक्षम्।
   • निर्विकल्प • सविकल्प
2. अनुमान – व्याप्यव्यापकज्ञानपूर्वकम् ज्ञानम्।
   • वीतम् अवीतश्च
   (अन्वयेन प्रवृत्तं) (व्यतिरेकमुखेन प्रवृत्तं)

अनुमान (3) पूर्ववत् – शेषवत् – सामान्यतोदृष्टम्।

3. शब्द – आप्तवचनं च शब्दः

प्रमुख तत्व

प्रकृति - पुरुष
(अन्धा) (पंगु)

- अतः दोनों अपने आप में पूर्ण नहीं हैं। दोनों को एक दूसरे की आवश्यकता है।
- सांख्य - सिद्धान्तों पर आधारित है
- सम्यक ख्यानं - 25 तत्वों का विशेष रूप से कहना

समीक्षा

सांख्य दर्शन में जड़ (प्रकृति) और चेतन (पुरुष) को मिलाने वाला तत्व अनुपस्थित है। किन्तु योग दर्शन द्वारा प्रकृति एवं पुरुष के मध्य ईश्वर नामक तत्व की कल्पना की गई है।

महाभारत - 'नास्ति सांख्य समं ज्ञानम्'

पुरुष - अनादि, सूक्ष्म, चेतन, सर्वगत, निर्गुण, कूटस्थ, नित्य, द्रष्टा, भोक्ता, क्षेत्रवित्, अमलः, अप्रसवधर्मी

'असङ्गो ह्ययं' श्रुत्यानुसार सांख्य का पुरुष सुख-दुःखादि धर्मों का वास्तविक भोक्ता नहीं है।

बन्धन - (प्राकृतिक, वैकारिक, दाक्षिणिक) बन्ध।

मुक्ति - (त्रिविध मोक्ष)

"आदौ तु मोक्षो ज्ञानेन द्वितीयो रागसंक्षयात्
कृच्छ्रक्षयात् तृतीयस्तु व्याख्यातं मोक्षलक्षणम्॥"

ज्ञान के द्वारा अविद्या का नाश, राग के क्षय द्वारा इन्द्रिय ...

उत्तर मीमांसा (वेदान्त)

7

वेदान्त - उपनिषद + आरण्यक
— ब्रह्मसूत्र बादरायण

(1) प्रस्थान त्रयी
- 'प्रतितिष्ठति प्रतिष्ठाति ब्रह्मविद्या येषु तानि प्रस्थानानि तेषां त्रयी प्रस्थान त्रयी'
  (ब्रह्मविद्या जिसमें रहती है एवं रहकर प्रतिष्ठित होती है वह ग्रन्थत्रयी, प्रस्थानत्रयी कहलाती है।
- उपनिषद + ब्रह्मसूत्र + गीता
- वेदान्त की विद्या को नियमित करने की विद्या ब्रह्मविद्यायें

(2) ब्रह्मसूत्र पर भाष्य

	दर्शन	लेखक	भाष्यनाम
(अतिप्रमुख)	अद्वैत	शङ्कराचार्य	शङ्करभाष्य
	विशिष्टाद्वैत	रामानुजाचार्य	श्रीभाष्य
	द्वैत	मध्वाचार्य	पूर्णप्रज्ञभाष्य
(पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक)	शुद्धाद्वैत	वल्लभाचार्य	वल्लभभाष्य
	द्वैताद्वैत	निम्बार्काचार्य	निम्बार्क भाष्य

- प्रस्थान त्रयी पर भाष्य लिखने वाले को 'जगत-गुरु' कहा जाता है। यथा - शङ्कराचार्य

(3) वेदान्त की अवस्था
- प्रारम्भिक काल - उपनिषद
- रचनात्मक काल - ब्रह्मसूत्र
- भाष्य काल - शङ्कर आदि कृत

(4) ब्रह्मसूत्र - अतिप्रमुख ग्रन्थ
- 4 पाद (समन्वय, अविरोध, साधन, फ
- 550 सूत्र

उत्तर मीमांसा (वेदान्त)

वेदान्त - उपनिषद + आरण्यक
- ब्रह्मसूत्र बादरायण

(1) प्रस्थान त्रयी
- 'प्रतितिष्ठति प्रतिष्ठाति ब्रह्मविद्या येषु तानि प्रस्थानीनि तेषां त्रयी प्रस्थान त्रयी'
(ब्रह्मविद्या जिसमें रहती है एवं रहकर प्रतिष्ठित होती है वह ग्रन्थत्रयी, प्रस्थानत्रयी कहलाती है।
- उपनिषद + ब्रह्मसूत्र + गीता
- वेदान्त की विद्या को नियमित करने की विद्या ब्रह्मविद्या है।

(2) ब्रह्मसूत्र पर भाष्य

	दर्शन	लेखक	भाष्यनाम
(श्रुति प्रमुख)	अद्वैत	शङ्कराचार्य	शङ्करभाष्य
	विशिष्टाद्वैत	रामानुजाचार्य	श्रीभाष्य
	द्वैत	मध्वाचार्य	पूर्णप्रज्ञभाष्य
(पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक)	शुद्धाद्वैत	वल्लभाचार्य	वल्लभभाष्य
	द्वैताद्वैत	निम्बार्काचार्य	निम्बार्क भाष्य

- प्रस्थान त्रयी पर भाष्य लिखने वाले को 'जगत-गुरु' कहा जाता है। यथा - शङ्कराचार्य

(3) वेदान्त की अवस्था
प्रारम्भिक काल - उपनिषद
रचनात्मक काल - ब्रह्मसूत्र
भाष्य काल - शङ्कर आदि कृत

(4) ब्रह्मसूत्र - श्रुति प्रमुख ग्रन्थ
- 4 पाद (समन्वय, अविरोध, साधन, फल)
- 550 सूत्र

अद्वैत वेदान्त

जहांकि की सन्ता हो

- काल — शङ्कर से पूर्ववर्ती अद्वैत वेदान्त
  - शङ्कर द्वारा प्रतिपादित " "
  - शङ्कर से उत्तरवर्ती " "

प्रमुख लेखक

1. गौडपाद – 'माण्डूक्यकारिका' (माण्डूक्योपनिषद पर)
2. गोविन्दभगवत्पाद (गौड के शिष्य)
   सिद्धान्त उपलब्ध होते हैं।
3. शङ्कराचार्य – 800 CE
   जन्मस्थल – कालडी (मालाबार - केरल क्षेत्र)
   मृत्यु – 32 Age (Kedarnath)

(1) 'अद्वैत प्रतिष्ठा'

- 'शङ्करानुसार' सांख्य, एवं वैशेषिक एवं न्यायदर्शन वैदिक दर्शन नहीं है क्योंकि वेद अद्वैत की प्रतिष्ठा में सन्नद्ध है।
  – सांख्य का द्वैतवादी होना अद्वैत वेदान्त का 'प्रधान-मल्ल' कहा जाता है।

- शङ्करानुसार पूर्वमीमांसा वेद को कर्मपरक अथवा क्रियार्थक मानता है यह अन्तिम लक्ष्य नहीं है। यज्ञ-यागादि कर्म चित्त की शुद्धि हेतु है। अतः कर्म की उपासना गौण है तथा प्रधान लक्ष्य ज्ञान-प्राप्ति या ब्रह्मप्राप्ति है।

(2) अनुभव के तीन स्तर

- पारमार्थिक 'मोक्ष'
- मिथ्या — व्यवहारिक 'प्रत्यक्ष'
- स्वप्न — प्रातिभासिक 'स्वप्न'

③ ब्रह्म ——— जीव – 'व्यष्टि ज्ञान'

ईश्वर – समष्टि ज्ञान

④ माया

यह ब्रह्म की शक्ति है जो ब्रह्म पर आश्रित है परन्तु ब्रह्म को आच्छादित नहीं करती।

यथा –

⑤ माया का अध्यास

माया के नाम – अविद्या, अज्ञान, अध्यास

लक्षण – 'अतस्मिंस्तद्बुद्धिरध्यासः'

'जो जैसा नहीं है वैसा ज्ञान कराना माया का अध्यास है।'

यथा –
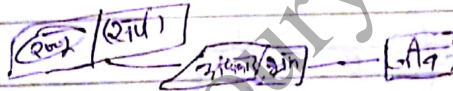
⑥ ब्रह्म

- शङ्कर के अनुसार जो ब्रह्म का निराकरण करता है वस्तुतः वह ही ब्रह्मस्वरूप है।
- 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते'
  'येन जातानि जीवन्ति, यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद् ब्रह्म'
  (तैत्तिरीयोपनिषद)

'जिससे जीव इस जगत की उत्पत्ति होती है एवं जिससे उत्पन्न होने के बाद जीवनधारण किया जाता है एवं अन्त में जिसमें समस्त जीव विलीन हो जाते हैं वह ब्रह्म है।'

⑦ मोक्ष

- ब्रह्म और जीव में एकरूपता ही मोक्ष है।
- आत्मसाक्षात्कार ही मोक्ष है।
- मोक्ष के बाद जीव को 'अहं ब्रह्मास्मि' का अनुभव

मोक्ष प्राप्ति के लिये 3 सोपान
(1) श्रवण
(2) मनन
(3) निदिध्यासन

'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः'

समीक्षा – शङ्करानुसार दर्शन 'बौद्धिक - क्रीडा' मात्र नहीं है किन्तु तत्त्व की प्राप्ति में इसकी परिणति होती है। शङ्कर के इन्हीं तार्किक विचारों से अद्वैत वेदान्त आज जनमानस में आदरास्पद हुआ।

विशिष्टाद्वैत

प्रवर्तक – रामानुज (1017 – 1137 ई.)
सम्प्रदाय – 'श्री'
उपास्य देवता – 'लक्ष्मी नारायण'

(1) 3 तत्त्व
- चित् (जीव)
- अचित् (जड़ जगत)
- ईश्वर

('त्रितयं ब्रह्म एतत्' अतः 3नों तत्त्व ब्रह्म हैं।)

- इनके अनुसार जगत व्यावहारिक अवस्था में सत् है ही किन्तु वह पारमार्थिक अवस्था में भी सत् है। इनके अनुसार एक तत्त्व (द्वैत विशिष्ट - अद्वैत) होता है जिसमें अद्वैत मुख्य है एवं द्वैत गौण है।
- इनके अनुसार अद्वैत के साथ-साथ द्वैत भी व्यावहारिक स्तर के समान पारमार्थिक अर्थात् तात्विक स्तर पर सत्य है जो कि संगत नहीं है।

द्वैत

1197 CE

प्रवर्तक - मध्वाचार्य / आनन्दतीर्थ / पूर्णप्रज्ञ

सम्प्रदाय - ब्रह्म

- मध्वाचार्य शङ्कर प्रतिपादित अद्वैत के प्रबल विरोधी हैं उनके अनुसार अद्वैत एक ऐसी 'सिंहयुक्त' कन्दरा है जिसमें प्रवेश करने वाले के पदचिह्न दिखाई देते हैं किन्तु आने वाले के नहीं (परिलक्षित नहीं होते हैं) अर्थात् व्यक्ति अद्वैत में उलझ कर रह जाता है।

① 3 तत्व
- ईश्वर (स्वतंत्र)
- जीव (परतंत्र)
- प्रकृति (परतंत्र)

- 'ब्रह्मसत्यं जगत्सत्यं' जीव और ब्रह्म दोनों पृथक हैं मोक्षप्राप्ति के अनुसार जीव, ब्रह्ममय नहीं होता है अर्थात् दोनों में भेद बना रहता है। भक्ति से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

द्वैताद्वैत / भेदाभेद

प्रवर्तक - निम्बार्काचार्य

सम्प्रदाय - सनक सम्प्रदाय

① तीन तत्व
① चित्त ② अचित्त ③ ईश्वर

② (पृथक) जीव और जगत् ईश्वर से भिन्न हैं क्योंकि 2नों के गुण (परतंत्र) अलग हैं एवं स्वभाव भी भिन्न है।

③ (अभेद) ईश्वर पर आश्रित रहने के कारण चित्त एवं अचित्त दोनों में अभेद है।

शुद्धाद्वैत

प्रवर्तक - वल्लभाचार्य
सम्प्रदाय - वैष्णव सम्प्रदाय
उपास्य देव - राधाकृष्ण

1. इनके अनुसार माया सत् पदार्थ है। वह वास्तविक है।
2. भक्ति से मुक्ति होती है अतः भक्ति प्रधान है।
3. परम लक्ष्य ईश्वर की सेवा में रहना है न कि मुक्ति

जिस प्रकार आग और आग की लपटों में सादृश्यता है उसी प्रकार जीव और ब्रह्म भी एक ही तत्व हैं। इस प्रकार यह सम्प्रदाय अद्वैत की संस्थापना करता है एवं माया की सत्ता वास्तविक मानने के कारण यह दर्शन शुद्धाद्वैत है।

प्रकरण ग्रन्थ

1. सांख्य - 'सांख्यकारिका' - (ईश्वरकृष्ण)
2. न्याय - 'तर्कभाषा' - (केशव मिश्र)
3. वैशेषिक 'तर्कसंग्रह' (अन्नम्भट्ट)
   'न्यायसिद्धान्तमुक्तावली' (विश्वनाथपञ्चानन)
4. मीमांसा 'अर्थसंग्रह' (लौगाक्षि भास्कर)
5. वेदान्त 'वेदान्तसार' (सदानन्द)

योग

युजिर् योगे
युज संयमने
युज समाधौ

प्रवर्तक – पतञ्जलि (पातञ्जलयोगसूत्र)

योग लक्षण 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' (पतञ्जलि)

चित्त की अवस्था – क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र निरुद्ध।

'द्रष्टस्वरूपावस्थितिहेतुश्चित्तवृत्ति निरोधः'

भेद – सम्प्रज्ञातयोग तथा असम्प्रज्ञात योग।

(1) 'सम्यक् संशयविपर्ययरहितत्वेन प्रकर्षेण ज्ञायते ध्येयस्य स्वरूपं येन स सम्प्रज्ञातः'
"जिसके द्वारा संशय तथा विपर्यय से रहित ध्येय का स्वरूप यथार्थ रूप से ज्ञात होता है"
भेद – 'वितर्क, विचार, आनन्द, अस्मिता'

'जीव अथवा ईश्वर के साक्षात्काररूप फल से उपहित चित्तवृत्तिनिरोध अस्मितानुगत सम्प्रज्ञात योग है।

(2) 'न किञ्चिद् सम्प्रज्ञाते इति असम्प्रज्ञातः'
भेद – भव प्रत्ययक, उपायप्रत्ययक

प्रमाण - प्रत्यक्षानुमानागम।
अविद्या - तमस्-मोह-महामोह-तामिस्त्रान्धतामिस्त्रा।

योगदर्शनस्य पादचतुष्टयात्मकम्
प्रथम पाद- योगस्वरूपस्य विस्तृतं निरूपणम्।
द्वितीय - क्रियायोगः तत्साधनानि यमादीनि।
तृतीय - अन्तरङ्गं साधनजातं ध्यानधारणासमाधिश्च
चतुर्थ - जन्मौषधी मन्त्रतपः समाधिजासिद्धि-पञ्चकम्।

योगदर्शने पञ्चक्लेशाः
'अविद्यास्मिता-राग-द्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः' (योग 2/3)

योगदर्शनस्य अङ्गानि
'यमनियम-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार-धारणा-ध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि' (योग 2/29)

① यम - 'संयम एव यमशब्दवाच्यकः'
'अहिंसा सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य अपरिग्रहा यमाः' (2/3)

② नियम
'शौच संतोष-तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः'

③ आसन - 'स्थिरसुखमासनम्' (2/46)
(सुख का तात्पर्य स्वभाविक चंचलता को त्यागकर एकाग्रता में जाना है)

④ प्राणायाम - 'श्वास-प्रश्वास गतिनिरोधः प्राणायामः'
पूरक, रेचक, कुम्भक (बाह्य, आभ्यन्तर)

(11)

(5) प्रत्याहार ' प्रतिकूल: वृत्ति: प्रत्याहार: '
'एतस्मात् इन्द्रियाणां वशित्वम् उपपद्यते।

(6) धारणा ' देशबन्धश्चित्तस्य धारणा ' (3/1)

(7) ध्यान ' तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् ' (3/2)

(8) समाधि
' तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः '
(3/3)

महत्व →

(1) योगेन चित्तस्य पदेन वाचां, मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत् तं प्रवरं मुनीनां, पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि।
(योगशास्त्र)

(2) यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते।
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।
(गीता)

पूर्व मीमांसा

- मीमांसा सूत्र (शबरमुनि)

उद्भव - समाज में जैन - बौद्ध धर्म दर्शन से समाज में नास्तिक परम्परा का विकास, सनातन मतावलम्बियों द्वारा वेद की यथार्थ व्याख्या।

उद्देश्य - कर्मकाण्ड की उपासना हेतु दार्शनिक तर्क संगतता को स्पष्ट करना। वेद की यथार्थ व्याख्या करना

प्रथमसूत्र - 'अथातो धर्म जिज्ञासा'
'यगादि देव धर्मः'

प्रमुखाचार्य - कुमारिल भट्ट (तन्त्रवार्तिक) भाट्ट सम्प्रदाय
प्रभाकर गुरुमत

भाट्ट सम्प्रदाय

प्रमाण - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमेय, शब्द, अर्थापत्ति
अनुपलब्धि (अभाव)

मत - वेद अपौरुषेय है तथा अनुल्लंघनीय (अनिवा

गुरु मत

प्रमाण - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमेय, शब्द, अर्थापत्ति

मत - होता - ऋग्
अध्वर्यु - यजु. [यज्ञ कुंड] यजमान
उद्गाता - साम
ब्रह्मा - नियंत्रता

तत्त्वमीमांसा

कुमारिल - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, अभाव
प्रभाकर - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, परतन्त्रता
शक्ति, सादृश्य, एवं संख्या

वेदमन्त्रों का विषयवस्तु के अनुसार विभाजन
(1) विधि (2) मन्त्र (3) नामधेय (पारिभाषिक)
(4) निषेध (5) अर्थवाद (स्तुति)

आत्मा

- द्रव्य तथा नित्य है
- समस्त कर्मों की कर्ता, भोक्ता एवं ज्ञाता
- चैतन्य तथा अनेक

मोक्ष

- स्वर्ग प्राप्ति (यज्ञ द्वारा ही होगी) जैमिनि व शबर अनुसार
- 'स्वर्ग कामो यजेत'
  यदि स्वर्ग की इच्छा है तो यज्ञ करो
- 'क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोके विशन्ति' प्रभाकर, कुमारिल

प्रासंगिकता

- वर्तमान में न्यायपालिका को मध्य विवाद उत्पन्न होने पर सत्यासत्य के विवेक हेतु अनेक नियम उपलब्ध करवाता है।

न्याय दर्शन

महर्षि गौतम

- नियमेन इयते (नियमयुक्त व्यवहार) यथा — न्यायालय
- दृष्टान्त के साथ सदृश अर्थ में । यथा — बीजांकुरन्याय
- नीयते प्राप्यते विवक्षितार्थ सिद्धिरनेन इति न्यायः'

' प्रतिपाद्य विषय की सिद्धी, निश्चित सिद्धान्तपर पहुँचना

न्याय दर्शन का प्रयोजन

'प्रयोजन मनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्त्तते '

- प्रमाण लक्षण के द्वारा वस्तुसिद्धि की यथार्थ रीति निर्धारित
- बिना प्रमाण के ज्ञान नहीं, बिना ज्ञान के मुक्ति नही हो सकती

16 पदार्थ

प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टान्तसिद्धान्तावयवतर्कनिर्णय-वादजल्पवितण्डाहेत्वाभासच्छलजातिनिग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः'

(1) प्रमाण — प्रमायाः करणं प्रमाणम्

प्रमा — ' तद्वति तत्प्रकारकानुभवः प्रमा '

जो वस्तु जैसी है उसको उसी प्रकार जानना है।

(2)

वैशेषिक दर्शन

- महर्षि कणाद

- विशेषं पदार्थभेदमधिकृत्य कृतं शास्त्रं वैशेषिकम्।
विशेष - 'अन्ते अविभाज्य रूपेण अवशिष्यते इति विशेषः।'

- द्वित्वे च पाकजोत्पत्तौ विभागे च विभागजे।
यस्य न स्खलिता बुद्धिस्तं वै वैशेषिकं विदुः॥
- सर्वदर्शनसंग्रह

'वास्तविक भिन्नताओं को दृष्टि में रखते हुए, सूक्ष्म विश्लेषण में जिसकी बुद्धि कुण्ठित नहीं हो, वही वैशेषिक है।'

प्रयोजन - 'अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः'
'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः'

वैशेषिक दर्शन के मूल सिद्धान्त -

(1) परमाणुवाद - 'जगत के मूल उपादान परमाणु हैं'
(2) अनेकात्मवाद - 'आत्मा अनेक हैं' कर्मफल -
(3) असत्कार्यवाद - 'पहले अभाव था विनाश के बाद फिर अभाव'
(4) परमाणुनित्यवाद
(5) षट्पदार्थवाद - 'द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवाय'
(6) सृष्टिवाद - 'ईश्वर परमाणु की सहायता से सृष्टि'
(7) मोक्षवाद - 'तत्त्वज्ञान प्राप्त करना'